संक्षिप्त

राजस्थानी-व्याकरण

लेखक
नरोत्तमदास स्वामी

सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट : बीकानेर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

प्रकाशक
सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीटयूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
मूल्य ३·५०

मुद्रक
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स,
आगरा

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १६४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूळसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिए की गयी थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य संस्था को प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ चलायी जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में संस्था विभिन्न स्रोतों से दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका संपादन आधुनिक कोशों के ढंग पर प्रारंभ किया जा चुका है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द संपादित हो चुके हैं। कोश में शब्दों के अर्थ के अतिरिक्त व्याकरण, व्युत्पत्ति और उदाहरण आदि महत्त्वपूर्ण सामग्री दी गयी हैं। यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिए प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य निकट भविष्य में उपलब्ध हो जायगा और इसका प्रकाशन प्रारंभ किया जा सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी-मुहावरा-कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द-भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

में लाये जाते हैं। लगभग दस हजार मुहावरों का अर्थ और प्रयोग के उदाहरण सहित, संपादन हो चुका है और ग्रंथ को शीघ्र ही प्रकाशित करने का प्रवंध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम साध्य कार्य है। यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सकें तो यह संस्था के लिए ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. **कळायण,** ऋतु-काव्य (लेखक श्री नानूराम संस्कर्ता)

२. **आभै पटकी,** राजस्थानी भाषा का प्रथम सामाजिक उपन्यास (ले० श्री श्रीलाल जोशी)

३. **वरसगांठ,** मौलिक कहानी-संग्रह (ले० श्री मुरलीधर व्यास)।

संस्था की मुखपत्रिका 'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें राजस्थानी कविताएँ, कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

यह संस्था की त्रैमासिक मुखपत्रिका है जो विगत १४ वर्षों से प्रकाशित हो रही है। पत्रिका की विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। वहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव तथा प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, इसका त्रैमासिक रूप से नियमित प्रकाशन संभव नहीं हो सका है। इसके भाग ५ का अंक ३–४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक'** वहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक वहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका के छे भाग प्रकाशित हो चुके हैं, सातवें भाग के प्रथम दो अंक राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ विषयक सचित्र और वृहत् विशेषांक के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पत्रिका की उपयोगिता और महत्त्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी माँग है और इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिए 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोधपत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्त्व, इतिहास, कला आदि विपयक लेखों के अतिरिक्त संस्था के सदस्य विद्वानों द्वारा लिखित लेखों की वृहत् सूचियाँ भी प्रकाशित की जाती हैं। अव तक तीन विशिष्ट सदस्यों डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा के लेखों की वृहत् सूचियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, संपादन एवं प्रकाशन

राजस्थान की साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिए उन्हें सुसंपादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवाकर उचित मूल्य में वितरित करने की संस्था की योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

(१) पृथ्वीराजरासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का संपादन करवाकर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करणों और उसके ऐतिहासिक महत्त्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

(२) राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखाँ) की ७५ रचनाओं की खोज की गयी जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई। कवि का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३) राजस्थान के जैन संस्कृत-साहित्य का परिचय नामक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया गया है।

(४) मारवाड़-क्षेत्र के लगभग ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्रों के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल-लोकगीत, लोरियाँ और लगभग ७०० लोक-कथाएँ संगृहीत की गयी हैं। राजस्थानी कहावतों के भी दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक-काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किये गये।

(५) बीकानेर और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर-जैन-लेख-संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

(६) जसवंत-उद्योत, मुंहता नैणसीरी ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन हो चुका है और हो रहा है।

(७) जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाश डाला गया है।

(८) जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि-वंश-प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

(९) बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और 'ज्ञानसार-ग्रंथावली' के नाम से उनमें से कुछ का प्रकाशन किया गया है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

६. जयन्तियाँ और साप्ताहिक गोष्ठियाँ

संस्था की ओर से समय-समय पर ख्यातनामा विद्वानों और साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और उनकी जयन्तियाँ मनायी जाती हैं। इस प्रकार के उत्सवों में डाक्टर तैस्सितोरी, लोकमान्य तिलक, पृथ्वीराज राठौड़, मुनि समयसुंदर आदि के स्मृति-उत्सव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इन उत्सवों के साथ ही साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है इनमें महत्त्वपूर्ण निवंध, लेख, कविताएँ और कहानियाँ आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक-विध नवीन साहित्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योग मिला है। विचार-विमर्श के लिए अन्यान्य गोष्ठियों तथा भापणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता है।

(१०) वाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को वुलाकर उनके भापण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिओ-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय-ख्याति-प्राप्त विद्वानों के भापण इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हो चुके हैं।

दो वर्ष पूर्व महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गयी थी। राजस्थानी भापा के प्रकाण्ड विद्वान श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ, और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, डूंडलोद, के भापण इस आसन से इन वर्षों में हुए।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिए यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा-कदा, लड़खड़ाते गिरते-पड़ते, उसने 'राजस्थान-भारती' का संपादन एवं प्रकाशन जारी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रखा और यह प्रयास किया कि बाधाओं के बावजूद भी साहित्य-सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ-पुस्तकालय है और न कार्य को सुचारु-रूप से संपादित करने के लिए आवश्यक कर्मचारी ही हैं; परन्तु फिर भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर निश्चय ही संस्था के गौरव को बढ़ानेवाली होगी।

राजस्थानी का साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक उसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। संस्था अपनी इस लक्ष्य-पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रही है।

अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोधन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिए १५,०००) रु० की रकम राजस्थान सरकार को इस मद में प्रदान की, तथा राजस्थान सरकार ने भी उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३०,०००) रु० की सहायता राजस्थानी साहित्य के संपादन-प्रकाशन हेतु इस संस्था को वर्तमान वित्तीय वर्ष में प्रदान की है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है—

१. राजस्थानी व्याकरण— श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध-प्रबंध)— डा० शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

३. अचळदास खीची-री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी तथा दीनानाथ खत्री
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी-चरित्र चौपई—	,,
६. दळपत-विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल-गीत—	,,
८. पंवार-वंश-दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावळी—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावळी—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव-पार्वतीरी वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम-चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द-कृति-कुसुमांजलि—	,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावळी—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थानरा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर-रसरा दूहा—	,,
२१. राजस्थान के नीति-दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत-कथाएं—	,,
२३. राजस्थानी प्रेम-कथाएं—	,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२५. भड्डुली—	श्री अगरचन्द नाहटा तथा मुनि विनयसागर
२६. जिनहर्ष-ग्रंथावळी	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण	,,
२८. दम्पति-विनोद	,,
२९. हीयाळी, राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,,
३०. समयसुन्दर-रास-पंचक	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावळी	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन-संग्रह (संपादक डा. दशरथ शर्मा), ईसरदास-ग्रंथावळी (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (संपा० गोवर्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा-कोश (संपा० मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है। हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता संस्था को प्राप्त हो सकेगी जिससे उपर्युक्त संपादित तथा अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिए हम भारत सरकार के शिक्षा-विकास-सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया का, जो सौभाग्य से शिक्षा-मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिए निरंतर सचेष्ट हैं, इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योग रहा है। उनके प्रति भी हम अपनी सादर कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष श्री जगन्नाथसिंह जी मेहता के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को संपन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जिनने सराहनीय सहयोग दिया है उन संपादकों एवं लेखकों के भी हम अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरी बीकानेर, अभय-जैन-ग्रन्थालय बीकानेर, पूर्णचन्द्र-नाहर-संग्रहालय कलकत्ता, जैन-भवन-संग्रह कलकत्ता, महावीर-तीर्थक्षेत्र-अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल-इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर-रिसर्च-इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ-वृहद्-ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद-खजांची-ग्रंथालय बीकानेर, खरतर-आचार्य-ज्ञानभण्डार बीकानेर, एशियाटिक-सोसाइटी बंबई, आत्माराम-जैन-ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिकविजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि संस्थाओं और व्यक्तियों से आवश्यक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त होने से ही उपर्युक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति भी अपना आभार प्रकट करते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का संपादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। संस्था ने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिए त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है।

गच्छतः स्खलनं क्वपि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों को अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल समझकर मां भारती के चरण-

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे ।

निवेदक

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५, सं० २०१७
३ दिसम्बर, १९६०

लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

प्रस्तावना

राजस्थानी भाषारा अेक व्याकरणरी आवश्यकता घणा दिनांसूं अनुभव हुती ही। राजस्थानी भाषारा नवीन लेखकां कनैसूं वारवार राजस्थानी व्याकरणरी मांग आंवती। इणी मांगरी पूर्तिरै खातर ओ व्याकरण वणायो है।

ओ व्याकरण राजस्थानी भाषारो संक्षिप्त व्याकरण है। अैतिहासिक और तुलनात्मक विवेचन सहित विस्तृत व्याकरणरो काम चालै है। आशा है विस्तृत व्याकरण भी थोड़ा दिनांमें प्रकाश पा सकैला।

राजस्थानी व्याकरण-लेखनरो ओ प्रथम प्रयास है आ समझणरी भूल नहीं हुणी जोयीजै। आजसूं कोई पचास वरस पैलां राजस्थानीरा प्रसिद्ध विद्वान पं० रामकरणजी आसोपा मारवाड़ी भाषारो अेक वडो व्याकरण वणायो हो। रामकरणजी व्याकरण-विज्ञानरा धुरंधर विद्वान हा। वैज्ञानिक पद्धति पर लिखियोड़ो अैड़ो शास्त्रीय व्याकरण उण दिनांमें भारतरी घणकरी भाषावांमें नहीं लिखीजियो हो। दुखरी वात है कै राजस्थानियां इण महान विभूतिरी कदर नहीं करी जिणसूं आज वडा-वडा विद्वानां तकनै आ वात मालम नहीं है कै राजस्थानीमें आजसूं पचास वरस पैलां लिखियोड़ो सर्वांगपूर्ण व्याकरण मौजूद है।

राजस्थानीरी उपभाषावांमें मारवाड़ी सर्व-प्रधान है। उणरो विस्तार सवसूं अधिक है। उणरा वोलवावाळांरी संख्या सवसूं वत्ती है और उणरो साहित्य घणो पुराणो और घणो विस्तृत है। वा सगळी वोलियांरै वीचूंवीच है और सवसूं मीठी है। डिंगलरी आधारभाषा भी मारवाड़ी ही है। इण वास्तै इण व्याकरणरो आधार मारवाड़ी माथैहीज राखियो है। इण विषयमें राजस्थानी-साहित्य-सम्मेलनरा प्रथम सभापति ठा० रामसिंहजीरा शब्द अठै उद्धृत करणा चावूं हूं—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'राजस्थानीरी सगळी बोलियांमें मारवाड़ी ही राजस्थानीरा नवीन साहित्यरी साहित्यिक भाषा हुणी जोयीजै—जियां आज तक रैती आयी है। आपांनै व्याकरणरो ढांचो अर्थात क्रिया और सर्वनाम मारवाड़ीरा लेणा हुसी, बाकी शब्द तो जैपुरी, हाडोती, माळवी, मेवाती, बीकानेरी, जेसळमेरी, शेखावाटी, मेवाड़ी सगळांरा वापरणा पड़सी।'

इण व्याकरणरी रचनामें विभिन्न भाषावांरा घणा व्याकरणांसूं लाभ उठायो है जिण वास्तै उणांरा लेखकांरो आभार स्वीकार करूं हूं।

बीकानेर
आखातीज, सं० २००० वि०

नरोत्तमदास स्वामी

पुनश्च

ओ व्याकरण आज १७ वरसां पर प्रकाशित हुवै है। इण बीचमें श्री सीतारामजी लालसरो बणायोड़ो राजस्थानी-व्याकरण प्रकाशित हो चूको है।

न. दा. स्वा.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समर्पण

राजस्थानी भाषारा

प्रथम व्याकरणकार

श्रीरामकरणजी आसोपा-री

स्मृति-में

सादर सर्मपित

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूचनिका

				पृष्ठ
अध्याय	१	प्रस्तावना	...	१
पाठ	१	व्याकरण और व्याकरणरा विभाग	...	१
अध्याय	२	वर्णविचार	...	२
पाठ	२	वर्णमाळा	...	२
पाठ	३	लिपि अथवा लिखावट	...	४
पाठ	४	उच्चारण	...	७
पाठ	५	संधि	...	११
पाठ	६	स्वर-संधि	...	१४
पाठ	७	व्यंजन-संधि	...	१८
पाठ	८	विसर्ग-संधि	...	२०
अध्याय	३	शब्दविचार	...	२२
पाठ	९	शब्दरा भेद	...	२२
पाठ	१०	संज्ञा	...	२५
पाठ	११	नाम	...	२७
पाठ	१२	सर्वनाम	...	२८
पाठ	१३	विशेषण	...	२९
पाठ	१४	जाति	...	३१
पाठ	१५	वचन	...	३५
पाठ	१६	विभक्ति	...	३९
पाठ	१७	कारक	...	४४
पाठ	१८	शब्दांरा रूप	...	४९
पाठ	१९	संज्ञारो पद-परिचय	...	५५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

			पृष्ठ
पाठ २०	क्रिया	...	५६
पाठ २१	क्रियारा भेद	...	६०
पाठ २२	पूर्ण और अपूर्ण क्रिया	...	६३
पाठ २३	वाच्य	...	६५
पाठ २४	प्रयोग	...	६६
पाठ २५	अर्थ	...	६८
पाठ २६	काळ	...	७१
पाठ २७	क्रियारी रूप-साधना	...	७४
पाठ २८	क्रियारा रूप	...	८२
पाठ २९	कर्मवाच्य और भाववाच्य	...	८८
पाठ ३०	क्रियारो पद-परिचय	...	९२
पाठ ३१	अव्यय	...	९५
पाठ ३२	क्रियाविशेषण अव्यय	...	९६
पाठ ३३	क्रियाविशेषणरा भेद	...	९९
पाठ ३४	नामयोगी अव्यय	...	१०१
पाठ ३५	संयोजक अव्यय	...	१०३
पाठ ३६	केवळप्रयोगी अव्यय	...	१०५
पाठ ३७	अव्ययरो पद-परिचय	...	१०६
पाठ ३८	शव्द-साधना	...	१०८
पाठ ३९	स्वर-विकार	...	१०९
पाठ ४०	उपसर्ग	...	११२
पाठ ४१	प्रत्यय	...	११६
पाठ ४२	शव्द-साधक प्रत्यय (क) धातु-प्रत्यय	...	११८
पाठ ४३	(ख) कृत्-प्रत्यय	...	१२३
पाठ ४४	कई विशेष कृदन्त	...	१२७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

			पृष्ठ
पाठ ४५	(ग) तद्धित-प्रत्यय	...	१३१
पाठ ४६	समास	...	१४१
पाठ ४७	पुनरुक्त शब्द	...	१४८
पाठ ४८	अनुकरण-शब्द	...	१५१
पाठ ४९	संयुक्त क्रिया	...	१५२
अध्याय ४	**वाक्यविचार**	...	**१५६**
पाठ ५०	उद्देश्य और विधेय	...	१५६
पाठ ५१	वाक्यांरा तीन प्रकार	...	१५८
पाठ ५२	वाक्यांरा और नव़ प्रकार		१६२
पाठ ५३	वाक्य-रचना	...	१६३
पाठ ५४	अन्व़य (मेळ)	...	१६६
पाठ ५५	राजस्थानी शब्द-समूह	...	१७१
पाठ ५६	विराम	...	१७३
परिशिष्ट			
राजस्थानी शब्दांरी जोड़नी		...	१७७
शुद्धि-पत्र		...	१८९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संक्षिप्त

राजस्थानी-व्याकरण

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संक्षिप्त

राजस्थानी-व्याकरण

अध्याय १

प्रस्तावना

पाठ १

(१) व्याकरण भाषारी वणावटरो वर्णन करै।

(२) भाषा वाक्यांसूं वणै, वाक्य शब्दांसूं वणै और शब्द वर्णांसूं वणै। इण प्रकार व्याकरणमें तीन विभाग हुवै—

(१) वर्ण-विचार (२) शब्द-विचार (३) वाक्य-विचार।

(३) वर्ण-विचारमें वर्ण, वर्णांरो संयोग, वर्णांरो भेद, वर्णांरो उच्चारण तथा वर्णांरी लिखावट—इण वातांरो वर्णन हुवै।

(४) शब्द-विचारमें शब्दांरा भेद, शब्दांरा रूपान्तर, शब्दांरी व्युत्पत्ति, शब्दांरो निर्माण और शब्दांरा प्रयोग—इण वातांरो वर्णन हुवै।

(५) वाक्य-विचारमें वाक्यांरा भेद, वाक्य वणावणरी रीतां, वाक्यांरो विश्लेषण तथा वाक्यांरो संश्लेषण—इण वातांरो वर्णन हुवै।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अध्याय २

वर्ण-विचार

पाठ २

वर्ण-माळा

(६) राजस्थानी वर्णमाळामें ५१ वर्ण (ध्वनियां) है जिणमें १३ स्वर तथा ३८ व्यंजन है—

(क) स्वर—अ आ इ ई उ ऊ
अॅ अे ऑ ओ अै औ ऋ

(ख) व्यंजन—क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व़ व
श ष स ह ळ ड़
[ं] अनुस्वार और [:] विसर्ग

(७) अ इ उ अॅ ऑ और ऋ—अै छव़ ह्रस्व स्वर कहीजै। आ ई ऊ अे ओ अै और औ—अे सात दीर्घ स्वर कहीजै।

(८) स्वर केवळ मुखसूं बोलीजै जद उणनै निरनुनासिक कैव़ै।

(९) स्वर मुख और नाक दोनांसूं बोलीजै जद सानुनासिक कहीजै।

(१०) लिखाव़ट में सानुनासिक स्वररी पिछाण वास्तै स्वररै ऊपर सादी मींडी अथवा चंद्रबिंदु लगाव़ै। जियां—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अं आं इं ईं उं ऊं अॅं अें ऑं ओं अैं औं ।

अथवा

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ अॅँ अेँ ऑँ ओँ अैँ औँ ।

(११) व्यंजनांरा तीन विभाग हुवै—(१) स्पर्श (२) अन्तःस्थ (३) घर्षक ।

(१२) स्पर्श व्यंजनांरा पांच विभाग है—

(१) कवर्ग—क ख ग घ ङ

(२) चवर्ग—च छ ज झ ञ

(३) टवर्ग—ट ठ ड ढ ण

(४) तवर्ग—त थ द ध न

(५) पवर्ग—प फ ब भ म

(१३) य र ल व़—अै अन्तःस्थ व्यंजन है ।

(१४) श ष स ह ळ व ड़—अै घर्षक व्यंजन कहीजै ।

श ष स—इणांनै ऊष्म व्यंजन कैवै ।

(१५) वर्गांरा पैला तथा दूजा वर्ण और श ष स तथा विसर्ग—अै चवदै वर्ण अघोष कहीजै; बाकी वर्ण अर्थात् वर्णांरा तीजा, चौथा और पांचवां वर्ण, य र ल ळ व़ ह व ड़ तथा अनुस्वार और स्वर—अै घोष वर्ण कहीजै ।

(१६) वर्णांरा दूजा तथा चौथा वर्ण और श ष स ह तथा विसर्ग—अै १५ वर्ण महाप्राण कहीजै । बाकी २८ वर्ण अल्पप्राण वाजै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३

लिपि अथवा लिखावट

(१७) राजस्थानी भाषा जिण लिपिमें लिखीजै वा देवनागरी अथवा नागरी लिपि वाजै। राजस्थानमें इणनै शास्त्री, तथा गुजरात और महाराष्ट्रमें बाळबोध भी कैवै।

(१८) देवनागरीरै अलावा नीचे बतायी लिपियां भी राजस्थानमें चालै—

(१) जैनी।

(२) वाणीकी अथवा महाजनी—इणनै व्यापारी काममें लेवै, इणमें मात्रावां नहीं हुवै।

(३) कामदारी—आ राजरा दफतरांमें प्रायःकर चालती।

इण लिपियांरा नमूना आगै परिशिष्टमें दिया है।

(१९) देवनागरी लिपिमें कईक आखर दो-दो तीन-तीन तरियां लिखीजै। जियां—

अ = अ	ङ = ङ
अे = ए	ण = न
अै = ऐ	र = न
ऋ = ऋ	ल = ल
ख = ष	श = श श
छ = छ	क्ष = क्ष
झ = झ	त्र = त्र

अनुस्वार = ॰ अथवा ं

अनुनासिक = ं अथवा ँ

(२०) स्वर व्यंजनरै आगै आवै जद व्यंजन में मिल जावै।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मिलणैसूं उणरो रूप वदळ जावै । वदलियोड़ै रूपनै मात्रा कैवै । मात्रावां इण प्रकार है—

स्वर—अ आ इ ई उ ऊ अॅ अे अॉ ओ अै औ ऋ

मात्रा—० ा ि ी ु ू ॅ े ॉ ो ै ौ ृ

(२१) 'अ' री कोई मात्रा नहीं । अ व्यंजनरै आगै आवै जद व्यंजनरो हल्रो चिह्न आघो कर देवै । जियां—

क्+अ=क

(२२) मात्रा सहित व्यंजनरा रूपांनै वारखड़ी कैवै । 'क्'री वारखड़ी इण भांत हुवै—

क का कि की कु कू कॅ के कॉ को कै कौ कृ ।

(२३) स्वररै विना व्यंजन अेकलो आवै जद नीचै इसो (्) चिह्न लगायीजै । इण चिन्हनै हल् कैवै ।

(२४) व्यंजनरै आगै व्यंजन आवै जद दोनांरो संयोग हुज्यावै । संयोग हुयोड़ा व्यंजनांनै संयुक्त-व्यंजन या संयुक्त-वर्ण अथवा भेळा-आखर कैवै ।

(२५) संयोग करणैमें पाईवाळा आखरांरी पाई, और आधी पाई-वाळा आखरांरी आधी पाई, आघी कर देवै । पाई विनारा व्यंजन आगलै व्यंजनरै ऊपर लिखीजै । जियां—

(१) न्+य=न्य म्+ल=म्ल
(२) क्+ख=क्ख ज+झ=ज्झ
(३) ट्+र=ट्र ङ्+ग=ङ्ग
ड+ड=ड्ड द्+व=द्व

(२६) कई व्यंजनांरा, संयोग होणै पर, निराळा ही रूप हुवै । जियां—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(क) य-रो संयोग—

क् + य = क्य, क्य	ढ + य = ढ्य
छ् + य = छ्य	द + य = द्य, दय
ट् + य = ट्य	र् + य = र्य, -य, र्य
ड् + य = ड्य	ह + य = ह्य, ह्य

(ख) 'र' रो पूर्व-संयोग—

र् + क = र्क	र् + र = र्र
र् + च = र्च	र् + य = र्य, र्य, -य
र् + म = र्म	र् + ह = र्ह, -ह

(ग) 'र' रो पर-संयोग—

क् + र = क्र	छ् + र = छ्र
ग् + र = ग्र	ट् + र = ट्र
द् + र = द्र	ढ् + र = ढ्र
प् + र = प्र	त् + र = त्र, त्र
श् + र = श्र, श्र	ह + र = ह्र

(घ) दूजा वर्णांरो संयोग

क + त = क्त, क्त	ह + ण = ह्ण, ह्ण
क् + ल = क्ल, क्ल	ह + न = ह्न, ह्न
प् + त = प्त, प्त	ह + म = ह्म, ह्म
त् + त = त्त, त्त	ह + य = ह्य, ह्य
क् + ष = क्ष, , क्ष	ह + र = ह्र, ह्र
ज् + ञ = ज्ञ, ज्ञ	ह + ल = ह्ल, ह्ल
क् + त् + र = क्त्र, क्त्र	ह + व = ह्व, ह्व

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४

उच्चारण

(२७) अै और अौ रा दो उच्चारण हुव़ै। अेक अइ-अउ सरीखो, जिसो संस्कृतमें हुवै। जियां—

अैराव़त=अइराव़त	अौषधि=अउषधि
कैरव़ =कइरव़	कौरव़ =कउरव़
[भैया =भइया	कौव़ा =कउव़ा]

दूसरो जिसो हिन्दी में हुव़ै। जियां—

है	और
जैसा	कौन

(२८) राजस्थानीमें हिन्दी सरीखो उच्चारण हुव़ै, संस्कृत सरीखो नहीं—

अै—जियां वैण और नैण में,
भैया और कन्हैया में जियां नहीं।
अौ—जियां चौक और कौल में,
कौवा में जियां नहीं।

(२९) ऋ, ञ और ष तथा विसर्ग खाली संस्कृतरा तत्सम शब्दां में काम आव़ै। इणांरो शुद्ध उच्चारण अब लोग भूल चूका है। आज-काल इणांरो उच्चारण इण प्रकार हुव़ै—

ऋ=रि
ञ =यँ
ष =श

(३०) आथूणी तथा दिखणादी मारवाड़ी बोलियां में 'स' री जागां अेक भांतरो 'ह' और 'च-छ' री जागां अेक भांतरो 'स' बोलीजै। जियां—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सा'व =हा'ब
चक्की =सक्की
छाछ =सास ।

(३१) 'व़'रो उच्चारण संस्कृत सरीखो हुवै । ओ दन्तोष्ठ्य अर्ध-स्वर वर्ण है । उदाहरण--

स्वामी, स्वर, कंवर, हुवै ।

(३२) 'व' द्वयोष्ठ्य या ओष्ठ्य वर्ण है । इणरो उच्चारण व़ और ब दोनांसूं भिन्न है । संस्कृतमें शब्दांरै आदिमें आवणवाळो 'व' व्रज-भाषामें 'ब' हुज्यावै, राजस्थानीमें वो 'व' हुवै—

वास्ती (वैश्वदेव), व्योपार, वासी, वाड़, वादळ, वेल ।

(३३) व़, व और ब रो आंतरो नीचे लिखिया उदाहरणांसूं मालम हुसी—

(क) व और व़—

वैवणो=चालणो (हिन्दी चलना या वहना)
वावणो=(हिन्दी बोना)
वूवो=चाल्यो (हिन्दी चला)
वगावणो=फेंकणो (हिन्दी फेंकना) ।

(ख) व़ और व—

वो =हिन्दी वह
वो =(बीज) बो, अथवा वह ।

(ग) व और व

वाड़ो=गायों आदि का वाड़ा
वाड़ो=अेक स्वाद, कसैला
वळ =वांकपन
वळ =बल, शक्ति ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वळनो=लौटना, फिरना; वळनो (जलना)
वारी=पारी, Turn; वारी=खिड़की
वोरो=महाजन; वोरो=गेहूँ आदि भरने का बोरा।

(घ) व और व़—
वाळो=बालक,
वाळो=पानी का बरसाती नाला,
व़ाळो=व़ाला प्रत्यय, जियां गुणव़ाळो=गुणवाला ।

(३४) द और ड आखरांरो कदे-कदे अेक निराळो उच्चारण हुव़ै। 'द' रो उच्चारण—टाबर तोतलो बोलै जद ज-नै द़ बोलै। उदाहरण—दि़ल्ली, द़रव़ाजो, दौ़ड़नो।

ड रो उच्चारण डै़रा शब्दरै उच्चारणसूं जाण्यो जासी।
डेरो=रैव़णरो स्थान,
ढेरो=बडी जूं,
डै़रो=कांटांरी वाड़रो डै़रो।

(३५) कई अल्पप्राण आखरांरो महाप्राण तो नहीं, पण हळका महाप्राण जिसो, उच्चारण हुव़ै। इणनै अनुप्राणित उच्चारण कैव़ै।

(३६) अनुप्राणित उच्चारण बताव़ण वास्तै कदे-कदे शब्दरै आगै ['] कामा जिसो चिह्न लगायीजै। उदाहरण—

सा'रो (सहारा)	सारो (सब)
पी'र (पीहर)	पीर (मुसलमानी पीर)
मो'र (मुहर)	मोर (मोर पक्षी)
पा'ड़ (पहाड़)	पाड़ (धोती का पाड़)
का'णी (कहानी)	काणी (कानी, अेक आंख वाली)
ना'र (नाहर)	नार (नार, नारी)।

(३७) शब्दरै अन्तमें, और बीचमें भी, घणी वार 'अ'रो उच्चारण लुप्त हुज्याव़ै। जियां—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कर = कर्	कम = कम्
मत = मत्	तक = तक्
चमक = चमक्	भजन = भजन्
चकमक = चक्मक्	बरकत = वर्कत्
चमकसी = चमक्सी	चरपरो = चर्परो
चमकैं = चम्कैं	चमकाव़ैं = चम्काव़ैं

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५

संधि

(३८) दो वर्णांरै कनै आणैसूं उणांमें कदे-कदे विकार (परिवर्तन) हुज्यावै । इणनै संधि कैवै । जियां—

१. राम+अनुज=रामानुज
अठै अ रै आगै अ आयो, दोनूं मिलनै आ हुग्या ।

२. उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट
अठै त् रै आगै श् आयो, दोनूं मिलनै च्छ हुग्या ।

३. इति+आदि=इत्यादि
अठै इ रै आगै आ आयो, इ-रो य् हुग्यो ।

४. निः+सार=निस्सार
अठै विसर्ग (:) रै आगै स् आयो, विसर्ग-रो स् हुग्यो ।

५. षट्+नवति=षण्णवति
अठै ट् रै आगै न आयो, दोनांरो ण्ण हुग्यो ।

(३९) व्यंजनरै आगै स्वर अथवा व्यंजन आवै और दोनूं मिल ज्याय, पण कोई परिवर्तन नहीं हुवै तो उणनै संयोग कैवै, संधि नहीं ।

निर्+आश=निराश में संयोग है, पण
निः+आश=निराश में संधि है ।
भगवत्+कृपा=भगवत्कृपा में संयोग है, पण
भगवत्+गीता=भगवद्गीता में संधि है ।

(४०) संधि दो तरांरी हुवै—

१. अेक शब्दरै मांय । जियां—
राम+अनुज=रामानुज

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निः + फळ = निष्फळ
भज् + ति = भक्ति ।

२. दो स्वतंत्र शब्दां में । जियां—

राजा आयाति = राजायाति
श्रीमन् आगच्छ = श्रीमन्नागच्छ

(४१) संस्कृतमें दोनूं तरांरी संधि हुवै । राजस्थानीमें केवळ अेक शब्द मांयली संधि हुवै; और वा भी संस्कृतरा तत्सम शब्दांमें ही ।

(४२) अेक शब्द मांयली संधि तीन तरांसूं हुवै—

१. समासरा शब्दांमें । जियां—

हिम + अचळ = हिमाचळ
गण + ईश = गणेश

२. उपसर्ग और शब्दरा मेळ में । जियां—

प्रा + आप्ति = प्राप्ति
उत् + छेद = उच्छेद
सम् + देश = संदेश
निः + रस = नीरस

३. शब्द और प्रत्ययरा मेळ में । जियां—

भज् + त = भक्त
आचार्य + आ = आचार्या

नोट—राजस्थानी में स्वरादि प्रत्यय जुड़ै जद पहलां पूर्व-शब्दरै अंतिम स्वररो लोप हुज्याय और पछै प्रत्ययरो स्वर उण में मिल ज्याय । जियां—

घोड़ो + आ = घोड़् + आ = घोड़ा
सुन्दर + ई = सुन्दर् + ई = सुन्दरी
चतर + आई चतर् + आई = चतराई
टाबर + इयो टाबर् + इयो = टाबरियो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

व्यंजनादि प्रत्यय जुड़ै जद शब्दमें प्राय: सीधो जुड़ ज्याय। जियां—

राम + रो=रामरो

कर + तो=करतो

(४३) संधिरा तीन भेद हुवै—

१. स्वर-संधि—जद स्वर और स्वररी संधि हुवै।

२. व्यंजन-संधि—जद व्यंजन और व्यंजनरी, अथवा व्यंजन और स्वररी, संधि हुवै।

३. विसर्ग-संधि—जद विसर्ग और स्वर, अथवा विसर्ग और व्यंजनरी, संधि हुवै।

संधिरा भेदांरी सारणी

पूर्व शब्दरै अन्त में	पर शब्दरै आदिमें	संधिरो नांव
स्वर	स्वर	स्वर-संधि १
,,	व्यंजन	कोई संधि नहीं
,,	विसर्ग	कोई संधि नहीं
व्यंजन	स्वर	व्यंजन-संधि २
,,	व्यंजन	व्यंजन-संधि २
,,	विसर्ग	कोई संधि नहीं
विसर्ग	स्वर	विसर्ग-संधि ३
,,	व्यंजन	विसर्ग-संधि ३
,,	विसर्ग	कोई संधि नहीं

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ६

स्व़रसंधि

(४४) स्व़र-संधिरा पाँच भेद हुवै़—

दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, और अयादि ।

(४५) दीर्घ—दो समान स्व़र कनै-कनै आवै़ जद दोनांरी जाग्यां दीर्घ स्व़र हुज्यावै़—

अ + अ = आ	राम	+ अव़तार	=	रामाव़तार
अ + आ = आ	देव़	+ आलय	=	देव़ालय
आ + अ = आ	विदया	+ अर्थी	=	विदयार्थी
आ + आ = आ	विदया	+ आलय	=	विदयालय
इ + इ = ई	रवि़	+ इंद्र	=	रव़ींद्र
इ + ई = ई	कवि़	+ ईश	=	कव़ीश
ई + इ = ई	मही	+ इंद्र	=	महींद्र
ई + ई = ई	मही	+ ईश	=	महीश
उ + उ = ऊ	गुरु	+ उपदेश	=	गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	सिंधु	+ ऊर्मि	=	सिंधूर्मि
ऊ + उ = ऊ	वधू	+ उपदेश	=	वधूपदेश
ऊ + ऊ = ऊ	वधू	+ ऊर्मि	=	वधूर्मि
ऋ + ऋ = ॠ	मातृ	+ ऋण	=	मातॄण

(४६) गुण—अ या आ रै आगै इ या ई, अथव़ा उ या ऊ, अथव़ा ऋ आवै़ तो क्रमसूं अे, ओ और अर् हुज्यावै़—

(१) अ + इ = अे	गज	+ इन्द्र	=	गजेन्द्र
अ + ई = अे	गण	+ ईश	=	गणेश

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

आ + इ = अे	महा + इन्द्र	= महेन्द्र
आ + ई = अे	महा + ईश	= महेश
(२) अ + उ = ओ	हित + उपदेश	= हितोपदेश
अ + ऊ = ओ	नव + ऊढा	= नव़ोढा
आ + उ = ओ	महा + उत्सव	= महोत्सव़
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि	= गंगोर्मि
(३) अ + ऋ = अर्	सप्त + ऋषि	= सप्तर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि	= महर्षि

(४७) वृद्धि—अ या आ रै आगै अे या अै, अथव़ा ओ या औ, आव़ै तो क्रमसूं अै और औ हुज्याव़ै—

(१) अ + अे = अै	अेक + अेक	= अैकैक
आ + अे = अै	सदा + अेव़	= सदैव़
अ + अै = अै	गुण + अैश्वर्य	= गुणैश्वर्य
आ + अै = अै	महा + अैश्वर्य	= महैश्वर्य
(२) अ + ओ = औ	परम + ओषधि	= परमौषधि
आ + ओ = औ	महा + ओषधि	= महौषधि
अ + औ = औ	परम + औदार्य	= परमौदार्य
आ + औ = औ	महा + औत्सुक्य	= महौत्सुक्य

(४८) यण्—इ या ई, अथव़ा उ या ऊ, अथवा ऋ रै आगै अ-समान स्व़र आव़ै तो इ-ई रो य्, उ-ऊ रो व़् और ऋ रो र् हु ज्याव़ै (तथा आगलो स्व़र उणमें मिल ज्याव़ै)—

(१) इ या ई + अ = य् + अ = य	यदि + अपि	= यद्यपि
इ या ई + आ = य् + आ = या	इति + आदि	= इत्यादि
इ या ई + उ = य् + उ = यु	अभि + उदय	= अभ्युदय
इ या ई + ऊ = य् + ऊ = यू	वि + ऊढ	= व्यूढ

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इ=ई+ए =य्+ ए = ये	प्रति+एक =प्रत्येक
इ=ई+ऐ =य्+ ऐ = यै	अधि+ऐश्वर्य =अध्यैश्वर्य
इ=ई+ओ=य्+ ओ= यो	दधि+ओदन =दध्योदन
इ=ई+औ=य्+ औ= यौ	परि+औत्सुक्य=पर्यौत्सुक्य

(२) उ या ऊ+अ =व्+ अ =व	मनु+अन्तर =मन्वंतर
उ या ऊ+आ=व्+ आ=वा	सु +आगत =स्वागत
उ या ऊ+इ =व्+ इ =वि	अनु+इति =अन्विति
उ या ऊ+ई =व्+ ई =वी	अनु+ईक्षण =अन्वीक्षण
उ या ऊ+ए =व्+ ए =वे	अनु+एषण =अन्वेषण
उ या ऊ+ऐ =व्+ ऐ =वै	गुरु+ऐश्वर्य =गुर्वैश्वर्य
उ या ऊ+औ=व्+ औ=वौ	गुरु+औत्सुक्य=गुर्वौत्सुक्य

(३) ऋ+अ +र्= अ =र	पितृ+अनुमति =पित्रनुमति
ऋ+आ +र्= आ=रा	पितृ+आनन्द =पित्रानंद
ऋ+ इ +र्= इ =रि	पितृ+इच्छा =पित्रिच्छा
ऋ+ उ +र्=उ = रु	पितृ+उपदेश =पित्रुपदेश
ऋ+ ए +र्=ए = रे	पितृ+एषणा =पित्रेषणा
ऋ+ ऐ +र्=ऐ = रै	पितृ+ऐश्वर्य =पित्रैश्वर्य
ऋ+ ओ +र्=ओ= रो	पितृ+ओक =पित्रोक

(४९) अयादि—ए, ऐ, ओ तथा औ इणांरै आगे कोई स्वर आवै तो इणांरी जागां क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हुज्यावै (तथा आगलो स्वर उणमें मिल ज्यावै)—

ए +अ =अय् +अ =अय	ने+अन=नयन
ऐ +अ =आय् +अ =आय	गै+अक=गायक
ओ +ए =अव् +ए =अवे	गो+एषणा=गवेषणा
औ +अ =आव् +अ =आव	पौ +अक =पावक

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(५०) स्वर-संधिरी सारणी

पूर्व स्वर	पर स्वर										
	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	अे	अै	ओ	औ
अ	आ	आ	अे	अे	ओ	ओ	अर्	अै	अै	औ	औ
आ	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
इ	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	ये	यै	यो	यौ
ई	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
उ	व्	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वे	वै	वो	वौ
ऊ	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ऋ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	रे	रै	रो	रौ
अे	अय	अया	अयि	अयी	अयु	अयू	अयृ	अये	अयै	अयो	अयौ
अै	आय	आया	आयि	आयी	आयु	आयू	आयृ	आये	आयै	आयो	आयौ
ओ	अव्	अवा	अवि	अवी	अवु	अवू	अवृ	अवे	अवै	अवो	अवौ
औ	आव्	आवा	आवि	आवी	आवु	आवू	आवृ	आवे	आवै	आवो	आवौ

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ७

व्यंजन-संधि

(५१) क् च् ट् प् रै आगै कोई घोष वर्ण आवै तो क् च् ट् प् क्रम सूं ग् ज् ड् ब् हुज्यावै—

वाक्+ईश्वरी= वागीश्वरी

षट् +रिपु = षड्रिपु

(५२) च् अथवा ज् रै आगै अघोष वर्ण आवै तो च्-ज् रो क् हुज्यावै और घोष वर्ण आवै तो ग् हुज्यावै—

वाच् +पति =वाक्पति

वाच् +देवी =वाग्देवी

वणिज्+पुत्र =वणिक्पुत्र

वणिज्+भवन=वणिग्भवन

(५३) त् रै आगै चवर्ग, टवर्ग और 'ल'नै टाळनै कोई घोष वर्ण आवै तो उणरो द् हुज्यावै—

सत् +गुण =सद्गुण

सत् +आचार=सदाचार

(५४) द् रै आगै चवर्ग, टवर्गनै टाळनै कोई अघोष वर्ण आवै तो उणरो त् हुज्यावै—

शरद्+काळ =शरत्काळ

(५५) त् अथवा द् रै आगे च्-छ् आवै तो त्-द् रो च् हुज्यावै—

उत् +चारण =उच्चारण

(५६) त् अथवा द् रै आगै ज्-झ् आवै रो त्-द् रो ज् हुज्यावै—

सत् +जन =सज्जन

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(५७) त् अथवा द् रै आगै ल् आवै तो त्-द् रो ल् हु ज्यावै—

उत्+लास=उल्लास

(५८) त् अथवा द् रै आगै ह् आवै तो ह् रो ध् हु ज्यावै—

उत्=हार=उद्धार

(६१) छ् ह्रस्व स्वर रै पछै, या आ उपसर्ग रै पछै, आवै तो उणरो च्छ् हु ज्यावै। दीर्घ स्वर रै पछै आवै तो विकळपसूं हुवै—

परि +छेद =परिच्छेद

वि +छेद =विच्छेद

आ +छादन=आच्छादन

छत्र +छाया =छत्रच्छाया

लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीछाया, लक्ष्मीच्छाया

विशेष—भापारा शब्दां में छ रो च्छ् नहीं भी हुवै—

छत्र +छाया=छत्रछाया

(६२) म् रै पछै व्यंजन आवै तो उणरो अनुस्वार हुज्यावै—

किम्+कर =किंकर किम् +वा =किंवा

सम् +तोप =संतोष सम् +सार =संसार

सम् +योग =संयोग सम् +हार =संहार

(६३) म् रै पछै स्पर्श व्यंजन आवै तो म् रो विकळपसूं नासिक्य वर्ण भी हु ज्यावै—

किम्+कर =किङ्कर किंकर

सम् +कट =सङ्कट संकट

सम् +चय =सञ्चय संचय

सम् +तान =सन्तान संतान

सम् +तोष =सन्तोष संतोष

सम् +पूर्ण =सम्पूर्ण संपूर्ण

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ८

विसर्ग-सन्धि

(६४) विसर्गरै आगै च् छ्, ट् ठ्, त् थ् आवै तो विसर्गरी जागां क्रमसूं श्, ष् और स् हुज्यावै—

निः +चल =निश्चल
तपः +चर्या =तपश्चर्या
निः +छल =निश्छल
धनुः +टंकार =धनुष्टंकार
मनः +ताप =मनस्ताप

(६५) विसर्गरै आगै श् ष् स् आवै तो विसर्गरो क्रमसूं श् ष् स् हुज्यावै, अथवा विसर्ग अविकळ कायम रैवै—

दुः +शासन =दुश्शासन, दुःशासन
निः +संदेह =निस्संदेह, निःसंदेह
निः +सहाय =निस्सहाय, निःसहाय

(६६) विसर्गरै पैली अ हुवै और बादमें भी अ आवै तो अ और विसर्ग मिलनै ओ हुज्यावै और आगलो अ लुप्त हुज्यावै—

मनः +अनुकूल =मनोनुकूल

(६७) विसर्गरै पैली अ हुवै और आगै कोई घोष व्यंजन आवै तो अ और विसर्ग मिलनै ओ हुज्यावै—

मनः +रथ =मनोरथ
मनः +वृत्ति =मनोवृत्ति
रजः +गुण =रजोगुण

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(६८) विसर्गरै पैली अ हुवै ओर आगै अ नै छोडनै कोई दूसरो स्वर हुवै तो विसर्गरो लोप हुज्यावै—

अतः+अेव =अतअेव

(६९) विसर्गरै पैली अ और आ नै छोडनै कोई दूसरो स्वर हुवै तथा आगै कोई घोष वर्ण आवै तो विसर्गरो र् हुज्यावै—

निः+जन =निर्जन
दुः +जन =दुर्जन
निः+आशा =निराशा
दुः +उपयोग=दुरुपयोग

(७०) विसर्गरै पैली इ या उ हुवै और आगै क् ख् या प् फ् हुवै तो विसर्गरो ष् हुज्यावै—

निः+कारण =निष्कारण
निः+फल =निष्फल
दुः +कर =दुष्कर

(७१) विसर्गरै पैली ह्रस्व स्वर हुवै और आगै र् आवै तो उण ह्रस्व स्वर और विसर्ग दोनारी जागां दीर्घ स्वर हुज्यावै—

निः+रस =नीरस
निः+रोग =नीरोग

(७२) ऊपरला नियमांरा कई अपवाद—

यशः+विन् =यशस्विन्
तेजः+विन् =तेजस्विन्
यशः+कर =यशस्कर
नमः+कार =नमस्कार
भाः+कर =भास्कर
पुनः+उक्ति =पुनरुक्ति
पुनः+जन्म =पुनर्जन्म

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अध्याय ३

शब्द-विचार

पाठ ६

शब्दरा भेद

(७३) शब्द-विचारमें शब्दरै भेदांरो, प्रयोगांरो, रूपांतरांरो और व्युत्पत्तिरो निरूपण हुवै ।

(७४) शब्दरा तीन भेद हुवै—

(१) संज्ञा (२) क्रिया (३) अव्यय ।

(७५) कंई पदार्थरो नांव अथवा विशेषता बतावै बो शब्द संज्ञा कहीजै । यथा—पोथी, जोधपुर, ऊंचाई, सोनो, पंचायत, काळो, ऊंचो, ऊपरलो, घणो, तीन ।

(७६) कामरो हुवणो बतावै बो शब्द क्रिया कहीजै । यथा—आवणो, देखणो, करणो, पढै है, बोलसी, वांची ।

(७७) संज्ञा और क्रिया शब्दांमें रूपान्तर हुवै अर्थात् अेक ही शब्दरा कई रूप वणै । यथा—

घोड़ो, घोड़ा, घोड़ां, घोड़ी, घोड़ियां ।
हूं, म्हे, मनै, म्हां, म्हारो, म्हांसू ।
काळो, काळा, काळी ।
जावै, जासी, जांवतो, जांवती, गयो, गया ।

(७८) संज्ञामें जाति, वचन और विभक्तिरा रूपान्तर हुवै । यथा—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१) जाति—

नरजाति	—	घोड़ो	काळो	वो
नारीजाति	—	घोड़ी	काळी	वा

(२) वचन—

अेकवचन	—	घोड़ो	काळो	वो
अनेकवचन	—	घोड़ा	काळा	वै

(३) विभक्ति—

पहली	—	घोड़ो	घोड़ा
दूसरी	—	घोड़ा	घोड़ां
तीसरी	—	घोड़ै	घोड़ां

सर्वनाम संज्ञामें पुरुषरो रूपान्तर और हुवै—-

(४) पुरुष—

अन्यपुरुष	—	वो, वा	वै	
मध्यमपुरुष	—	तूं	थे	आप
उत्तमपुरुष	—	हूं	म्हे	आपां

(७६) क्रियामें जाति, वचन, पुरुष, काळ, वाच्य तथा प्रयोगरा रूपान्तर हुवै । यथा—

(१) जाति—

नरजाति	—	गयो	करतो
नारीजाति	—	गयी	करती

(२) वचन—

अेकवचन	—	गयो	करती	जाऊं
अनेकवचन	—	गया	करत्यां	जावां

(३) पुरुष—

अन्यपुरुष	—	देखै	देखै	जासी
मध्यमपुरुष	—	देखै	देखो	जासो
उत्तमपुरुष	—	देखूं	देखां	जासां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(४) काळ—

वर्तमान	—	भरै	आवै
भूत	—	भरियो	आयो
भविष्य	—	भरैला	आवैला

(५) वाच्य—

कर्तृवाच्य	—	आवै	करै	करसी
कर्मवाच्य	—	×	करीजै	करीजसी
भाववाच्य	—	आयीजै	×	×

(६) प्रयोग—

कर्तरिप्रयोग	—	घोड़ा दौड़िया।
कर्मणिप्रयोग	—	घोड़ां घास खायो।
भावेप्रयोग	—	घोड़ांसूं उठीजियो नहीं।

(८०) जिण शब्दमें रूपान्तर नहीं हुवै वो अव्यय। यथा—ऊपर, आगै, आजकल, अठै, किन्तु, अथवा।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १०

संज्ञा

(८१) संज्ञारा तीन भेद हुवै—

(१) नाम (२) सर्वनाम (३) विशेषण।

(८२) वस्तुरा नांवनै नाम कैवै। यथा—गाय, भारत, रामदास, गंगा, चावळ, सोनो, सभा, धीरज।

गाय	अेक	प्राणीरो नांव है।
भारत	अेक	देशरो नांव है।
रामदास	अेक	आदमीरो नांव है।
गंगा	अेक	नदीरो नांव है।
चावळ	अेक	अन्नरो नांव है।
सोनो	अेक	धातुरो नांव है।
सभा	मिनखांरी जमात रो नांव है।	
धीरज	अेक	गुणरो नांव है।

(८३) नामरै वदळै आवै वो शब्द सर्वनाम। यथा—हूं, तूं, वो, जो।

(१) सीता बोली—हूं जासूं।

इण वाक्यमें 'हूं' सीतारै वदळै आयो है।

(२) गंगाराम रतननै कयो—तूं किसी पोथी लेवैला?

इण वाक्यमें 'तू' रतनरै वदळै आयो है।

(३) काळू घरै कोनी, वो वजार गयो है।

इण वाक्यमें 'वो' काळूरै वदळै आयो है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(८४) नाम अथवा सर्वनामरी विशेषता वतावै वो शब्द विशेषण।
यथा—

(१) काळो घोड़ो आयो।

इण वाक्य में 'काळो' शब्द घोड़ैरो रंग वतावै।

(२) ओ काम आछो कोनी।

इण वाक्य में 'आछो' शब्द कामरो गुण वतावै।

(८५) जिण नाम अथवा सर्वनामरी विशेषता विशेषण वतावै उणनै विशेष्य कैवै। ऊपरला उदाहरणांमें काळो और आछो शब्द विशेषण है तथा घोड़ो और काम शब्द विशेष्य है।

पाठ ११

नाम

(८६) नामरा तीन भेद हुवै—(१) जातिवाचक (२) व्यक्तिवाचक (३) भावृवाचक ।

(८७) अेक जातिरै नांवृनै जातिवाचक कैवै । जियां—गाय, वड़, पेड़ ।

गाय	जिनावरांरी अेक जातिरो नांवृ है ।
वड़	पेड़ांरी अेक जातिरो नांवृ है ।
पेड़	वनस्पतियांरी अेक जातिरो नांवृ है ।

(८८) अेक जातिरी अेक चीजरा नांवृनै व्यक्तिवाचक नाम कैवै । जियां—गंगा, पार्वती, वीकानेर ।

गंगा अेक नदीरो नांवृ है ।
पार्वती अेक स्त्रीरो नांवृ है ।
वीकानेर अेक नगररो नांवृ है ।

(८९) गुण, सभावृ, काम अथवृा अवृस्थारै नांवृनै भावृ-वाचक नाम कैवै । जियां—मिठास, चतराई, भजन, अढाई, नींद, पीड़, गरीवाई ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १२

सर्वनाम

(९०) सर्वनामरा छै भेद हुवै—(१) पुरुषवाचक (२) निश्चयवाचक (३) अनिश्चयवाचक (४) प्रश्नवाचक (५) संबंधवाचक (६) निजवाचक।

(९१) पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषरो बोध करावै ।

पुरुष तीन है—(१) उत्तम (२) मध्यम (३) अन्य ।

बोलै जको उत्तम पुरुष । जियां—हूँ, म्हे, आपां ।

जिणसूं बोलै वो मध्यम पुरुष । जियां—तूं, थे, आप ।

जिणरी वात करीजै वो अन्यपुरुष । जियां—वो, वै ।

उत्तम-पुरुष और मध्यम-पुरुषरा सर्वनामां (हूं, तूं, आप) नै टाळनै बाकी सारा सर्वनाम और नाम अन्यपुरुष हुवै । निजवाचक आप तीनूं पुरुषांमें काम आवै ।

(९२) निजरो अर्थ देवै जको सर्वनाम निजवाचक कहीजै । जियां—आप (आपनै, आपसूं, आपरो, आपमें) ।

(९३) निश्चयवाचक सर्वनाम कनैरी अथवा दूररी निश्चित वस्तुरो बोध करावै । जियां—ओ, वो ।

ओ कनैरी वस्तुरो बोध करावै । वो दूररी वस्तुरो बोध करावै ।

(९४) अनिश्चयवाचक सर्वनाम अनिश्चित वस्तुरो बोध करावै । जियां—कोई, कीं ।

(९५) प्रश्नवाचक सर्वनाम प्रश्न पूछणमें वापरीजै । जियां—कुण, कांई, किसो ।

(९६) संबंधवाचक सर्वनाम दो वाक्यांरो संबंध करै ; जियां—जो, जको, सो ।

जावै जको दिन आवै कोनी ।
ओ काल मिलियो जको ही आदमी है ।
ओ वो ही आदमी है जको काल मिलियो हो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १३

विशेषण

(९७) विशेषणरा ४ भेद हुवै—(१) गुणवाचक (२) परिणामवाचक (३) संख्यावाचक (४) सार्वनामिक ।

(९८) गुणवाचक जको गुणरो बोध करावै । जियां—

काळो, ऊंचो, भलो, बावळो ।

(९९) परिमाणवाचक जको परिमाण बतावै । जियां—

थोड़ो, घणो, सगळो, पूरो, अधूरो, कमती, वेसी ।

(१००) संख्यावाचक जको गिणती बतावै । जियां—

अेक, दो, बीस, सौ, हजार;
पैलो, दूजो, दसवों, हजारवों;
पाव, आधो, सवा, डोढ, साढीतीन;
चौथाई, सवायो, दुगणो;
अनेक, घणा, थोड़ा, सगळा ।

(१०१) पुरुषवाचक नै निजवाचक सर्वनामांनै टाळनै बाकी सारा सर्वनामांरो विशेषणरी भांत प्रयोग हुवै । विशेषणरी भांत काम आवै जद वै विशेषण कहीजै । इणांनै सार्वनामिक विशेषण कैवै । जियां—

ओ आदमी, बो बळद, कोई देस, कीं दूध, जका लुगाई, कुण मिनख, कांई बात ।

(१०२) सर्वनामांरै आगै प्रत्यय जोड़नै गुणवाचक, परिमाणवाचक, तथा संख्यावाचक विशेषण बणायीजै । इणांरा उदाहरण नीचै सारणीमें दिया है—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विशेषण	ओ	वो	ऩो, ऊ	सो	जो	कुण
गुणवाचक	इसो अँड़ो	विसो वैंड़ो	 ओड़ो	तिसो तँड़ो	जिसो जँड़ो	किसो कँड़ो
परिमाण-वाचक	इत्तो इतरो इतणो	बित्तो बितरो वितणो	उत्तो उतरो उतणो	 तितरो तितणो	जित्तो जितरो जितणो	कित्तो कितरो कितणो
संख्या-वाचक	इत्ता इतरा इतणा	वित्ता बितरा वितणा	उत्ता उतरा उतणा	 तितरा तितणा	जित्ता जितरा जितणा	कित्ता कितरा कितणा

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १४

जाति

(१०३) जाति आ वतावै कै नर है क नारी ।

(१०४) राजस्थानीमें दो जातियाँ है—(१) नरजाति (२) नारी-जाति ।

(१०५) नरजाति वतावै कै चीज नर है। जियां—घोड़ो, माळी, सेठ, राजा, काळो ।

(१०६) नारीजाति वतावै कै चीज नारी है। जियां—घोड़ी, माळन, सेठाणी, राणी, काळी ।

(१०७) नरजातिसूं नारीजाति वणावण वास्तै नीचै वताया प्रत्यय जुड़ै—

(१) ई—	वामण	—	वामणी
	सुनार	—	सुनारी
	कुंभार	—	कुंभारी
	मामो	—	मामी
(२) णी—	जाट	—	जाटणी
	वीन	—	वीनणी
	हंस	—	हंसणी
	हाथी	—	हथणी
(३) अण—	चौधरी	—	चौधरण
	दरजी	—	दरजण
	नाई	—	नायण
	जोगी	—	जोगण
	माळी	—	माळन

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(४) आणी—	जेठ	—	जेठाणी
	ठाकर	—	ठकराणी
	वाणियो	—	वणियाणी
	गुरु	—	गुराणी
	देवर	—	देराणी
(५) अवाणी—	गुरु	—	गुरवाणी
	पांडे	—	पंडवाणी
(६) इयाणी—	भाटी	—	भटियाणी
	धणी	—	धणियाणी

(१०८) किताक नरजातिरा शब्दांरी नारीजाति जावक निराळी है। जियां—

ऊंट	—	सांड	भाई	—	वैन
गोधो	—	गाय	भाई	—	भौजाई
नर	—	नारी	भाई	—	भाभी
नर	—	मादी	भाई	—	भावज
पिता	—	माता	मर्द	—	औरत
पुरुष	—	स्त्री	मर्द	—	लुगाई
फूंफो	—	भूवा	मोर	—	ढेलड़ी
वद	—	गाय	राजा	—	राणी
बाप	—	मां	लोग	—	लुगाई
वर	—	वधू	सांड	—	गाय
वाणियो	—	विराणी	साळो	—	साळेली
धणी	—	धिराणी	साढू	—	साळी
धणी	—	वहू, बैर	साब	—	मैम (साबणी भी)
धणी	—	लुगाई	सुसरो	—	सासू
मिनख	—	लुगाई	सूर	—	भूंडण

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१०६) कदे-कदे नारीजातिसूं नरजाति वणायीजै। जियां—

नणद	—	नणदोई	मासी	—	मासो, मासड़
पोथी	—	पोथो	मिन्नी	—	मिन्नो
वैन	—	वैनोई	रोटी	—	रोटो
भैंस	—	भैंसो	रांड	—	रंडवो
भूवा	—	फूफो	गाडी	—	गाडो

(११०) राजस्थानीमें जातिहीन (sexless) शव्दांरी भी जाति हुवै। कुण शव्द किसी जातिरो है इणरी मालम प्रयोगसूं हीज हुवै—

नरजाति—ग्रंथ, देस, मारग, वास्ती, कागद, शरीर।

नारीजाति—पोथी, आंख, वाट, आग, चीठी, काया।

(१११) जातिहीन शव्दांमें नरजाति वडापणा अथवा कठोरतारो अर्थ देवै तथा नारीजाति छोटापणा अथवा कोमळतारो। जियां—

पोथो — पोथी

गाडो — गाडी।

(११२) जातिहीन शव्दांमें कदे-कदे नरजाति और नारीजाति जावक निराळो अर्थ देवै। जियां—

पाटो	—	पाटी	चक्को	—	चक्की
अघेलो	—	अघेली	वड़ो	—	वड़ी
आटो	—	आटी	सांड	—	सांडणी
माटो	—	माटी	पारो	—	पारी
कांटो	—	कांटी	घाटो	—	घाटी
वाड़ो	—	वाड़ी	छातो	—	छाती
झाड़ो	—	झाड़ी	वाळो	—	वाळी (गहणो)

(११३) संस्कृत और उरदूरा शव्दांमें नीचे वताया प्रत्यय लागै—

(१) आ	सुत	सुता
	प्रिय	प्रिया

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

	आचार्य	आचार्या
	क्षत्रिय	क्षत्रिया
	बाळक	बाळिका
	नायक	नायिका
	उपदेशक	उपदेशिका
(२) ई	सुंदर	सुंदरी
	देव़	देव़ी
	दास	दासी
(३) री	कर्त्ता	कर्त्री
	धाता	धात्री
	दाता	दात्री
(४) आनी	भव़	भव़ानी
	रुद्र	रुद्राणी
	इन्द्र	इन्द्राणी
(५) नी	पति	पत्नी
(६) इनी	मानी	मानिनी
	हितकारी	हितकारिणी
(७) आ	साहब	साहबा
	वालिद	वालिदा

(११४) नामरै अलाव़ा अन्यपुरुष-वाचक सर्व़नाम तथा ओकारान्त विशेषणांमें भी जाति-भेद हुवै—

(क) विशेषण—काळो काळी
राती राती

(ख) सर्व़नाम—वो वा
जको जकी, जका

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १५

वचन

(११५) वचन संख्या बतावै अर्थात् आ बतावै कै चीज गिणतीमें कित्ती है।

(११६) राजस्थानीमें दो वचन हुवै—

(१) अेकवचन (२) अनेकवचन।

(११७) अेकवचन अेक संख्यारो बोध करावै अर्थात् आ बतावै कै चीज अेक है। जियां—घोड़ो, पोथी, गाय।

(११८) अनेकवचन अेकसूं अधिक संख्यारो बोध करावै अर्थात् आ बतावै कै चीजां अेकसूं अधिक है। जियां—घोड़ा, पोथियां, गायां।

(११९) कदे-कदे आदर बतावण वास्तै अेकवचनरी ठोड़ अनेकवचन आवै। जियां—

आप कद आया ? अै कठै जावैला ? सेठांनै कागद दो।

(१२०) अेकवचनसूं अनेकवचन बणावण वास्तै नीचै बतायै मुजब प्रत्यय लागै—

(क) नरजातिरा शब्द—

१. ओकारांत शब्दांमें आ प्रत्यय लागै। जियां—

घोड़ो	—	घोड़ा
बाबो	—	बाबा

२. बाकी नरजातिरा शब्द दोनां वचनांमें समान रैवै। जियां—

बादळ	बादळ
राजा	राजा
पति	पति

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

माळी	माळी
साधु	साधु
भालू	भालू

उदाहरण—वादळ वरस्यो। वादळ वरस्या।
राजा आयो। राजा आया।

(ख) नारीजातिरा शब्द–

१. अकारांत शब्दांमें आं प्रत्यय जुड़ै। जियां–

रात	रातां
चाल	चालां

२. आकारांत शब्दांमें आं अथवा वां प्रत्यय जुड़ै। जियां–

विद्या	—	विद्यां, विद्यावां
माळा	—	माळां, माळावां

३. इकारांत और ईकारांत शब्दांमें यां अथवा इयां प्रत्यय जुड़ै। जियां–

नीति	नीत्यां, नीतियां
खेती	खेत्यां, खेतियां
घोड़ी	घोड़्यां, घोड़ियां

४. उकारांत और ऊकारांत शब्दांमें उवां, उआं अथवा अवां प्रत्यय जुड़ै। जियां–

रितु	—	रितुवां, रितवां
वहू	—	वहुवां, वहुआं
सासू	—	सासुवां, सासवां

५. अेकारांत शब्दांमें अेआं अथवा अेयां प्रत्यय जुड़ै। जियां–

जे	जेआं	जेयां
खे	खेआं	खेयां।

(११६) अै-हीज प्रत्यय नीचे कोठांमें वताया है–

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

	नरजाति	नारीजाति
अकारांत	×	आं
आकारांत	×	आं, आवाँ ×
इकारांत	×	यां, इयां
ईकारांत	×	यां, इयां
उकारांत	×	वां, उवां, अवां
ऊकारांत	×	वां, उवां
अेकारांत	×	अेवां, अेयां
अैकारांत	×	×
ओकारांत	×	ओवां
औकारांत	×	औवां
ओकारांत (घोड़ा-वर्ग)	आ	×

(१२०) विशेषण और सर्वनामांमें भी वचन हुवै—

(क) विशेषण — काळो — काळा

(ख) सर्वनाम — हूं — म्हे

वो — वै

(१२१) नरजातिरा ओकारांत विशेषणरो अनेकवचन वणावण वास्तै आ प्रत्यय लागै—

रातो — राता

काळो — काळा

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१२२) बाकी नरजातिरा और नारीजातिरा तमाम विशेषण दोनां वचनांमें सरीसा रैवै̤—

काळी घोड़ी ।

काळी घोड़ियां ।

(१२३) नारीजातिरा विशेषण नामरी भांत काम आवै̤ जद उणरो अनेकवचन नामरी भांत ही ज वणै—

सुन्दरी आयी ।

सुन्दरियां आयी ।

(१२४) सर्वनामांरा अनेकवचन इण मुजब हुवै̤—

हूं	म्हे, आपां	जो	जो
तूं	थे, आप	जको	जका, जके
वो	बै	कुण	कुण
बा	वै	कांई	कांई
ओ	अै	कीं	कीं
आ	अै	कोई	कोई

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १६

विभक्ति

(१२५) राजस्थानी में आठ विभक्तियां हुवै ।

(१२६) विभक्तियांरा दोय भेद हुवै—(१) मूळ विभक्ति (२) यौगिक विभक्ति ।

(१२७) मूळ विभक्तियां—इणांमें संस्कृत जियां अेकवचन और अनेकवचनरा प्रत्यय न्यारा-न्यारा हुवै । मूळ विभक्तियां तीन है—(१) पहली (२) दूसरी (३) तीसरी ।

(१२८) यौगिक विभक्तियां दूसरी अथवा तीसरी मूळ विभक्तिमें परसर्ग जोड़नैंसूं वणै । अै परसर्ग द्राविड़ी भाषावां जियां दोनां वचनांमें अेकसा हुवै । यौगिक विभक्तियां मुख्यकर पांच है—(१) चौथी (२) पांचवीं (३) छठी (४) सातवीं (८) आठवीं ।

(१२९) इण विभक्तियांरा उदाहरण इण मुजब है—

विभक्ति	अेकवचन	अनेकवचन
पहली	घोड़ो	घोड़ा
दूसरी	घोड़ा	घोड़ां
तीसरी	घोड़ै	घोड़ां
चौथी	घोड़ानै, घोड़ैनै	घोड़ांनै
पाँचवीं	घोड़ासूं, घोड़ैसूं	घोड़ांसूं
छठी	घोड़ारो, घोड़ैरो	घोड़ांरो
सातवीं	घोड़ामें, घोड़ैमें	घोड़ांमें
आठवीं	घोड़ा पर, घोड़ै पर	घोड़ां पर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१३०) नारीजातीय शब्दांमें पहली तीनूं विभक्तियांरा रूप सरीखा हुवै—

(१) पहली	रोटी	—	रोटियां
(२) दूसरी	रोटी	—	रोटियां
(३) तीसरी	रोटी	—	रोटियां

(१३१) नरजातिरा शब्दांमें दूसरी और तीसरी विभक्तियांरा रूप समान हुवै। जियां—

(१) पहली	नर	—	नर	माळी	—	माळी
(२) दूसरी	नर	—	नरां	माळी	—	माळियां
(३) तीसरी	नर	—	नरां	माळी	—	माळियां

(१३२) ओकारांत नरजातिरा शब्दांमें तीनूं विभक्तियांरा रूप न्यारा-न्यारा हुवै। जियां—

(१) पहली	घोड़ो	—	घोड़ा
(२) दूसरी	घोड़ा	—	घोड़ां
(३) तीसरी	घोड़ै	—	घोड़ां

(१३३) पहली तीन विभक्तियांरा प्रत्यय इण मुजब है—

(क) नरजातीय ओकारांत शब्दांमें—

(१) पहली	×	—	आ
(२) दूसरी	आ	—	आं
(३) तीसरी	अै	—	आं

(ख) अन्य शब्दांमें—

(१) अेकवचन में कोई प्रत्यय नहीं लागै।

(२) अनेकवचनमें नारीजातीय शब्दांमें अनेकवचनरा प्रत्यय तीनांहीज विभक्तियांमें लागै; नरजातीय शब्दांमें पहली विभक्ति में कोई प्रत्यय नहीं लागै, दूसरी-तीसरी विभक्तियांमें नारीजातिमें लागै जकाहीज प्रत्यय लागै।

(१३४) तीनूं विभक्तियांरा प्रत्यय नीचै कोठांमें बताया है—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

		अेकवचन		अनेकवचन	
शब्द	विभक्ति	नर	नारी	नर	नारी
अकारांत	१ २ ३	×	×	× आं ,,	आं ,, ,,
आकारांत	१ २ ३	×	×	× व़ां, आं ,,	व़ां, आं ,, ,,
इ-ईकारांत	१ २ ३	×	×	× इयां, यां ,,	इयां,यां ,, ,,
उ-ऊकारांत	१ २ ३	×	×	× उव़ां, अव़ां ,,	उव़ीं, अव़ां ,, ,,
अे-अैकारांत	१ २ ३	×	×	× आं ,,	अेआं-अैआं ,, ,,
ओ-औकारांत	१ २ ३	× × ×	× × ×	× ओव़ां ,,	ओव़ां-औव़ां ,, ,,
ओकारांत (घोड़ा-वर्ग)	१ २ ३	× आ अैं	....	आ आं ,,	... ...

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

(१३५) पछली पांच विभक्तियां वणाव़ण वास्तै दूसरी अथव़ा तीसरी विभक्तिरै आगै नीचे वताया परसर्ग लगायीजै —

(४) चौथी नै
(५) पांचव़ीं सूं
(६) छठी रो
(७) सातव़ीं में
(८) आठव़ीं पर

(१३६) पुराणी भाषा और वोलियांमें नीचे वताया प्रत्यय भी पायी जै —

चौथी	रहइं रइं रै कों कूं नूं नइं भणी
पांचवीं	सउं सिउं स्यूं सैं हूंत थकी तैं भणी
छठी	को चो नो दो जो नूं
	तणो हुंदो संदो केरो रहंदो
सातवीं	मइं मांय मां मैं मंह माहे माहि माह महि
आठव़ीं	परि पइ पै माथै

(१३७) छठी और चौथी विभक्तियांरै प्रत्ययांरो मूळ अेक ही है —

छठी	चौथी	
रो	रै	
नो	नै	नूं
को	कै	कूं

(१३८) छठी विभक्ति विशेषण-आळी दाई काममें आव़ै। इण वास्तै इणरै प्रत्ययमें जाति और वचनरो भेद हुव़ै —

नरजाति अेकवचन — रो।
अनेकवचन — रा।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नारीजाति अेकवचन री
अनेकवचन री

(१३९) छठी विभक्तिरै आगै नरजातीय भेदक दूसरी, तीसरी आदि विभक्ति में हुवै तो 'रो' री जागां 'रा' या 'रै' हुज्यावै । जियां—

राजा-रा घोड़ा पर ;
राजा-रै घोड़ै पर ।
किला-रा माथा पर ;
किलै-रै माथै पर ।

(१४०) छठी विभक्तिरै आगै नामयोगी शव्द आवै तो 'रो' री जागां 'रै' हुज्यावै । जियाँ—

म्हारै ऊपर ।
घररै लारै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १७

कारक

(१४१) कारक संज्ञारो संबंध क्रियासूं (अथवा कदे-कदे कृदंतसूं) वतावै ।

(१४२) राजस्थानी में आठ कारक है—(१) कर्ता (२) कर्म (३) करण (४) संप्रदान (५) अपादान (६) अधिकरण (७) संबंध और (८) संबोधन ।

(१४३) संबोधन और संबंध कारक (तथा कदे-कदे दूसरा कारक भी) संज्ञारो संबंध क्रियासूं नहीं वतावै । जियां—

म्हारो घर ।

म्हारै ऊपर ।

मैंसूं आगै ।

मनै जोईजतो ।

घोड़ै चढियो ।

संबोधनरो संबंध वाक्य में दूजा किणी शब्दसूं नहीं हुवै ।

संबंधरो संबंध नाम अथवा नामयोगीसूं हुवै ।

(१४४) क्रियानै करै जको कर्त्ता । कर्त्ता कारकमें पहली, दूसरी, तीसरी, अथवा पांचवीं विभक्ति आवै । जियां—

घोड़ो घास कोनी खावै ।

घोड़ा घास कोनी खायो ।

घोड़ै घास कोनी खायो ।

घोड़ै-सूं घास कोनी खायीजियो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१४५) करीजै जको कर्म। कर्म में पहली और चौथी विभक्ति आवै। जियां—

गाय वांटो खावै।

गाय-सूं वांटो खायीजै।

गाय वांटै-नै खावै।

(१४६) क्रियारै करणरो साधन जको करण। करण कारकमें पाँचवीं (अथवा कदे-कदे तीसरी) विभक्ति आवै। जियां—

हाथ-सूं कागद लिखियो।

पाणी-सूं स्नान कीधो।

हाथां घड़ो भरियो।

(१४७) जिणरै वास्तै क्रिया हुवै वो संप्रदान। संप्रदानमें चौथी विभक्ति आवै। जियां—

राजा बामणां-नै दान दियो।

सवार घोड़ै-नै पाणी पायो।

विद्यार्थी गुरूजी-नै प्रणाम करै है।

(१४८) जिणसूं कोई चीज आघी हुवै वो अपादान। अपादानमें पांचवीं विभक्ति आवै। जियां—

पेड़-सूं फूल झड़िया।

सिपाही घोड़ै-सूं कूदियो।

गुरूजी-सूं विद्या पढसां।

मैं माजी-सूं दो रुपिया लिया।

(१४९) जिणरै आधार (अर्थात् जिणरै मांय अथवा ऊपर) कोई चीज रैवै वो अधिकरण। अधिकरणमें सातवीं अथवा आठवीं (तथा कदे-कदे तीसरी) विभक्ति आवै। जियां—

भाई घर-में गयो है।

मोर पेड़-पर बैठो है।

हाकम घोड़ै चढ-नै आयो हो।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१५०) संबंध कारक दो संज्ञावांरो संबंध वतावै । संबंध में छठी विभक्ति आवै । जियां—

राजा-रो घर ।

(१५१) संबंध कारक विशेषणरी भांति संज्ञारी विशेषता वतावै ।

(१५२) संबंध कारक जिण संज्ञारी विशेषता वतावै उणनै भेद्य तथा संबंध-कारकनै भेदक कैवै । जियां—

पोथी-रो पानो फाटग्यो ।

इण वाक्यमें पोथी भेदक और पानो भेद्य है ।

(१५३) ओकारान्त विशेषण-आळी दाई छठी विभक्तिरा प्रत्ययमें, भेद्यरी जाति और वचनरै अनुसार, जाति और वचनरो भेद हुवै । जियां—

भेद्य			प्रत्यय	उदाहरण
जाति	विभक्ति	वचन		
नर-जाति	पहली	अेक अनेक	रो रा	पोथी-रो पानो पोथी-रा पाना
	दूसरी	अेक अनेक	रा रा	पोथी-रा पाना ! पोथी-रा पानां !
	तीसरी आदि सव	अेक	रा, रै	पोथी-रा पाना-में पोथी-रै पानै-में
		अनेक	रा, रै	पोथी-रा पानां-में पोथी-रै पानां-में
नारी-जाति	समस्त विभक्तियाँ	दोनूं वचन	री	पोथी-री जिल्द-जिल्दां पोथी-री जिल्द-जिल्दां पोथी-री जिल्दमें पोथी-री जिल्दांमें

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१५४) संबोधन कारक पुकारणमें वापरीजै। संबोधनमें दूसरी विभक्ति हुवै। जियां—

वैन ! वैनां !
राजा ! राजां !
घोड़ा ! घोड़ां !
माळी ! माळियां !

(१५५) संबोधन कारकरै पहली प्रायकर हे ओ अे अरे आदि अव्यय जोड़ दिया करै है।

(१५६) नामयोगी अव्यय शब्दांरै साथै संज्ञामें छठी, तीसरी और कदे-कदे पांचवीं विभक्ति आवै। जियां—

छठी— घररै लारै.
घोड़ारै ऊपर (घोड़ैरै माथै).
नदियांरै मांय.
बामणांरै वास्तै.
म्हांरै विचाळै।

पांचवी— हवासूं आगै.
लड़ाईसूं दूर.
पाणीसूं परै।

तीसरी— घर लारै.
घोड़ै ऊपर.
नदियां मांय.
बामणां वास्तै.
म्हां विचाळै।

(१५७) कदे-कदे दूसरी विभक्ति भी आवै जियां—

घोड़ा ऊपर.
घोड़ा पाछै.
घोड़ा लैर.
कमरा मांय।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१५८) कुण-सै कारकमें कुण-सी विभक्ति आवै आ वात नीचै कोठां-में वतायी है—

कारक	विभक्ति
कर्त्ता	पहली, तीसरी, पांचवीं
कर्म	चौथी, पहली
संप्रदान	चौथी
करण	पांचवीं, तीसरी
अपादान	पांचवीं
अधिकरण	सातवीं, आठवीं, तीसरी
संवध	छठी
संबोधन	दूसरी

(१५९) कुण-सी विभक्ति कुण-सा कारकांमें आवै आ वात नीचै कोठांमें वतायी है—

विभक्ति	कारक
पहली	कर्त्ता, कर्म
दूसरी	संवोधन
तीसरी	कर्त्ता, करण, अधिकरण
चौथी	कर्म, संप्रदान
पांचवीं	करण, अपादान
छठी	संवंध
सातवीं	अधिकरण
आठवीं	,,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १८

शब्दांरा रूप

(१६०) नाम-शब्दांरा रूप—

(१) नरजातीय अकारांत शब्द

नर

	एक	अनेक
पहली	नर	नर
दूसरी	नर	नरां
तीसरी	नर	नरां
चौथी	नर-नै	नरां-नै
पांचवीं	नर-सूं	नरां-सूं
छठी	नर-रो	नरां-रो
सातवीं	नर-में	नरां-में
आठवीं	नर पर	नरां पर

(२) नारीजातीय अकारान्त शब्द

गाय

	एक	अनेक
पहली	गाय	गायां
दूसरी	गाय	गायां
तीसरी	गाय	गायां
चौथी	गाय-नै	गायां-नै
पांचवीं	गाय-सूं	गायां-सूं
छठी	गाय-रो	गायां-रो
सातवीं	गाय-में	गायां-में
आठवीं	गाय पर	गायां पर

(३) नरजातीय आकारांत शब्द

राजा

१	राजा	राजा
२	राजा	राजावां, राजां
३	राजा	राजावां, राजां
४	राजानै	राजावांनै, राजांनै

इत्यादि

(४) नारीजातीय आकारांत शब्द

मा

१	मा	मावां
२	मा	मावां
३	मा	मावां
४	मानै	मावांनै

इत्यादि

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(५) नरजातीय इकारांत शब्द

पति

१	पति	पति
२	पति	पतियां
३	पति	पतियां
४	पतिनैं	पतियांनैं
		इत्यादि

(६) नारीजातीय इकारांत शब्द

गति

गति	गतियां
गति	गतियां
गति	गतियां
गतिनैं	गतियांनैं
	इत्यादि

(७) नरजातीय ईकारांत शब्द

माळी

१	माळी	माळी
२	माळी	माळियां
३	माळी	माळियां
४	माळीनैं	माळियांनैं
		इत्यादि

(८) नारीजातीय ईकारांत शब्द

काकी

काकी	काकियां
काकी	काकियां
काकी	काकियां
काकीनैं	काकियांनैं
	इत्यादि

(९) नरजातीय उकारांत शब्द

साधु

१	साधु	साधु
२	साधु	साधवां
३	साधु	साधवां
४	साधुनैं	साधवांनैं
		इत्यादि

(१०) नारीजातीय उकारांत शब्द

रितु

रितु	रितवां
रितु	रितवां
रितु	रितवां
रितुनैं	रितवांनैं
	इत्यादि

(११) नरजातीय ऊकारांत शब्द

भालू

१	भालू	भालू
२	भालू	भालुवां
३	भालू	भालुवां
४	भालूनैं	भालुवांनैं
		इत्यादि

(१२) नारीजातीय ऊकारांत शब्द

वऊ

वऊ	वउवां
वऊ	वउवां
वऊ	वउवां
वऊनैं	वउवांनैं
	इत्यादि

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

(१३) नरजातीय अेकारांत शव्द

दुवे

१	दुवे	दुवे
२	दुवे	दुवेआं (दुवां)
३	दुवे	दुवेआं (दुवां)
४	दुवेनें	दुवेआंनें (दुवांनें)
		इत्यादि

(१४) नारीजातीय अेकारांत शव्द

खे

१	खे	खेआं
२	खे	खेआं
३	खे	खेआं
४	खेनें	खेआंनें
		इत्यादि

(१५) नरजातीय ओकारांत शव्द

खो

१	खो	खो
२	खो	खोआं
३	खो	खोआं
४	खोनें	खोआंनें
		इत्यादि

(१६) नारीजातीय अंकारांत शव्द

जं

१	जं	जंआं
२	जं	जंआं
३	जं	जंआं
४	जंनें	जंआंनें
		इत्यादि

(१७) नरजातीय औकारांत शव्द

जौ

१	जौ	जौ
२	जौ	जौआं
३	जौ	जौआं
४	जौनें	जौआंनें
		इत्यादि

(१८) नरजातीय ओकारांत शव्द (घोड़ा-वर्ग)*

घोड़ो   **तारो**

१	घोड़ो	घोड़ा	तारो	तारा
२	घोड़ा	घोड़ां	तारा	तारां
३	घोड़ें	घोड़ां	तारें	तारां
४	घोड़ानें / घोड़ेंनें	घोड़ांनें	तारानें / तारेंनें	तारांनें

* अें शव्द हिन्दी में आकारांत हुवें (घोड़ा, तारा इत्यादि)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१६१) सर्वनामांरा रूप

	(१) हूं*			(२) तूं †	
१ हूं	म्हे,	आपां	तूं	थे,	आप
३ मैं	म्हां,	आपां	तैं	थां,	आप
४ मनै	म्हांनै,	आपांनै	तनै	थांनै,	आपनै
५ मैंसूं	म्हांसूं,	आपासूं	तैंसूं	थांसूं,	आपसूं
६ म्हारो	म्हांरो,	आपांरो	थारो	थांरो,	आपरो
७ मैंमें	म्हांमें,	आपांमें	तैंमें	थांमें,	आपमें
८ मैं पर	म्हां पर,	आपां पर	तैं पर	थां पर,	आप पर

(३) बो		(४) ओ	
१ वो	वो (नर)	ओ	अै
वा	वै (नारी)	आ	अै
३ वै, वें, बण	वां	अै, अें, अण	आं
४ वै-नै	वांनै	अै-नै	आं-नै
५ बै-सूं	बांसूं	अै-सूं	आं-सूं
६ वै-रो	वां-रो	अै-रो	आं-रो
७ वै-में	बां-में	अै-में	आं-में
८ बै पर	बां पर	अै पर	आं पर
अथवा		अथवा	
३ उण	उणां	इण	इणां
४ उणनै	उणांनैं	इणनै	इणांनै
	इत्यादि		इत्यादि

---

* पांचवी, सातवीं तथा आठवीं विभक्तियांमें म्हारैसूं, म्हारैमें, म्हारै पर तथा म्हांरैसूं, म्हांरैमें, म्हांरै पर रूप भी हुवै ।

† पांचवीं, सातवी, आठवीं विभक्तियांमें थारैसूं, थारैमें, थारै पर तथा थांरैसूं, थांरैमें, थांरै पर रूप भी हुवै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथवा		अथवा	
३ वीं	वियां	ईं	इयां
४ वींनै	वियांनै	ईंनै	इयांनै
	इत्यादि		इत्यादि

अथवा	
१ ऊ	वै, उवै
३ ऊं	वां, उवां
४ ऊं-नै	वां-नै, उवां-नैं
	इत्यादि

(५) कोई

१ कोई	कोई
३ कोई, कैई	कोई, कोयां
४ कोई-नै, कैई-नै, किणीनै	कोई-नै, कोयांनै
	इत्यादि

(६) कुण — (७) कांई

१ कुण	कुण	कांई
३ कण, कै	किणां	क्यां
४ किणनै, कैनै	किणांनै	क्यांनै
५ किणसूं, कैसूं	किणांसूं	क्यांसूं

(८) जो — (९) सो

१ जो	जो	सो	सो
३ जै	ज्यां	तै	त्यां
४ जैनै	ज्यांनै	तैनै	त्यांनै
	इत्यादि		इत्यादि

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथवा

३	जीं	ज्यां
४	जींनै	ज्यांनै
		इत्यादि

अथवा			अथवा	
३	जिण	जिणां	तिण	तिणां
४	जिणनै	जिणांनै	तिणनै	तिणांनै
		इत्यादि		इत्यादि

जिको (जको)			तिको	
१	जिको (नर.) जिका (नारी.)	जिका, जिके	तिको (नर.) तिका (नारी.)	तिका, तिके
३	जिका जिकै	जिकां	तिका तिकै	तिकां
४	जिकानै जिकैनै	जिकांनै	तिकानै तिकैनै	तिकांनै
		इत्यादि		इत्यादि

जिकी (जकी)			तिकी	
१	जिकी	जिक्यां	तिकी	तिक्यां
३	जिकी	जिक्यां	तिकी	तिक्यां
३	जिकीनै	जिक्यांनै	तिकीनै	तिक्यांनै

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ १९

संज्ञारो पद-परिचय

(१६२) **नामरो पद-परिचय—**

(१) भेद (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक)

(२) जाति (नरजाति, नारीजाति)

(३) वचन (अेकवचन, अनेकवचन)

(४) विभक्ति (पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं)

(५) कारक (कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन)

(६) संबंध—कारकरै अनुसार

१ फलाणी क्रियारो या कृदंतरो कर्ता, कर्म, करण आदि ।

२ फलाणी क्रियारो या कृदंतरो पूरक ।

३ फलाणै नामरो समानाधिकरण ।

४ संबंध कारक हुवै तो फलाणै भेद्यरो भेदक ।

५ संबोधन कारक हुवै तो संबंध नहीं बतायीजै ।

(१६३) **सर्वनामरो पद-परिचय—**

(१) भेद (पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक)

(२) पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य)

(३) जाति (४) वचन (५) विभक्ति (६) कारक (७) संबंध ।

टिप्पणी—सर्वनाम में संबोधन कारक नहीं हुवै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१६४) **विशेषणरो पद-परिचय—**

(१) भेद (गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक)

(२) जाति (३) वचन

(४) संबंध—फलाणैं विशेष्य (नाम या सर्वनाम) री विशेषता वतावै ।

(१६५) **उदाहरण—**

(१)

खरगोस वोलियो—हे स्वामी ! इणमें न तो म्हारो कसूर है, और न दूजा जीवांरो, इणरो कारण कहूं सो सुणो । जद सिंघ कही कै वेगो कह ।

खरगोस — संज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्ता कारक, बोलियो क्रियारो कर्ता ।

स्वामी — संज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, दूसरी विभक्ति, संबोधन कारक ।

इणमें — संज्ञा, निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, नरजाति, अेकवचन, सातवीं विभक्ति, अधिकरण कारक, है क्रियारो अधिकरण ।

म्हारो — संज्ञा, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तमपुरुष, नरजाति, अेकवचन, छठी विभक्ति, संवंध कारक, कसूर भेद्यरो भेदक ।

कसूर — संज्ञा, भाववाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्ता कारक, है कियारो कर्ता ।

दूजा — संज्ञा, संख्यावाचक विशेषण, नरजाति, अनेकवचन, जीवां विशेष्यरी विशेषता वतावै ।

जीवांरो — संज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अनेकवचन, छठी विभक्ति, संवंध कारक, अध्याहृत कसूर भेद्यरो भेदक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इणरो — संज्ञा, निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, नरजाति, अेक-वचन, छठी विभक्ति, संबंध कारक, कारण भेद्यरो भेदक ।

कारण — संज्ञा, भाववाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्म कारक, कहूं क्रियारो कर्म ।

सो — संज्ञा, निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, नरजाति, अेक-वचन, पहली विभक्ति, कर्म कारक, सुणो क्रियारो कर्म ।

आप — संज्ञा, पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यमपुरुष, नरजाति, अनेकवचन (आदरार्थ), पहली विभक्ति, कर्ता कारक, सुणो क्रियारो कर्ता ।

सिंघ — संज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्ता कारक, कही क्रियारो कर्ता ।

(२)

अब कुण है जको म्हारी बराबरी करै ?

कुण — संज्ञा, प्रश्नवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्ता कारक, है क्रियारो कर्ता ।

जको — संज्ञा, संबंधवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, नरजाति, अेकवचन पहली विभक्ति, कर्त्ता कारक, करै क्रियारो कर्ता ।

म्हारी — संज्ञा, पुरुषवाचक सर्वनाम, नरजाति, अेकवचन, छठी विभक्ति, संबंधकारक, बराबरी भेद्यरो भेदक ।

बराबरी — संज्ञा, भाववाचक नाम, नारीजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्मकारक, करै क्रियारो कर्म ।

(३)

जाळामें बैठी मकड़ी इण अभिमानी माछररा वचन सुणिया ।

जाळामें — संज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, सातवीं विभक्ति, अधिकरण कारक, बैठी कृदंतरो अधिकरण ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बैंठी — संज्ञा, भूत-कृदंत विशेषण, नारीजाति, अेकवचन, मकड़ी विशेष्यरी विशेषता बतावै ।

इण — संज्ञा, सार्वनामिक विशेषण, नरजाति, अेकवचन, माछर विशेष्यरी विशेषता बतावै ।

अभिमानी — संज्ञा, गुणवाचक विशेषण, नरजाति, अेकवचन, माछर विशेष्यरी विशेषता बतावै ।

(४)

म्हारो भाई रामदास पाठशाळामें अध्यापक है ।

म्हारो — संज्ञा, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, अनेकवचन, छठी विभक्ति, संबंधकारक, भाई भेद्यरो भेदक ।

भाई — संज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्ता कारक, है क्रियारो कर्ता ।

रामदास — संज्ञा, व्यक्तिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पैली विभक्ति, कर्ता कारक, भाई संज्ञारो समानाधिकरण, है क्रियारो कर्ता ।

अध्यापक — संज्ञा, जातिवाचक, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, है क्रियारो पूरक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २०

क्रिया

(१६६) कामरो हुव़णो अथवा करीजणो वताव़ै जको शब्द क्रिया कहीजै।

(१६७) क्रियारै अन्तमें णो (अथवा वो) हुव़ै। णो-सूं पैली ड़, ळ व़ा ण हुव़ै तो णो-रो नो हुज्याव़ै। जियां--

(क)	करणो	उठणो	चालणो
	करवो	उठवो	चालवो
(ख)	लड़नो	पाळनो	जाणनो
	लड़वो	पाळवो	जाणवो

(१६८) क्रियारै णो-सहित रूपनै क्रियारो साधारण रूप कैव़ै।

(१६९) क्रियारै णो-रहित रूप नै धातु कैव़ै। जियां—कर उठ चाल लड़ पाळ जाण।

(१७०) धातु दो प्रकाररी हुव़ै—(१) व्यंजनांत, (२) स्व़रांत।

(१७१) अकारांत धातुनै व्यंजनांत कैव़ै, कारण उणरै अंतरै अकाररो उच्चारण नहीं हुव़ै। जियां—कर उठ वण लिख जाण भूल।

(१७२) अकारनै टाळनै वाकी कोई स्व़र अंतमें आवै वा धातु स्व़रांत कहीजै। जियां—आ जा खा पी सी ले दे कै रै जो।

(१७३) स्व़रान्त धातुसूं क्रियारो सामान्य रूप वणाव़ै जद णो-रै पूर्व व़ रो आगम विकळपसूं हुव़ै। जियां—

आव़णो	पीव़णो	लेव़णो	कैव़णो	जोव़णो।
आणो	पीणो	लेणो	कैणो	जोणो।
आवो	पीवो	लेवो	कैवो	जोवो।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २१

क्रियारा भेद

(१७४) क्रियारा दो भेद हुवै—(१) सकर्मक, (२) अकर्मक ।

(१७५) जठै क्रियारो व्यापार कर्त्तामें, और क्रियारो फळ कर्ममें, रैवै उठै सकर्मक, तथा जठै क्रियारो व्यापार और फळ दोनूं कर्त्तामें रैवै उठै अकर्मक हुवै ।

(१७६) शरीररै अंगांरी (अथवा मन-सहित इंद्रियांरी) चेष्टावांनै व्यापार कैवै । जियां—

(१) हाथी उठियो ।

अठै हाथी पगांसूं ऊभो हुवणरी चेष्टा करी ।

(२) बाळक रोटी जीमियो ।

अठै बाळक रोटीनै मूंढैमें घालणरी और मूंढैमें दाँतांसूं चवावणरी चेष्टा करी ।

(३) गजराज देवकरणनै पटकियो ।

अठै गजराज देवकरणनै उठा'र फेंकणरी चेष्टा करी ।

(४) गोपाळ बजारसूं फळ लायो ।

अठै गोपाळ बजार जावणरी, बठैसूं फल लेवणरी और उठायनै लावणरी चेष्टावां करी ।

(५) गोदावरी चाली ।

अठै गोदावरी पगांसूं चालणरी चेष्टा करी ।

(६) माळी पेड़ सींच्यो ।

अठै माळी पाणी लावणरी और पेड़रै थाळैमें नाखणरी चेष्टावां करी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१७७) चेष्टारै परिणामनै फळ कैवै । जियां—

(१) वामण रोटी पकायी ।

अठै वामण रोटीनै आग पर नाखण और उणनै उथळण आदिरी चेष्टावां करी जद रोटी पकी । पकणो फळ है ।

(२) गजराज देवकरणनै पटकियो ।

अठै गजराजरी चेष्टारो फळ ओ हुयो कै देवकरण जमी माथै पड़ियो । जमी माथै पड़नो अर्थात पटकीजणो फळ है ।

(३) माळी पेड़ सींच्यो ।

अठै माळीरी चेष्टारो ओ फळ हुयो के पेड़ सींचीजियो । सींचीजणो फळ है ।

(४) गोपाळ वजारसूं फळ लायो ।

अठै गोपाळरी चेष्टावांरो ओ फळ हुयो कै फळ वजार सूं घरमें आया । फळांरो वजारसूं आवणो अर्थात लायीजणो फळ है ।

(५) गोदावरी चाली ।

अठै गोदावरीरी चेष्टारो ओ फळ हुयो कै गोदावरी अेक स्थानसूं दूसरै स्थान ताईं गयी अर्थात गोदावरी सूं चालीजियो । चालीजणो फळ है ।

(६) हाथी उठियो ।

अठै हाथीरी चेष्टारो ओ परिणाम हुयो कै हाथी ऊभो हुयो । हाथीरो ऊभो हुवणो फळ है ।

(१७८) (१) वामण रोटी पकायी ।

अठै चेष्टा करी वामण, अतः व्यापार कर्त्तामें है । चेष्टारै फळस्वरूप रोटी पकी, पकणो फळ रोटीमें हुयो ।

(२) रामू किसनैनै मारियो ।

अठै मारणरी चेष्टा करी रामू, और मारीजणो फल मिलियो किसनैनै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३) माळी रू'ख सींचै ।

अठै सींचणरो व्यापार माळी करै, और फळ सींचीजणो पेड़नै मिलै ।

पकावणो, मारणो, सींचणो, इण क्रियावांमें व्यापार कर्त्तामें और फळ कर्ममें रैवै; इण वास्तै अै सकर्मक है ।

(१७९) (१) गंगा उठी ।

अठै उठणरी चेष्टा गंगा करै और उठीजणो फळ भी गंगानै ही मिलै, अतः व्यापार और फळ दोनूं कर्त्तामें है ।

(२) राधा चालै ।

अठै चालणरो व्यापार राधा करै और अेक स्थानसूं दूसरै स्थान ताईं पूगणो फळ भी राधानै ही मिलै ।

(३) मजूर घरमें वड़ियो ।

अठै घरमें वड़नरो व्यापार मजूर करियो और घरमें वड़ीजणो फळ भी मजूरनै ही मिलियो ।

उठणो, चालणो, वड़नो, इण क्रियावांमें व्यापार और फळ दोनूं ही कर्त्तामें रैवै; इण वास्तै अै अकर्मक है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २२

पूर्ण और अपूर्ण क्रिया

(१८०) क्रिया कदे पूर्ण हुवै, कदे अपूर्ण ।

(१८१) पूर्ण क्रियामें अर्थ पूरो हुवै, अर्थात अर्थ पूरो करण वास्तै और शब्दरी आवश्यकता नहीं हुवै । जियां—

(१) राजा उठियो ।

(२) राजा बामणनै दान दियो ।

(१८२) अपूर्ण क्रियामें अर्थ पूरो नहीं हुवै, अर्थात अर्थ पूरो करण वास्तै और शब्दरी आवश्यकता हुवै; सकर्मक क्रियामें कर्म हुतां थकां भी अर्थ अधूरो भासै । जियां—

(१) राजा वणियो ।

कांई वणियो ? राजा भिखारी वणियो ।

(२) राजा बामणनै वणायो ।

कांई वणायो ? राजा बामणनै सेनापति वणायो ।

(१८३) है क्रिया पूर्ण और अपूर्ण दोनूं है—

(१) ईश्वर है । अर्थात ईश्वर रो अस्तित्व है ।

(३) ईश्वर है । ईश्वर कांई है ? ईश्वर अज्ञेय है ।

(१८४) अपूर्ण क्रियारो अर्थ पूरो करै जका शब्दांनै पूरक कैवै ।

(१८५) कर्म, संप्रदान और क्रियाविशेषण पूरक नहीं कहीजै ।

(१८६) कर्त्ता और कर्म भिन्न पदार्थ हुवै, पण पूरक और कर्त्ता भिन्न पदार्थ नहीं हुवै, सकर्मक क्रिया में कर्म और पूरक अभिन्न हुवै ।

(१) रामू वींद वणियो ।

अठै रामू और वींद भिन्न-भिन्न व्यक्ति नहीं, रामू ही वींद है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२) राजा बामणनै सेनापति वणायो ।

अठै बामण और सेनापति न्यारा-न्यारा व्यक्ति नहीं, बामण ही सेनापति है ।

(३) गोमती रोटी-नै खायी ।

अठै गोमती और रोटी न्यारा-न्यारा पदार्थ है, गोमती रोटी नहीं है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २३

वाच्य

(१८७) वाच्य आ वात वतावै कै क्रियारो कर्ता (अथवा कर्ता और कर्म) किसी विभक्तिमें है।

(१८८) वाच्य तीन है--(१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

(१८९) कर्ता पैली अथवा दूसरी विभक्ति में हुवै जद कर्तृवाच्य।

घास ऊगै है।
विद्यार्थी पढतो हो।
विद्यार्थी पोथी वांचै है।
राम रावणनै मारियो।
घोड़ै घास खायो।

(१९०) कर्ता पांचवीं और कर्म पैली विभक्ति में हुवै जद कर्मवाच्य। कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया में ही हुवै।

रामसूं रावण मारीजियो।
घोड़ैसूं घास खायीजियो।
विद्यार्थीसूं पोथी वांचीजी।

(१९१) अकर्मक क्रियारो कर्ता पांचवीं विभक्ति में हुवै जद भाववाच्य।

घाससूं ऊगीजियो।
विद्यार्थीसूं चढीजियो।
मैंसूं आयीजियो।

(१९२) भाववाच्य प्राय: करनै निषेधात्मक वाक्यमें (अर्थात् नहीं, कोनी आदि शब्दांरै साथ) आवै—

थारासूं कोनी आयीजियो।
मैंसूं रोटी नहीं खायीजै।
गायसूं उठीजियो कोनी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २४

प्रयोग

(१६३) प्रयोग बतावै़ कै क्रिया किणरै अनुसार हुवै़ अर्थात क्रियारा वचन, जाति और पुरुषमें किणरै अनुसार परिवर्तन हुवै़ ।

(१६४) प्रयोग तीन हुवै़—(१) कर्तरि-प्रयोग (२) कर्मणि-प्रयोग (३) भावे़-प्रयोग ।

(१६५) क्रिया कर्त्तारै अनुसार हुवै़ जद कर्तरि प्रयोग—

वचन—	घोड़ो भाग्यो ।	घोड़ा भाग्या ।
	तूं जासी ।	थे जासो ।
	बैंन काम करती ही ।	बैंनां काम करती ही ।
जाति—	घोड़ो कूदियो ।	घोड़ी कूदी ।
	हूं काम करै हो ।	हूं काम करै ही ।
पुरुष—	बो करै । तूं करै ।	हूं करूं ।
	वै जासी । थे जासो ।	म्हे जासां ।

(१६६) क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै़ जद कर्मणि-प्रयोग । कर्मणि-प्रयोग कर्मवाच्यमें, तथा जिण काळांरा रूप भूतकृदन्त सूं वणै उण काळांमें कर्तृवाक्य में भी, हुवै़ ।

(क) कर्मवाच्य—

छोरासूं आंबो खायीजियो ।

छोरासूं आंबा खायीजिया ।

छोरासूं रोटी खायीजी ।

(ख) कर्तृवाच्य—

छोरै आंबो खायो । छोरां आंबो खायो ।

छोरै आंबा खाया । छोरां आंबा खाया ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छोरै रोटी खायी । छोरां रोटी खायी ।

छोरी आंबो खायो । छोरियां आंबो खायो ।
छोरी आंबा खाया । छोरियां आंबा खाया ।
छोरी रोटी खायी । छोरियां रोटियां खायी ।

(१६७) क्रिया कर्ता और कर्म दोनांरै ही अनुसार नहीं हुवै, पण बराबर अेकवचन, नर-जाति, अन्य-पुरुष वणी रैवै, जद भावे-प्रयोग । भावे-प्रयोग भाववाच्य में हुवै ।

म्हांसूं कोनी आयीजै ।
तैंसूं कोनी उठीजैला ।
उणसूं नीचै कोनी उतरीजियो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २५

अर्थ

(१९८) अर्थ वतावै कै क्रिया किसो भाव़ सूचित करै है ।

(१९९) अर्थ पांच हुवै—(१) निश्चयार्थ (२) आज्ञार्थ (३) संभाव़नार्थ (४) संदेहार्थ (५) संकेतार्थ ।

(२००) आज्ञारो भाव़ पायीजै जद आज्ञार्थ—

तूं जा । थे जाव़ो ।

तूं काल आये । थे काल आयीजो ।

(२०१) संभाव़ना, इच्छा, आशीर्व़ादरो भाव़ पायीजै जद संभाव़नार्थ—

हूं जाऊं । म्हे ओ काम करां ।

तूं फळै-फूळै । थे सुख पाव़ो ।

स्यात् बो घरे जाव़ै । कदास वै आज आ ज्याव़ै ।

(२०२) संदेहरो भाव़ पायीजै जद संदेहार्थ—

पुजारी पूजा करतो हुसी ।

भाई दुकान गयो हुसी ।

(२०३) जद ओ भाव़ पायीजै कै अेक काम हुवै तो दूसरो हुवै, अर्थात अेक कामरो हुव़णो दूसरै कामरै हुव़ण माथै आश्रित रैवै, जद संकेतार्थ—

विद्यार्थी पढतो तो पूजीजतो ।

रोटियां करी हुती तो जीमता ।

मे वरससी तो खेती हुसी ।

आटो लाव़ै तो रसोई हुवै ।

(२०३) कोई विशेष भाव़ नहीं हुवै और कोरी वात कहीजै जद निश्चयार्थ—

विद्यार्थी पढै है ।

मेह वरसियो ।

परीक्षा हुसी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२०५) तीनूं काळांमें अै पांचूं अर्थ हुवै पण पांचूं अर्थांरा न्यारा-न्यारा रूप तीनूं काळांमें नहीं हुवै। जिण अर्थरा न्यारा रूप नहीं हुवै उण अर्थनै बतावण वास्तै दूसरा किणी अर्थरा रूप वापरीजै। जियां—

वर्तमान-काळमें संकेतार्थ—
आटो लावै तो रसोई करां।
पढै तो पास हुवै।

भविष्यकाळ में संकेतार्थ—
पढसी तो पास हुसी।

भविष्यकाळ में संदेहार्थ—
रामू कदाचित् रोटी लासी।

(२०६) किसा अर्थ में किसा-किसा काळांरा रूप बणै आ बात नीचै सारणीमें बतायी है—

अर्थ	भविष्य	वर्तमान	भूत
निश्चय	सामान्य-भविष्य	सामान्य-वर्तमान	सामान्य-भूत
	×	×	आसन्न-भूत
	×	×	अपूर्ण-भूत
	×	×	पूर्ण-भूत
संभावना	संभाव्य-भविष्य	संभाव्य-वर्तमान	संभाव्य-भूत
संदेह	×	संदिग्ध-वर्तमान	संदिग्ध-भूत
संकेत	×	×	सामान्य-संकेत भूत
	×	×	अपूर्ण-संकेत भूत
	×	×	पूर्ण-संकेत भूत
आज्ञा	आज्ञा-भविष्य	आज्ञा-वर्तमान	×

(२०७) किसा काळांमें किसा-किसा अर्थांरा रूप हुवै आ बात नीचै सारणीमें बतायी है—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काळ		निश्चय	संकेत	संभावना	संदेह	आज्ञा
भूत	सामान्य	सामान्य-भूत	संकेत-भूत	संभाव्य-भूत	संदिग्ध-भूत	×
	अपूर्ण	अपूर्ण-भूत	अपूर्ण-संकेत-भूत	×	×	×
	पूर्ण	पूर्ण-भूत	पूर्ण-संकेत-भूत	×	×	×
	आसन्न	आसन्न-भूत	×	×	×	×
वर्तमान	सामान्य	सामान्य-वर्तमान	× ×	संभाव्य-वर्तमान	संदिग्ध-वर्तमान	श्राज्ञा-वर्तमान
भविष्य	सामान्य	सामान्य-भविष्य	×	संभाव्य-भविष्य	×	आज्ञा-भविष्य

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २६

काळ

(२०८) काळ क्रियारै हुवणरो समय वतावै।

(२०९) मुख्य काळ तीन है—(१) भूत (२) वर्तमान (३) भविष्य।

(२१०) वीत चूको वो भूत-काळ। जियां—

वादळ वरसियो।

(२११) अवार चालै वो वर्तमान-काळ। जियां—

वादळ वरसै है।

(२१२) अवै आसी वो भविष्य-काळ। जियां—

वादळ वरसैला।

(२१३) राजस्थानी व्याकरणमें भूतकाळरा ९, वर्तमानरा ४. तथा भविष्यरा ३ भेद हुवै। इण तरां सारा काळ १६ हुवै।

(२१४) भूतकाळरा भेद—

१ निश्चयार्थ—	१ सामान्य-भूत	वादळ वरसियो
	२ आसन्न-भूत	वादळ वरसियो है
	३ पूर्ण-भूत	वादळ वरसियो हो
	४ अपूर्ण-भूत	वादळ वरसतो हो
२ संभावना अर्थ —	५ संभाव्य-भूत	वादळ वरसियो हुवै
३ संदेहार्थ—	६ संदिग्ध-भूत	वादळ वरसियो हुसी
४ संकेतार्थ—	७ संकेत-भूत	वादळ वरसतो
	८ संकेत-भूत	वादळ वरसतो हुतो
	९ पूर्ण-भूत	वादळ वरसियो हुतो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२१५) वर्तमान-काळरा भेद—

१ सामान्यार्थ—	१ सामान्य-वर्तमान	वादळ वरसै है
२ संभावनार्थ—	२ संभाव्य-वर्तमान	वादळ वरसतो हुवै
३ संदेहार्थ—	३ संदिग्ध-वर्तमान	वादळ वरसतो हुसी
४ आज्ञार्थ—	४ आज्ञा-वर्तमान	वादळ ! तू वरस

(२१६) भविष्य-काळरा भेद—

१ सामान्यार्थ—	१ सामान्य-भविष्य	वादळ वरसैला
२ संभावनार्थ—	२ संभाव्य-भविष्य	वादळ वरसै
३ आज्ञार्थ—	३ आज्ञा-भविष्य	वादळ ! तूं वरस्ये वादळ ! तूं वरसीजे वादळ ! तूं वरसजे

(२१७) सामान्य-भूत—जद ओ निश्चय नहीं हुवै कै काम थोड़ी वार पैली पूरो हुयो कै घणी वार पैली।

आसन्न-भूत—वतावै कै काम अवार, थोड़ी वार पैलीज, पूरो हुयो है।

पूर्ण-भूत—वतावै कै काम घणो पैली हुयो हो।

अपूर्ण-भूत—वतावै कै काम आरंभ हो चूको हो पण पूरो नहीं हुयो हो।

संकेत-भूत—आ वात वतावै कै अेक काम हुतो तो दूसरो हुतो।

सामान्य-वर्तमान—वतावै कै काम हुवै है अथवा हुया करै है।

सामान्य-भविष्य—वतावै कै काम हाल आरंभ नहीं हुयो, आगै हुसी।

संभाव्य-भूत—भूतकाळमें कामरै हुवणरी संभावना वतावै।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सभाव्य-वर्तमान—वर्तमानमें कामरै हुवणरी संभावना बतावै।

संभाव्य-भविष्य—भविष्यमें कामरै हुवणरी संभावना अथवा इच्छा बतावै।

संदिग्ध-भूत—भूतकाळमें कामरै हुवणमें संदेह बतावै।

संदिग्ध-वर्तमान—वर्तमानमें कामरै हुवणमें संदेह बतावै।

आज्ञा-वर्तमान—में अबार काम करणरी आज्ञा पायीजै।

आज्ञा-भविष्य—में भविष्यमें काम करणरी आज्ञा पायीजै।

(२१८) संभाव्य-भविष्य अपभ्रंशरा सामान्य-वर्तमानसूं वणियो है इण वास्तै घणी वार सामान्य-वर्तमानरा अर्थमें भी आवै।

(२१९) आज्ञारा दोनूं काळ मध्यम-पुरुषमें ही हुवै।

(२२०) तात्काळिक वर्तमान-काळ और तात्काळिक भूत-काळरो प्रयोग घणो कम हुवै, उणां-री जागां प्राय-कर सामान्य-वर्तमान और अपूर्णभूत वापरीजै।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २७

क्रियारी रूप-साधना

(२२१) रूप-साधनारी दृष्टिसूं काळांरा तीन विभाग करीजै—

(१) जका धातुरै आगै प्रत्यय लगाणैसूं वणै ।

(२) जका वर्तमान-कृदन्तसूं वणै ।

(३) जका भूत-कृदन्तसूं वणै ।

(२२२) काळांरा प्रत्यय इण भांत है—

विभाग १

काळ	पुरुष	प्रत्यय	
		अेकवचन	अनेकवचन
(१) आज्ञा-वर्तमान	मध्यम	×	ओ
(२) आज्ञा-भविष्य	,,	इये ये जे ईजे	इया या जो ईजो
(३) संभाव्य-भविष्य	अन्य मध्यम उत्तम	अै अै ऊं	अै ओ आं
(४) सामान्य-भविष्य (२)	अन्य मध्यम उत्तम	अैला अैला ऊंला	अैला ओला आंला
(३) सामान्य-भविष्य (१)	अन्य मध्यम उत्तम	सी सी सूं	सी सो सां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(६) सामान्य-वर्तमान	अन्य मध्यम उत्तम	अै है अै है ऊं हूं	अै है ओ हो आं हां
(७) अपूर्ण-भूत (१)	तीनूं पुरुष (नर जाति) (नारी जाति)	 अै हो अै ही	 अै हा अै ही

विभाग २

काळ	जाति	प्रत्यय	
		अेकवचन	अनेकवचन
(१) संकेत-भूत	नर-जाति नारी-जाति	तो ती	ता ती, त्यां
(२) अपूर्ण-संकेत-भूत	नर नारी	तो हुतो ती हुती	ता हुता ती हुती
(३) अपूर्ण-भूत (२)	नर नारी	तो हो ती ही	ता हा ती ही
(४) संभाव्य-वर्तमान	नर	तो हुवै तो हुवै तो हुऊं	ता हुवै ता हुवो ता हुवां
	नारी	ती हुवै ती हुवै ती हुऊं	ती हुवै ती हुवो ती हुवां
(५) संदिग्ध-वर्तमान	नर	तो हुसी तो हुसी तो हुसूं	ता हुसी ता हुसो ता हुसां
	नारी	ती हुसी ती हुसी ती हुसूं	ती हुसी ती हुसो ती हुसां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विभाग ३

१ सामान्य-भूत	नर नारी	इयो, यो ई	इया, या ई
२ पूर्ण-भूत	नर नारी	इयो हो ई ही	इया हा ई ही
३ पूर्ण-संकेत-भूत	नर नारी	इयो हुतो ई हुती	इया हुता ई हुती
४ आसन्न-भूत	नर नारी	इयो है ई है	इया है ई है
५ संभाव्य-भूत	नर नारी	इयो हुवै ई हुवै	इया हुवै ई हुवै
६ संदिग्ध-भूत	नर नारी	इयो हुसी ई हुसी	इया हुसी ई हुसी

(२२३) नीचे बताया ५ काळांमें वचन और पुरुषरै अनुसार रूप-भेद हुवै—सामान्य-भविष्य, संभाव्य-भविष्य, सामान्य-वर्तमान, आज्ञा-भविष्य, आज्ञा-वर्तमान ।

(२२४) नीचे बताया १६ काळांमें वचन और जातिरै अनुसार रूप-भेद हुवै— अपूर्ण-भूत (१) तथा (२), संकेत-भूत, अपूर्ण-संकेत-भूत, सामान्य-भूत, पूर्ण-भूत, आसन्न-भूत, संभाव्य-भूत, संदिग्ध-भूत, पूर्ण-संकेत-भूत ।

(२२५) नीचे बताया दो काळांमें वचन, जाति और पुरुष तीनांरै अनुसार रूप-भेद हुवै—संभाव्य-वर्तमान, संदिग्ध-वर्तमान ।

(२२६) ऊपर बताया प्रत्यय धातुरै आगै जुड़ै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२२७) धातु दो तरांरा हुवै—

(१) व्यंजनान्त, जकांरै अन्त में अनुच्चरित अ हुवै।
जियां—कर उठ चाल वण मान लाभ वैस।

(२) स्वरान्त जकांरै अन्त में अ टाळ-नै दूजा स्वर हुवै। जियां—आ पी सू दे जो।

(२२८) कई धातु स्वरान्त और व्यंजनान्त दोनूं हुवै। जियां—

कै और कह।
रै और रह।
सै और सह।
वै और वह।

(२२९) व्यंजनान्त धातुरै आगै स्वरादि अथवा यकारादि प्रत्यय जुड़ै जद अन्तिम अनुच्चरित अ रो सर्वथा लोप हु ज्यावै; व्यंजनादि प्रत्यय हुवै तो लोप नहीं हुवै—

फिर+इये =फिरिये।
फिर+इयो=फिरियो।
फिर+ये =फिर्ये।
फिर+यो =फिर्यो।
फिर+अै =फिरै।

फिर+तो =फिरतो।
फिर+जे =फिरजे।

(२३०) स्वरान्त धातुरै आगे इकारादि प्रत्यय लागै जद प्रत्ययरै आदि इकाररो लोप हु ज्यावै—

खाये। खाया।
आयो। आया।
लियो। लिया।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२३१) व्यंजनान्त धातुरै आगै इकारादि प्रत्यय लागै जद प्रत्ययरै आदि इकार रो विकलप सूं लोप हुवै—

कर+इये =करिये, करचे
कर+इयो=करियो, करचो ।

(२३२) स्वरान्त धातुरै आगै ईकारादि प्रत्यय आवै जद य रो आगम हुवै जियां—

खा+ईजे=खायीजे
खा+ई =खायी ।

(२३३) धातु ईकारान्त हुवै तो य रो आगम नहीं हुवै, अंतिम ई रो लोप हुवै—

पी+ई =पी (पीवी)
जी+ई =जी (जीवी) ।

(२३४) ईकारान्त ओर ऊकारान्त धातुरो अन्तिम स्वर, स्वरादि प्रत्यय लागणैसूं पूर्व, कदे-कदे ह्रस्व हुज्यावै—

पी+इयो=पियो, पीयो
जी+इयो=जियो, जीयो
सू+इयो=सुयो, सूयो
लू+ई =लुयी, लूयी
जी+ई =जिवी, जीवी ।

(२३५) हू धातुरो स्वर, प्रत्ययलाग्यांसूं पूर्व, नित्य ह्रस्व हुज्यावै—

हू+इये =हुये
हू+इयो=हुयो
हू+ तो=हुतो
हू+ सी=हुसी
हू+ अै=हुवै

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ले और दे इण धातुवाँरै आगै सामान्य-भूतरा प्रत्यय लागै जद अंतिम स्वररी जागां इ या ई हु ज्याव़—

ले+इयो=लियो, लीयो, ली ।

दे+इयो=दियो, दीयो, दी ।

(२३६) आज्ञा-वर्तमान (अनेक-वचन), संभाव्य-भविष्य, सामान्य-भविष्य(२), सामान्य-वर्तमान और अपूर्ण-भूत(१) में स्वरादि धातुरै आगै व-रो आगम हुवै—

आवो, खावै, खावैलो, खावै है, खावै हो इत्यादि ।

अपवाद—अैकारान्त धातुवांमें आगम विकळपसूं हुवै—

कैव—कै, कैवै ।

रैव—रै, रैवै ।

वैव—वै, वैवै ।

(२३७) अैकारान्त धातुरै आगै प्रत्यय लागै जद अै-री जागां विकळपसूं अ, इ, ई हुज्यावै । जियां—

कै—कैयो कयो कियो कीयो ।

रै—रैयो रयो रियो रीयो ।

वै—वैयो वयो वियो वीयो वुवो वूवो ।

(२३८) संकेत-भूत, अपूर्ण-संकेत-भूत, अपूर्ण-भूत, संभाव्य-वर्तमान और संदिग्ध वर्तमानमें स्वरादि धातुमें व रो आगम विकळपसूं हुवै—

आतो	आंवतो ।
जातो हुतो	जांवतो हुतो ।
जातो हुवै	जांवतो हुवै ।
जातो हुसी	जांवतो हुसी ।
जातो हो	जांवतो हो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२३९) संकेत-भूत आदि पांच काळामें कई-अेक स्वरान्त धातुवांरो अंतिम स्वर प्राय: सानुनासिक हु ज्यावै —

आंवतो	आंतो	आतो
पींवतो	पीवतो	पीतो
जींवतो	जीवतो	
सूंवतो	सूवतो	
वैंवतो	वैवतो	
कैंवतो	कैवतो	
लेंवतो	लेवतो	
अपवाद—दूवतो	दूतो	
सूवतो	सूतो	
चूवतो	चूतो	
सेवतो	सेतो	

(२४०) कई क्रियावां संस्कृत और प्राकृतरै भूत-कृदंतांसूं वणियोड़ी है। जियां—

नाठणो	नष्ट	नट्ठ
रूठणो	रुष्ट	रुट्ठ
तूठणो	तुष्ट	तुट्ठ
वूठणो	वृष्ट	वुट्ठ
बैठणो	उपविष्ट	वइट्ठ
लाधणो	लब्ध	लद्ध
लाभणो	लब्ध	लब्भ
ऊभणो	ऊर्ध्व	उब्भ

(२४१) इसी क्रियावांरो सामान्य-भूतकाल वणावणमें, इयो प्रत्यय-रै साथै-साथै, विकळपसूं ओ प्रत्यय भी लागै। ओ प्रत्ययरा रूप विशेष चालै है। जियां—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नाठ	=नाठो	नाठ्यो	नाठियो
रूठ	=रूठो	रूठ्यो	रूठियो
तूठ	=तूठो	तूठ्यो	तूठियो
वूठ	=वूठो	वूठ्यो	वूठियो
बैंठ	=बैंठो	बैंठ्यो	बैंठियो
लाध	=लाधो	लाध्यो	लाधियो
लाभ	=लाभो	लाभ्यो	लाभियो
ऊभ	=ऊभो	ऊभ्यो	ऊभियो
अंठणो =		अंठ्यो	अंठियो ।

(२४२) कई धातव़ांरा भूतकाळ संस्कृत अथव़ा प्राकृतरा कृदन्तांसूं वणियोड़ा है। जियां—

कर	(करियो, कर्‍यो)	कियो	कीनो	कीधो
दे	(दियो)		दीनो	दीधो
ले	(लियो)		लीनो	लीधो
पी	(पियो)			पीधो
जा	(…)	गयो		
वैंव़	(वैंयो-वयो)	वुव़ो		
धाप	(धापियो-धाप्यो)	धायो		
रोव़	(रोयो)		रूनो	
सूव़	(सुयो-सूयो)			सूतो
देख	(देखियो-देख्यो)			दीठो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २८

क्रियारा रूप

कर्तृ-वाच्य

(२४३) व्यंजनान्त धातु फिर

काळ	पुरुष	वचन	
		अेक-वचन	अनेक-वचन
१ आज्ञा-वर्तमान	अ	फिर	फिरो
२ आज्ञा-भविष्य	म	फिरिये फिरचे फिरजे फिरीजे	फिरिया फिरघा फिरजो फिरीजो
३ सामान्य-भविष्य (१)	अ म उ	फिरसी फिरसी फिरसूं	फिरसी फिरसो फिरसां
४ संभाव्य-भविष्य	अ म उ	फिरै फिरै फिरूं	फिरै फिरो फिरां
५ सामान्य-भविष्य (२)	अ म उ	फिरैला फिरैला फिरूंला	फिरैला फिरोला फिरांला
६ सामान्य-वर्तमान	अ म उ	फिरै है फिरै है फिरूं हूँ	फिरै है फिरो हो फिरां हां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

७ अपूर्ण-भूत (१)	न ना	फिरै हो फिरै ही	फिरै हा फिरै ही
८ संकेत-भूत	न ना	फिरतो फिरती	फि.रता फिरती फिरत्यां
९ अपूर्ण-भूत (२)	न ना	फिग्तो हो फिरती ही	फिरता हा फिरती ही फिरत्यां ही
१० अपूर्ण-संकेत भूत	न ना	फिरतो हुतो फिरती हुती	फिरता हुता फिरती हुती फिरत्यां हुत्यां
११ संभाव्य-वर्तमान	अ म उ	फिरतो हुवै ,, हुवै ,, हुवूं	फिरता हुवै ,, हुवो ,, हुवां
	अ म उ	फिरती हुवै ,, हुवै ,, हुवं	फिरती हुवै फिरती हुवो फिरती हुवां
१२ संदिग्ध-वर्तमान	अ म उ	फिरतो हुसी ,, हुसी ,, हुसूं	फिरता हुसी ,, हुसो ,, हुसां
	अ म उ	फिरती हुसी ,, हुसी ,, हुसूं	फिरती हुसी ,, हुसो ,, हुसां
१३ सामान्य-भूत	न ना	फिरियो } फिरचो } फिरी	{ फिरिया { फिरचा फिरी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१४ आसन्न-भूत	न ना	फिरियो है फिरी है	फिरिया है फिरी है
१५ पूर्ण-भूत	न ना	फिरियो हो फिरी ही	फिरिया हा फिरी ही
१६ पूर्ण-संकेत-भूत	न ना	फिरियो हुतो फिरी हुती	फिरिया हुता फिरी हुती
१७ संभाव्य-भूत	न ना	फिरियो हुवै फिरी हुवै	फिरिया हुवै फिरी हुवै
१८ संदिग्ध-भूत	न ना	फिरियो हुसी फिरी हुसी	फिरिया हुसी फिरी हुसी

नोट—सकर्मक क्रियारा रूप भी इणी तरां हुवै ।

(२४४) स्वरान्त धातु खा—

काल	अ	अेकवचन	अनेकवचन
१ आज्ञा-वर्तमान	म	खा	खावो
२ आज्ञा-भविष्य	अ	खाये खाजे खायीजे	खाया खाजो खायीजो
३ सामान्य-भविष्य	अ म उ	खासी ,, खासूं	खासी खासो खासां
४ संभाव्य-भविष्य	अ म उ	खावै ,, खावूं	खावै खावो खावां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

५	सामान्य-भविष्य	अ म उ	खावैला ,, खावूंला	खावैला खावोला खावांला
६	सामान्य-वर्तमान	अ म उ	खावै है ,, खावू हूं	खावै है खावो हो खावां हां
७	अपूर्ण-भूत (१)	न ना	खावै हो खावै ही	खावै हा खावै ही
८	संकेत-भूत	न ना	खांवतो खांवती	खांवता खांवती
९	अपूर्ण-भूत (२)	न ना	खांवतो हो खांवती ही	खांवता हा खांवती ही
१०	अपूर्ण-संकेत-भूत	न ना	खांवतो हुतो खांवती हुती	खांवता हुता खांवती हुती
११	संभाव्य-वर्तमान	अ म उ	खांवतो हुवै ,, हुवै ,, हुवूं	खांवता हुवै ,, हुवो ,, हुवां
१२	संदिग्ध-वर्तमान	अ म उ	खांवती हुवै ,, हुवै ,, हुवू	खांवती हुवै ,, हुवो ,, हुवां
१३	सामान्य-भूत	न ना	खायो खायी	खाया खायी
१४	आसन्न-भूत	न ना	खायो है खायी है	खाया है खायी है

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१५	पूर्ण-भूत	न ना	खायो हो खायी ही	खाया हा खायी ही
१६	पूर्ण-संकेत-भूत	न ना	खायो हुतो खायी हुती	खाया हुता खायी हुती
१७	संभाव्य-वर्तमान	न ना	खायो हुवै खायी हुवै	खाया हुवै खायी हुवै
१८	संदिग्ध-वर्तमान	न ना	खायो हुसी खायी हुसी	खाया हुसी खायी हुसी

(२४५) अकर्मक क्रियारा रूप भी इणी तरां हुवै ।

(२४६) कई-अेक विशेष रूप—

(१) आव धातुरा आज्ञा-वर्तमान अेकवचनरा रूप—
आ, आव ।

(२) जाव धातुरा सामान्य-भूतरा रूप—

गयो	गया
गयी	गयी, गयां ।

(३) अंकारान्त धातुरा बहुत-सा विशेष रूप वणै, इण वास्तै नीचै अंकारान्त धातु रैवणो-रा मुख्य-मुख्य रूप दिरीजै है—

आज्ञा-वर्तमान-अेकवचन	रै	रह
अनेकवचन	रौ रैवो रवो	रहो
आज्ञा-भविष्य	रैये रये रिये रीये	रह्ये रहिये
	रैया रया रिया रीया	रह्या रहिया
सामान्य-भविष्य १	रैसी	रहसी
संभाव्य-भविष्य	रै रैवै रवै	रहै
सामान्य-भविष्य २	रैला रैवैला रवैला	रहैला

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सामान्य-वर्तमान	रै है रैवै है रवै है	रहै है
अपूर्ण-भूत १	रै हो रैवै हो रवै हो	रहै हो
	रै ही रैवै ही रवै ही	रहै ही
संकेत-भूत	रैतो रैंवतो	रहतो
	रैती रैंवती	रहती
सामान्य-भूत	रैयो रयो रियो रीयो	रह्यो रहियो
	रैया रया रिया रीया	रह्या रहिया
	रैयी रयी री*	रही

* इसो रूप केवळ रैव धातुरो वणै; कैव, वैव, सैव आदि दूजी अैकांरान्त धातवांरा नहीं वणै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ २९

कर्मवाच्य और भाव़वाच्य

(२४७) सकर्मक क्रियारो कर्म-वाच्य तथा अकर्मक क्रियारो भाव़-वाच्य हुवै ।

(२४८) कर्मवाच्यमें कर्त्तृवाच्य जिता पूरा रूप हुवै । भाव़वाच्य में हरेक कालमें केव़ळ अेक-अेक रूप हुवै ।

(२४९) कर्मवाच्य और भाव़वाच्य दो तरांरा है—

(१) पुराणा अथव़ा संश्लिष्ट ।

(२) नूंव़ा अथव़ा विश्लिष्ट ।

(२५०) पुराणा कर्मवाच्य और भाव़वाच्य संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंशसूं आया है; नूंव़ा हिंदी आदिरै प्रभाव़सूं हालमें ही प्रयोगमें आव़ण लाग्या है ।

(२५१) संश्लिष्ट कर्मवाच्य अथव़ा भाव़वाच्यरी धातु कर्त्तृवाच्य-री धातुरै आगै ईज प्रत्यय जोड़ियांसूं वणै—

कर	+	ईज	=	करीज	करीजणो
देख	+	ईज	=	देखीज	देखीजणो
जीव़	+	ईज	=	जीव़ीज	जीव़ीजणो
जी	+	ईज	=	जियीज	जियीजणो
आ	+	ईज	=	आयीज	आयीजणो
जा	+	ईज	=	जायीज	जायीजणो
पी	+	ईज	=	पीज	पीजणो
ले	+	ईज	=	लिरीज	लिरीजणो
दे	+	ईज	=	दिरीज	दिरीजणो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२५२) विश्लिष्ट कर्मवाच्य अथवा भाव़वाच्यरी धातु कर्त्तृवाच्यरी धातुरै सामान्य-भूत (या, भूत-कृदन्त)-रै रूपरै आगै जाव़ धातु जोड़ियां-सूं व़णै—

कर	=	करियो जाव़ (करियो जाव़णो)
देख	=	देखियो जाव़
पा	=	पायो जाव़
आ	=	आयो जाव़
जा	=	जायो जाव़ / गयो जाव़
पी	=	पीयो जाव़, पियो जाव़
जी	=	जीयो जाव़ जियो जाव
ले	=	लियो जाव़
दे	=	दियो जाव़
रै	=	रैयो जाव़, रियो जाव ।

(२५३) कर्मवाच्य और भाव़वाच्य दोनांमें काळांरा प्रत्यय कर्त्तृ-वाच्यरै समान ही-ज है। केव़ळ भाव़वाच्यमें हरेक काळमें अेक-अेक रूप, अन्य-पुरुष अेकवचन नर-जातिरो ही-ज, वणै—

(२५४) नीचे कर्मवाच्य और भावाच्यरा रूप दिया है—

	(क) कर्मवाच्य कर धातु		(ख) भाव़वाच्य आ धातु
आज्ञा-वर्तमान	करीज	करीजो	..
आज्ञा-भव़िष्य	करीज्ये करीजिये करीजजे	करीज्या करीजिया करीजजो	..
सामान्य-भव़िष्य (१)	करीजसी करीजसी करीजसूं	करीजसो करीजसो करीजसां	आयीजसी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संभाव्य-भविष्य	करीजै करीजै करीजूं	करीजै करीजो करीजां	आयीजै
सामान्य-भविष्य (२)	करीजैला	करीजैला	आयीजैला
सा० वर्तमान	करीजै है	करीजै है	आयीजै है
अपूर्ण-भूत (१)	करीजै हो करीजै ही	करीजै हा करीजै ही	आयीजै हो
संकेत-भूत	करीजतो करीजती	करीजता करीजती	आयीजतो
अपूर्ण-भूत (२)	करीजतो हो करीजती ही	करीजता हा करीजती ही.	आयीजतो हो
अपूर्ण-संकेत-भूत	करोजतो हुतो करीजती हुती	करीजता हुता करीजती हुती	आयीजतो हुतो
संभाव्य-वर्तमान	करीजतो हुवै करीजती हुवै	करीजता हुवै करीजती हुवै	आयीजतो हुवै
संदिग्ध-वर्तमान	करीजतो हुसी करीजती हुसी	करीजता हुसी करीजती हुसी	आयीजतो हुसी
सामान्य-भूत	करीजियो करीजी	करीजिया करीजी	आयीजियो
आसन्न-भूत	करीजियो है करीजी है	करीजिया है करीजी है	आयीजियो है
पूर्ण-भूत	करीजियो हो करीजी ही	करीजिया हा करीजी ही	आयीजियो हो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पूर्ण-संकेत-भूत	करीजियो हुतो करीजी हुती	करीजिया हुता करीजी हुती	आयीजियो हुतो
संभाव्य-भूत	करीजियो हुवै करीजी हुवै	करीजिया हुवै करीजी हुवै	आयीजियो हुवै
संदिग्ध-भूत	करीजियो हुसी करीजी हुसी		आयीजियो हुसी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३०

क्रियारो पद-परिचय

(२५५) क्रियारै पद-परिचयमें नीचे वतायी वातां वतायीजै—

(१) भेद (अकर्मक, सकर्मक)

(२) वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)

(३) प्रयोग (कर्तरि-प्रयोग, कर्मणि-प्रयोग, भावे-प्रयोग)

(४) अर्थ (निश्चयार्थ, संभावनार्थ, संदेहार्थ, संकेतार्थ, आज्ञार्थ)

(५) काळ (भूत—सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण, आसन्न, संभाव्य, संदिग्ध, संकेत, अपूर्णसंकेत, पूर्ण-संकेत;
वर्तमान—सामान्य, संभाव्य, संदिग्ध, आज्ञा-वर्तमान;
भविष्य—सामान्य, संभाव्य, आज्ञा-भविष्य)।

(६) वचन (अेक-वचन, अनेक-वचन)

(७) जाति (नर-जाति, नारी-जाति)

(८) पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य)

(९) संबंध (इणरो कर्ता फलाणो, कर्म फलाणो, पूरक फलाणो है)।

(२५६) उदाहरण—

(१)

महाराज कंदोईरी पुकार सुण उण दोनूं ठगांनै बुलाया ।

सुण —क्रिया, सकर्मक, कतृ वाच्य, पूर्वकाळिक कृदंत, इणरो कर्ता महाराज, कर्म पुकार तथा समापिका क्रिया बुलाया है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बुलाया —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भूत, नर-जाति, अनेकवचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता महाराज तथा कर्म ठगांनै है ।

(२)

कागदरै ऊपर जो श्री लिखीजै है उणनै श्रीकार कंवै है ।

लिखीजै है—क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-वर्तमान-काळ, नारी-जाति, अनेकवचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्म श्री है ।

कंवै है —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्त्तरि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-वर्तमान काळ, नर-जाति, अनेक-वचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता अध्याहृत है ।

(३)

इणमें विचारणरी वात आ है कै कोई आदमी आपसूं कित्तोई हळको हुवै उणनै तुच्छ समझनै उणरो अनादर नहीं करणो ।

है —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-वर्तमान, नारी-जाति, अेक-वचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता आ तथा पूरक वात है ।

हुवै —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, संभावनार्थ, संभाव्य-भविष्य, नर-जाति, अेकवचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता आदमी है ।

करणो —विधि-कृदन्त, सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य कर्तरिप्रयोग, नर-जाति, अेकवचन, इणरो कर्म अनादर है ।

(३)

जद माछर नाकसूं वारै निकळ उण सांडनै कयो—देखियो ? अब आगैसूं कदेई अैड़ो अहंकर मत करजे, नहीं तो फेर इणसूं वत्ती वीतैला ।

निकळ —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, निश्चयार्थ, पूर्वकाळिक कृदंत, इणरो कर्ता माछर है, समापिका क्रिया कयो है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कयो —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भूत, अेक-वचन, नर-जाति, अन्य-पुरुष, इणरो कर्ता माछर है, कर्म अध्याहृत है ।

देखियो —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भूत, अेकवचन, नर-जाति, अन्य-पुरुष, इणरो कर्ता तैं अध्याहृत है, कर्म अध्याहृत है ।

करजे —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, आज्ञार्थ, आज्ञा-भविष्य-काळ, अेक-वचन, नर-जाति, मध्यम-पुरुष, इणरो कर्ता तूं अध्याहृत है ।

वीतैला —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भविष्य काळ, अेकवचन, नारी-जाति, अन्य-पुरुष, इणरो कर्ता अध्याहृत है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३१

अव्यय

(२५७) जिण शब्दमें रूपान्तर नहीं हुवै वो अव्यय ।

संज्ञा में जाति, वचन और विभक्तियांरै कारण रूपान्तर हुवै अर्थात कई तरांरा रूप वणै; इणी भांत क्रियामें वाच्य, प्रयोग, अर्थ, काळ, वचन, जाति, पुरुष-रा घणा-सारा रूप-भेद हुवै; पण अव्ययमें किणी तरांरो रूप-भेद नहीं हुवै, अेक ही-ज रूप सदा काममें आवै ।

(२५८) कई-अेक विशेषण क्रियाविशेषणांरी भांति वापरीजै; उणांमें वचन और जातिरो भेद पायीजै ।

(२५९) अव्ययरा चार भेद हुवै—

(१) क्रियाविशेषण—जको क्रियारी कोई विशेषता वतावै ।

(२) नामयोगी—जको संज्ञारै साथै जुड़नै क्रियाविशेषणरो काम करै ।

(३) संयोजक—जको दो वाक्यांनै, अथवा कदे-कदे दो शब्दांनै, जोड़ै ।

(३) केवळ-प्रयोगी—जिणरो संवंध वाक्यरा दूसरा शब्दांसूं नहीं हुवै और जो मनरा हरख, सोक वगैरा भावनै सूचित करै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३२

क्रियाविशेषण

(२६०) क्रियारी कोई विशेषता बतावै जका शब्द क्रियाविशेषण कहीजै । जियां—

(१) विद्यार्थी धीरै चालै है ।

अठै धीरै शब्द चालै क्रियारी विशेषता बतावै । कियां चालै है ? धीरै चालै है ।

(२) राजा काल दिल्ली गयो ।

अठै काल शब्द गयो क्रिया-रो काळ (समै) बतावै ।

(३) तैं कम खायो ।

अठै कम शब्द खायो क्रियारो परिमाण बतावै ।

(४) पाणी जरूर आसी ।

अठै जरूर शब्द आसी क्रियारै हुवणरो निश्चय बतावै ।

(५) फूल कोनी तोड़िया ।

अठै कोनी शब्द तोड़िया क्रिया नहीं हुई आ बात बतावै ।

(२६१) कई क्रियाविशेषण विशेषण अथवा दूजा क्रियाविशेषणरी विशेषता बतावै ।

(१) शरबत कमती मीठो है ।
(२) चोररी बात साव (वा, समूंची) झूठी है ।
(३) घोड़ो घणो धीमै चालै है ।

(२६२) कई विशेषण क्रियाविशेषण जियां वापरीजै ।

(१) बाबो धीमो चालै ।
(२) घोड़ो घणो तेज भागै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३) मैं आज थोड़ो खायो ।

(४) तूं मोड़ो आयो ।

(५) हूं वेगी उठसूं ।

(६) काम वेगो करजे ।

(२६३) क्रियाविशेषण जियां वापरीजै जका विशेषणां में कदे-कदे जाति और वचनरा रूपान्तर पायीजै—

(१) घोड़ो धीमो चालै ।
घोड़ी धीमी चालै ।
घोड़ा धीमा चालै ।

(२) छोकरो मोड़ो आयो ।
छोकरी मोड़ी आयी ।
छोकरा मोड़ा आया ।

(२६४) कई क्रियाविशेषण संज्ञारी विभक्तियांसूं वणियोड़ा हुवै । जियां —

घरे, राते, हाथै, आपै, असलमें ।

(२६५) नामयोगी अव्यय आपरी संज्ञारै साथै मिलनै क्रियाविशेषण-रो काम करै—

घरसूं दूर ।	घररै ऊपर ।
घररै विना ।	घररी दाई ।
घर ताईं ।	पोथी सूधो ।
विद्यारै वास्तै ।	सिर माथै ।

(२६६) कई क्रियाविशेषण संज्ञारी दाई काम आवै । उणांमें विभक्ति-रो रूपान्तर हुवै । जियां—

अठैसूं, अठैरो, परसूंसूं ।

(२६७) कई क्रियाविशेषण सर्वनामांसूं संबंध राखै—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सर्वनाम—	ओ	ऊ	कुण	जो	तो	वो
स्थानवाचक—	अठै	उठै	कठै	जठै	तठै	वठै
	ऐथियै	ओथियै	केथियै	जेथियै	...	...
	इथिये	उथिये	किथिये	जिथिये	...	...
	इथै	उथै	किथै	जिथै	...	...
		ओड़ै	कोड़ै	...	...	...
	अठीनै	उठीनै	कठीनै	जठीनै	तठीनै	वठीनै
	ईंनै	ऊंनै	कींनै	जींनै	...	वींनै
काळवाचक—	अब		कद	जद	तद	...
	अबै		कदे	जदे	तदे	...
			कदेई	जदेई	...	...
	हरां		करां	जरां	तरां	...
	हणां		कणां	जणां	...	...
	हणै		कणै	जणै	...	...
	हमार		...	...	...	...
	अबार		...	...	...	...
रीतिवाचक—	इयां		कियां	जियां	तियां	वियां
	इयांन		कियांन	जियांन	तियांन	वियांन
	यूं		क्यूं	ज्यूं	त्यूं	...
	यों		क्यों	ज्यों	त्यो	...
	...		क्यूंकर	...	...	...
	...		क्योंकर	...	...	...
	...		कींकर	...	...	...

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३३

क्रियाविशेषणरा भेद

(२६८) क्रियाविशेषणरा ४ भेद हुवै—(१) स्थानवाचक (२) काळवाचक (३) परिमाणवाचक (४) रीतिवाचक।

(२६९) स्थानवाचक क्रियारै हुवणरो स्थान वतावै—

आगै अगाड़ी पछै पाछै लारै लार लारोलार; ऊपर नीचै तळै हेठै; सामनै सनमुख वार बारै मांय भीतर; पास कनै नेड़ो निकट समीप नजीक उरो परो दूर आघो कड़खै; सर्वत्र अन्यत्र; कठै अठै उठै वठै वठै जठै तठै इत्यादि।

(२७०) काळवाचक क्रियारै हुवणरो समय वतावै—

आज काल तड़कै दिनूंगै सवेरै परसूं पैरूं; तरसूं नरसूं पैलै-दिन परलै-दिन ता-परलै-दिन आजकाल; अैस पर परार ता-परार पर-ता-परार; पैली पैलां पछै पाछै वादमें फेर फेरूं;तुरंत वेगो जळदी झटपट झट झटाझट मोड़ो; प्रथम परथम आखर अंतमें निदान लगातार लगोलग लगोलगी निरंतर सदा सर्वदा हमेशा नित रोज रोजीना रोजीनै नित्य-प्रति वारवार वरावर रोज-रोज कदे-कदे अकसर वहुधा प्राय: प्रायकर घड़ी-घड़ी घणोकर; छेवट सेवट; दिन-दिन, रातूं-रात, रात्यूं, दिन-ऊग्यां इत्यादि।

(२७१) परिमाणवाचक विशेपण अथवा दूजै क्रियाविशेषणरो परिमाण वतावै—

घणो बोत निरो थोड़ो कम कमती वेसी वत्तो अधिक ज्यादा थोड़ो-थोड़ो थोड़ो-घणो कम-वेसी बिलकुल जावक निरो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कोरो खाली मात्र केवळ सिरफ घणो काफी खूब गैरो निपट अत्यंत अति अतिशय कुछ कीं लगभग अंदाजन अंदाज आसरै ढुकेक प्राय जरा किंचित घणकरो सगळो सँग समूंधो साव निरार चिनियो-सो ।

(२७२) रीतिवाचक क्रियारै हुवणरी रीति वतावै—

इयां कियां जियां तियां वियां यूं क्यूं ज्यूं त्यूं;इयांन कियांन जियांन तियांन वियांन जियां-तियां जियां-जियां वियां-वियां; ज्यूं-ज्यूं त्यूं-त्यूं ज्यूं-त्यूं; क्यूंकर जथा-तथा कियांई इयांई वियांई क्यूंई, कींकरई; अचानक अनायास औचक अकस्मात अचानचक; व्रथा व्यर्थ विरथा फालतू यूंई सैंत-मैंत अहलो अहळो फाऊ फाहू; होळै धीरै धीमै तेज आकरो आखतो खाथो पैदल पाळो; सैज मोरै-सांस; परसपर आपसमें मांय-मांय मांहोमांय मोहमायामें घर-घरमें; साक्षात साख्यात प्रत्यक्ष परतक; मन-मनमें अैकै-साथै अेकै-समचै; जथाशक्ति जथाजुगत-खड़ाखड़ी ऊभाऊभ; फटाफट चटाचट सटासट गटागट वटावट पटापट कटाकट खटाखट; तड़ातड़ भड़ाभड़ दड़ादड़ सड़ासड़ फड़ाफड़ चड़ाचड़ धड़ाधड़; निसचै अवश्य जरूर साचैई साचण साचल साचांणी अवस अवसकर; वेसक निस्संदेह अलवत अलबत्तै खासकर विशेषकर विशेषत: वस्तुत: वास्तवमें दरअसल असलमें; कदाचित कदास कदाच स्यात शायद घणोकर; इणवास्तै अत: अतअेव; ना नहीं मत कोनी कोयनी कोयनहीं; देखतां करतां; उठायां लियां लियां-थकां; क्यों ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३४

नाम-योगी

(२७३) नाम-योगी संज्ञारै साथै आवै।

(२७४) घणकरा नाम-योगी क्रियाविशेषण है। अै संज्ञारै साथै आवै जद नामयोगी वाजै, अेकला आवै जद क्रियाविशेषण हुवै।

(२७५) घणकरा नाम-योगी छठी विभक्तिरै आगै आवै पण कई नाम-योगी तीसरी विभक्तिरै, कई दूसरीरै, कई पाँचवींरै और कई इणां मांयसूं दोनां अथवा तीनांरै आगै भी आवै—

घोड़ारै ऊपर, घोड़ारै लारै, घोड़ारै आगै।
घोड़ा ऊपर, घोड़ा लारै, घोड़ा आगै।
घोड़ै ऊपर, घोड़ै लारै, घोड़ै आगै।
घोड़ासूं आगै।

(२७६) कदे-कदे नामयोगी संज्ञारै पैली भी आवै—

म्हारै विना, विना म्हारै।

(२७७) नामयोगी शब्द अै है—

काळवाचक —पैली, पैलां, आगै, अगाड़ी, पूर्वै, पछै, पाछै, अनंतर, उपरांत।

स्थानवाचक —ऊपर, माथै, मालै, नीचै, तळै, हेठै, आगै, सामनै, सनमुख, समक्ष, लारै, लार, मांय, भीतर, विसै, वारै, वार, वायर, कनै, नजीक, नजदीक, पास, निकट, नेड़ै, समीप, आसपास, अैड़ैगैड़ै, करीब, पाखती, जोड़ै, सारै।

दिशावाचक —कानी, ओर, तरफ, दिसै, दिसां, दीस्यां, दीसियां, प्रति, किनारै, परै।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सहचारवाचक —साथै, सागै, साथ, संग, पाखती, जोड़ै, समेत, सहित, सूधो, बरोबर ।

साधनवाचक —द्वारा, जरियै, मारफत ।

सादृश्यवाचक —समान, दाई, नांई, जियां, जैड़ो ।

कार्य-कारणवाचक —लियै, वासतै, खातर, सारू, निमत, निमित्त, अर्थ, काज, कारणै, कारण, वैई, वगै ।

भिन्नतावाचक —सिवाय, अलावै, अतिरिक्त, विना, वगैर, रहित, पाखै, टाळ, विगर ।

तुलनावाचक —अपेक्षा, बनिस्बत, आगै, करतां ।

विषयवाचक —विसै, बाबत, निस्बत, लेखै, माथै, मढ़ै, मद्दै ।

विनिमयवाचक —बदळै, जाग्यां, जगां, पळटै, ठौड़ ।

विरोधवाचक —विरुद्ध, खिलाफ, विपरीत, प्रतिकूळ ।

सीमावाचक —तक, तांई, ताणी, तलक, तोड़ी, परजंत, पर्यन्त ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३५

संयोजक अव्यय

(२७८) दो वाक्यांनै, अथवा दो शब्दांनै, मिलावै जको शब्द संयोजक अव्यय कहीजै।

(१) राम **और** लक्ष्मण भाई हा।

(२) राजू परीक्षा दी **पण** पास कोनी हुयो।

(२७९) संयोजकरा दो भेद हुवै।

(१) व्यधिकरण (२) समानाधिकरण।

(२८०) व्यधिकरण अेक मुख्य और अेक आश्रित उपवाक्यनै जोड़ै। व्यधिकरण संयोजक अै है—

(१) कारणवाचक —क्यूं, कै, कारण, इण वास्तै, कै।

(२) उद्देशवाचक —जो, कै, जिणसूं, ज्यूं।

(३) संकेतवाचक —कै, तो, तो भी, तथापि, पण, परन्तु, पर।

(४) स्वरूपवाचक —कै (क, अक), जे, जो; अर्थात, यानी, मानो, जाणै।

(२८१) समानाधिकरण दो बराबरा, परस्पर अनाश्रित, उपवाक्यांनै जोड़ै। समानाधिकरण संयोजक अै है——

(१) योग-सूचक—और, अर, नै, तथा, अेवं।

(२) विकळप-सूचक—या, अथवा, वा, कै, का; नहींतो, नहिंतर, नींतर, अन्यथा।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३) विरोध-सूचक—पण, पर, परंतु, किंतु, लेकिन, वरंच वरना ।

(४) परिणाम-सूचक—अतएव, इणवास्तै, सो ।

(२८२) संबंधवाचक सर्वनाम, सार्वनामिक विशेषण तथा सार्वनामिक क्रियाविशेषण भी संयोजक अव्ययरो काम करै—

जो, जको, जिसो, जितरो, जित्तो, जेहड़ो; जठै, जद, जियां, ज्यूं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३६

केवळ-प्रयोगी अव्यय

(२८३) केवळ-प्रयोगी अव्ययांरो वाक्यमें दूसरा किणी शब्दसूं संबंध नहीं हुवै।

(२८४) घणकरा केवळ-प्रयोगी सोग, हरख आदि मनोभावांरा सूचक हुवै—

(१) ओहो ! कद आया ?

(२) हाय ईश्वर !

(३) हाय ! घणो दुख पायो।

(२८५) संज्ञारो संबोधन कारक भी केवळ-प्रयोगी ही-ज है—

राम ! तूं अठै आ।

(२८६) मुख्य-मुख्य केवळ-प्रयोगी नीचै दिया है—

विस्मय-सूचक —अरे ! ओहो ! हो ३ ! हैं ३ ! भला !

प्रशंसा-सूचक —वाह-वाह ! धन्य-धन्य ! धिन-धिन ! सावास ! खूब ! रंग है !

हर्ष-सूचक —ओहो ! आहा ! हाः हाः !

शोक-सूचक —अरे ! हाय ! ओः ! आह ! ओय ! ओय रे ! ओ राम ! अे मा ! हे राम !

घृणा-सूचक —छी छी ! हाय-हाय ! राम-राम ! शिव-शिव ! थू ! थू-थू !

अनादर-सूचक —हट् ! हत् ! हुस्त ! दुर ! फिट ! फोट !

प्रतिबंध-सूचक —हैं-हैं ! चुप ! भला !

संबोधन-सूचक —हे, ओ, अे, अरे, रे, अजी, जी, क्यों ! लो ! लै ! अलै !

स्वीकार-सूचक —जी, जी हां, हां, हां सा ! ठीक, भलो, आछो, हुकम, अस्तु।

निषेध-सूचक —बस ! मत ! ना ! ऊंहूं ! अंहै !

विवशता-सूचक —अस्तु, खैर, आछो, भलां ही, थे जाणो।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३७

अव्ययरो पद-परिचय

(२८७) अव्ययरै पद-परिचयमें अै वातां वतावणी—

१ क्रियाविशेषण अव्यय—

(१) भेद (स्थानवाचक, काळवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक)

(२) संवंध (किसी क्रिया, अथवा विशेषण, अथवा क्रियाविशेषणरी विशेषता वतावै)।

२ नामयोगी अव्यय—

(१) संवंध (किसी संज्ञासूं संवंध राखै)।

३ संयोजक—

(१) भेद (समानाधिकरण, व्यधिकरण)

(२) संवंध (किसा-किसा शव्दां अथवा उपवाक्यांनै मिलावै)।

४ केवळ-प्रयोगी—

(केवळ शव्दभेदरो नांव वतायीजै)।

(२८८) उदाहरण—

१ राजा अौर राणी किलारै वारै आया।

२ पूजारै वास्तै फूल लावो।

३ ओहो! किसोक फूटरो रूप है!

४ हे राजन्! ब्रह्मचारी द्वार माथै ऊभा है।

५ नौकर घणो मोड़ो आयो।

६ परसूं गुरूजी अठै आवैला।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

७ सिंघ कही कै ओ वन म्हारो है ।

८ वरसै जठै ऊगै ।

और —अव्यय, समानाधिकरण संयोजक, राजा और राणी इण दो नामांनै जोड़ै ।

वारै —नामयोगी अव्यय, किला संज्ञासूं अन्वित ।

वास्तै —नामयोगी अव्यय, पूजा संज्ञासूं अन्वित ।

ओहो !—केवळ-प्रयोगी अव्यय, हर्ष सूचित करै ।

हे —केवळ-प्रयोगी अव्यय, संवोधन सूचित करै ।

माथै —नामयोगी अव्यय, द्वार संज्ञासूं अन्वित ।

घणो —अव्यय, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, मोड़ो क्रियाविशेषणरी विशेषता वतावै ।

मोड़ो —अव्यय, रीतिवाचक क्रियाविशेषण, आयो क्रियारी विशेषता वतावै ।

परसूं —अव्यय, काळवाचक क्रियाविशेषण, आवैला क्रियारी विशेषता वतावै ।

अठै —अव्यय, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, आवैला क्रियारी विशेषता वतावै ।

कै —अव्यय, व्यधिकरण संयोजक, दो उपवाक्यांनै जोड़ै ।

जठै —अव्यय, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, संयोजकरी भांति प्रयुक्त, ऊगै क्रियारी विशेषता वतावै, तथा दो उपवाक्यांनै जोड़ै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३८

शब्द-साधना

(२८९) नया शब्द च्यार तरांसूं बणायीजै—

(क) शब्दरै मांय स्वररो परिवर्त्तन करनै—

मरणो	—	मारणो
निकळनो	—	निकाळनो
फिरणो	—	फेरणो
मुड़नो	—	मोड़नो
छूटणो	—	छोडणो
विकणो	—	वेचणो

(ख) शब्दरै पैली उपसर्ग जोड़नै—

जाण	—	अणजाण
डर	—	निडर
ज्ञान	—	अज्ञान
बळ	—	दुर्बळ

(ग) शब्दरै आगै परसर्ग अथवा प्रत्यय जोड़नै—

चढ	—	चढाई
मीठो	—	मिठास
कवि	—	कविता
सुख	—	सुखियो
भण	—	भणियोड़ो

(घ) शब्दरै आगै दूसरो शब्द जोड़नै—

मा-वाप	राज-दरवार	देशभक्ति
लंवोदर	कन-फटो	आठानी ।

(ङ) शब्दरी पुनरुक्ति करनै—

रोम-रोम, लारै-लारै, वारंवार, कोरम-कोर,
फेर-फार, वात-चीत, पूछ-ताछ, गटर-पटर ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ३६

स्वर-विकार

(२६०) स्वर-विकारसूं नीचे बताया शब्द बणायीजै—

(क) अकर्मकसूं सकर्मक क्रिया

(ख) नामसूं विशेषण

(ग) नामसूं अपत्य-वाचक नाम ।

(२६१) नामसूं विशेषण बणावणो हुवै जद नामरै पैलड़ै स्वररी वृद्धि कर देवै अर्थात अ-रो आ, इ-ई-रो अै, उ-ऊ-रो औ तथा ऋ रो आर् कर देवै जियां—

नगर	—	नागर
क्षत्र	—	क्षात्र
अर्थ	—	आर्थ
तरंग	—	तारंग
कपोत	—	कापोत
पर्वत	—	पार्वत
ग्रीष्म	—	ग्रैष्म
पुर	—	पौर
सूर	—	सौर
मुंज	—	मौंज
ऋषि	—	आर्ष ।

(२६२) नामसूं अपत्य-वाचक नाम बणावणो हुवै जणां भी नाम-रै पैलड़ै स्वररी वृद्धि करीजै । जियां—

पुत्र	—	पौत्र
वसुदेव	—	वासुदेव ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२९३) अकर्मकसूं सकर्मक क्रिया वणावै जद धातुरै उपान्त्य स्वररो गुण करीजै अर्थात अ-रो आ, इ-ई-रो अे, और उ-ऊ-रो ओ हुवै । जियां —

अंजणो	आंजणो	पिटणो	पीटणो
उखड़नो	उखाड़नो	पिसणो	पीसणो
उपड़नो	उपाड़नो	पुंछणो	पोंछणो
कटणो	काटणो		पूंछणो
खिरणो	खेरणो	फिरणो	फेरणो
खुभणो	खोभणो	फुरणो	फोरणो
खुलणो	खोलणो	बंधणो	बांधणो
खुसणो	खोसणो	वळनो	वाळनो
गडणो	गाडणो	भिड़नो	भेड़नो
गळनो	गाळनो	भुरणो	भोरणो
गिरणो	गेरणो	मरणो	मारणो
घिरणो	घेरणो	मिलणो	मेलणो
चलणो	चालणो	मिळनो	मेळनो
चिरणो	चीरणो	मुड़नो	मोड़नो
चुभणो	चोभणो	रळनो	राळनो
छणनो	छाणनो	रुळनो	रोळनो
जमणो	जामणो	रुड़नो	रोड़नो
जुड़नो	जोड़नो	रुकणो	रोकणो
डटणो	डाटणो	लदणो	लादणो
डूवणो	डोवणो	लिटणो	लेटणो
तुलणो	तोलणो	लुटणो	लोटणो
दवणो	दावणो	लुंटणो	लूंटणो
दुड़नो	दोड़नो	वंचणो	वांचणो
धरणो	धारणो	वड़नो	वाड़नो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धुपणो	धोव़णो	वळनो	वाळनो
निकळनो	निकाळनो	वसणो	वासणो
निमणो	नामणो	विखरणो	विखेरणो
निव़ड़नो	निव़ेड़नो	विगड़नो	विगाड़नो
पटणो	पाटणो	विचरणो	विचारणो
पड़नो	पाड़नो	संभळनो	संभाळनो
पळनो	पाळनो	सूखणो	सोखणो

(२९४) धातुरैं अंत में ट हुवै़ तो उणरो ड या ड़ हुव्यावै़—

छूटणो	छोडणो
तूटणो	तोड़नो
फूटणो	फोड़नो ।

(२९५) कई रूप अनियमित-सा हुवै़—

निव़ड़नो	निवे़ड़नो	विकणो	वेचणो
विखरणो	विखेरणो	रैव़णो	राखणो
निमणो	नामणो	पीव़णो	पाव़णो }
धुपणो	धोव़णो		पियाव़णो }
पुंछणो	पूंछणो		प्याव़णो }

पाठ ४०

उपसर्ग

(२६६) उपसर्ग शब्दरै पैली जुड़ै ।

(२६७) राजस्थानीमें दो तरांरा उपसर्ग है—(१) संस्कृतरा, (२) देशी ।

(२६८) संस्कृतरा उपसर्ग इण भांत है--

१ अति—अतिकाळ, अतिरिक्त, अतिसै, अत्यन्त, अत्याचार, अत्युक्ति ।

२ अधि – अधिकार, अधिपति, अधिराज, अधिष्टाता, अध्यात्म ।

३ अनु —अनुकरण, अनुक्रम, अनुग्रह, अनुचर, अनुज, अनुभव, अनुरूप ।

४ अप —अपकीर्त्ति, अपमान, अपराध, अपशकुन, अपशब्द, अपहरण ।

५ अपि—अपिधान ।

६ अभि—अभिज्ञ, अभिप्राय, अभिमान, अभ्यागत, अभ्यास, अभ्युदय ।

७ अव —अवगुण, अवतार, अवनति, अवलोकन, अवसाण, अवस्था ।

८ आ —आकार, आगमन, आचरण, आजन्म, आदान ।

९ उत् —उत्कंठा, उत्तम, उद्देश, उदयोग, उन्नति, उत्पन्न, उल्लेख, उत्साह ।

१० उप —उपकंठ, उपकार, उपदेश, उपनाम, उपनेत्र, उपमंत्री, उपवन ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

११ दुर् —दुराचार, दुर्गुण, दुर्जन, दुष्कर, दुष्कर्म, दुस्सह, दुःख।

१२ नि —निकृष्ट, निदान, निपात, निबंध, नियुक्त, निवास।

१३ निर्—निराकार, निर्दोष, निश्चळ, निष्कारण, निस्सहाय, नीरस।

१४ परा —पराक्रम, पराजय, परामर्श, परावर्तन।

१५ परि —परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण, परिवर्तन।

१६ प्र —प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रताप, प्रभात, प्रदेश, प्रस्थान।

१७ प्रति —प्रतिकूळ, प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिरूप, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष।

१८ वि —विकास, विचार, विज्ञान, विदेश, विदेह, वियोग, विस्मरण, विहार।

१९ सम् —संगम, संग्रह, संतोष, संयोग, संमान, संहार।

२० सु —सुगम, सुजन, सुदूर, सुप्रभात, स्वागत।

(२९९) नीचे वताया उपसर्ग संस्कृतमें उपसर्ग नहीं कहीजै पण उपसर्गरी भांति-हीज वापरीजै। राजस्थानीमें अै सारा उपसर्ग है—

२१ कु —कुकर्म, कुपुरुष, कुरूप।

२२ कत् —कदाचार, कदन्न।

२३ का —कापुरुष।

२४ स —सजातीय, सजीव, सफळ, सपत्नी।

२५ अ —अज्ञान, अधर्म, अनीति, असावधान।

२६ अन् —अनाधार, अनिष्ट, अनेक, अनादि, अनुत्पन्न।

२७ न —नास्तिक।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३००) राजस्थानीमें इण उपसर्गांरो रूप नीचै बतायै मुजब बदळ ज्यावै—

अधि =इध —इधकारी
अध —अधकारी
अनु =उणि —उणिहारो
अभि =अभ —अभमानी
=इभ —इभमानी
अव =औ —औगण
ओ —ओगण
दुर् =दुर —दुरगुण, दुरजण
निर् =निर —निरधण
नि —निरोगो, निसंक, निबळ
परा =प्रा —प्राक्रम
परि =पर —परकमा
प्र =पर, पड़—परकास, परबळ, परळै, पड़पोतो।
प्रति =पड़ —पड़कमणा
अ =अण —अणपार
स =सैं —सैंजोड़ै।

(३०१) देशी उपसर्ग—

अ —अचेत, अजाण, अमाप, अलख, अनीत।
अण —अणचेत, अणजाण, अणभण, अणपढ, अणमोल, अणूंतो, अणहूंतो।
गुण —गुणतीस, गुणचास, गुणियासी।
उगण—उगणीस, उगणतीस, उगणचास।
औ —औघट, औसर।
गैर—गैर-वाजवी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jin Gun Aaradhak Trust

दु —दुकाळ, दुवळो, दुहाग ।

दू —दूवळो ।

ना —नाउम्मेदी, नालायक ।

बा —बाजाब्ता, बाकायदे ।

बे —बेईमान, बेसक ।

हर —हरेक, हर-घड़ी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४१

प्रत्यय

(३७२) प्रत्यय दो प्रकाररा हुवै—

(१) जका रूप वणावै, (२) जका नया शब्द वणावै ।

(३०३) रूप वणावै जका प्रत्ययांरा दो प्रकार हुवै—

(१) तिङ्-प्रत्यय—जका धातवांरै आगै लागै और काळांरा रूप वणावै ।

(२) विभक्ति-प्रत्यय—जका संज्ञा (अथवा संज्ञारी भाँति प्रयुक्त अव्ययां) रै आगै लागै और विभक्तियांरा रूप वणावै (अनेकवचनरा प्रत्यय विभक्ति-प्रत्ययांरै अंतर्गत हुवै) ।

(३०४) नया शब्द वणावै जका प्रत्यय तीन प्रकाररा हुवै—

(१) धातु प्रत्यय—जका नयी धातुवां वणावै । जियां—

पढ+ईज	=पढीज	(पढीजणो)
कर+ईज	=करीज	(करीजणो)
उठ+आव	=उठाव	(उठावणो)
चढ+वाव	=चढवाव	(चढवावणो)
स्वीकार+अ	=स्वीकार	(स्वीकारणो)
पत्थर+ईज	=पथरीज	(पथरीजणो)
चक्कर+ईज	=चकरीज	(चकरीजणो)
लाड+आव	=लडाव	(लडावणो)

(२) कृत्-प्रत्यय—जका धातवांरै आगै लागै और संज्ञा या

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अव्यय शब्द वणावै । कृत्-प्रत्ययसूं वणियोड़ै शब्दनै कृदन्त कैवै । जियां--

ओढ + णी=ओढणी

सीड़ + आई=सिड़ाई

मार + अ=मार

उतार + ऊ=उतारू

कमा + ऊ=कमाऊ ।

(३) तद्धित प्रत्यय—जका कृदन्तांरै अथवा संज्ञा वा अव्यय शब्दांरै आगै लागै और नया संज्ञा-शब्द वणावै । जियां—

भूख + ओ=भूखो

चूंडो + वत=चूंडावत

भलो + आई=भलाई

सम + ता=समता

मधुर + य=माधुर्य

चौधरी + अण=चौधरण

ईनै + लो=ईनलो ।

(३०५) तिङ् और विभक्ति प्रत्ययांरो वर्णन ऊपर हो चूको है । नया शब्द वणावण-वाळा प्रत्ययांरो वर्णन आगै करीजै है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४२

शब्द-साधक प्रत्यय

(क) धातु-प्रत्यय

(३०६) धातु-प्रत्यय धातवां अथवा संज्ञावांरै आगै लागै और नयी धातवां वणावै। इणांरा मुख्य प्रकार अै है—

(१) जका अकर्मक अथवा सकर्मकसूं अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक अथवा प्रेरणार्थक धातु वणावै।

(२) जका कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यरी धातवां वणावै।

(३) जका नाम-धातु वणावै।

(१) प्रथम प्रकार

(३०७) अकर्मकसूं अकर्मक—इण में आव प्रत्यय लागै—

सोहणो	सुहावणो
सोवणो	सुवावणो (=शोभा देवणो)।

(३०८) सकर्मकसूं अकर्मक—इण में ईज प्रत्यय लागै। जियां—

भरणो	भरीजणो
चोरणो	चोरीजणो
चावणो	चायीजणो
छड़नो	छड़ीजणो।

(३०९) सकर्मकसूं सकर्मक—इण में ईज प्रत्यय लागै। जियां—

पढणो	पढीजणो।

(३१०) सकर्मकसूं द्विकर्मक—इणमें आव, आड़, और आळ प्रत्यय लागै। जियां—

देखणो	देखावणो, देखाळनो, देखाड़नो
जीमणो	जिमावणो, जिमाड़नो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पढणो	पढावणो
पीवणो	पियावणो
	प्यावणो
	पावणो
बोलणो	बोलावणो
समझणो	समझावणो
सीखणो	सिखावणो
सुणनो	सुणावणो ।

(३११) अकर्मकसूं सकर्मक—इणमें आव, आण, आड़ अथवा ओव प्रत्यय लागै । जियां—

उठणो	उठावणो	उठाड़नो,	उठाणनो
जीवणो	जिवावणो	जिवाड़नो,	जिवाणनो
बैसणो	बैसावणो	बैसाड़नो,	बैसाणनो
रोवणो	रोवावणो	रोवाड़नो,	रोवाणनो
सूवणो	सुवावणो	सुवाड़नो,	सुवाणनो
ओढणो	ओढावणो,	ओढाड़नो	
चमकणो	चमकावणो		
जागणो	जगावणो,	जगाड़नो	
पोढणो	पोढावणो,	पोढाड़नो	
फिरणो	फिरावणो		
बैठणो	बैठावणो		
लिटणो	लिटावणो		
लेटणो	लेटावणो		
डूबणो	डबोवणो		
भीजणो	भिजोवणो ।		

(३१२) अकर्मकसूं प्रेरणार्थक—प्रेरणार्थक दो हुवै; एक आव

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रत्ययसूं वणै, दूजो व़ाव़ प्रत्ययसूं। कई धातव़ांरा दोनूं प्ररणार्थक वणै, कइयांरो अेक-हीज वणै—

खुलणो	खोलणो	खुलाव़णो	खुलव़ाव़णो
कटणो	काटणो	कटाव़णो	कटव़ाव़णो
विगड़नो	विगाड़नो	विगड़ाव़णो	विगड़व़ाव़णो
मरणो	मारणो	मराव़णो	मरव़ाव़णो
फुरणो	फोरणो	फोराव़णो	फुरव़ाव़णो
वंचणो	वांचणो	वंचाव़णो	वंचव़ाव़णो
विकणो	वेचणो	विकाव़णो	विकव़ाव़णो
टूटणो	तोड़नो	तुड़ाव़णो	तुड़व़ाव़णो
वैठणो		वैठाव़णो	विठव़ाव़णो
उठणो		उठाव़णो	उठव़ाव़णो
जीव़णो	जिव़ाव़णो	जिव़ाड़णो	
माव़णो	मव़ाव़णो		
सूव़णो	सुव़ाव़णो	सुव़ाड़णो	
वैव़णो	वैव़ाव़णो		
भरीजणो (भरणो)	भरणो	भराव़णो	भरव़ाव़णो
चढणो	चाढणो, चोढणो	चढाव़णो	चढव़ाव़णो

(३१३) सकर्मकसूं प्रेरणार्थक—ऊपर मुजव आव़ और व़ाव़ प्रत्यय जोडनै व़णायीजै—

पढणो	पढाव़णो	पढव़ाव़णो
जीमणो	जिमाव़णो	जिमव़ाव़णो
देखणो	दिखाव़णो	दिखव़ाव़णो
वोलणो	वोलाव़णो	वुलव़ाव़णो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रमणो	रमाव़णो	रमव़ाव़णो
वदळनो	वदळाव़णो	वदळव़ाव़णो
भूलणो	भुलाव़णो	भुलव़ाव़णो
जीतणो	जिताव़णो	जितव़ाव़णो
देव़णो	दिराव़णो	दिरव़ाव़णो
सीड़णो	सिड़ाव़णो	सिड़व़ाव़णो
करणो	कराव़णो	करव़ाव़णो
भरणो	भराव़णो	भरव़ाव़णो
पकड़नो	पकड़ाव़णो	पकड़व़ाव़णो
खाव़णो	खव़ाव़णो, खवाड़नो	
पीव़णो	पिव़ाव़णो, पियाव़णो	
लेव़णो	लिव़ाव़णो, लिराव़णो।	

(२) द्वितीय प्रकार

(३१४) कर्मवाच्य और भाव़वाच्यरी धातु वणाव़ण वास्तै ईज प्रत्यय लागै।

कर + ईज = करीज

खा + ईज = खायीज

जा + ईज = जायीज

पी + ईज = पीयीज

सू + ईज = सूयीज

सो + ईज = सोयीज

कैं + ईज = कैंयीज, कयीज

रैं + ईज = रैंयीज, रयीज

कह् + ईज = कहीज

(३१५) सामान्य-भूतरै रूपरै आगै जा धातु जोड़नैसूं भी कर्तृवाच्य और भाव़वाच्यरी धातु व़णै—

करियो जा (करियो जाव़णो)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३) तृतीय प्रकार—नाम-धातु

(३१६) संज्ञारै आगै प्रत्यय लगायांसूं जकी धातु व़णै उणनै नाम-धातु कैव़ै ।

(३१७) नाम-धातुरा प्रत्यय इण भांत हुव़ै—

१	ईज	पत्थर	+	ईज	=	पथरीज (पथरीजणो)
		चक्कर	+	ईज	=	चकरीज (चकरीजणो)
		गरब	+	ईज	=	गरबीज (गरबीजणो)
२	आव़	चक्कर	+	आव़	=	चकराव़ (चकराव़णो)
३	अ	स्व़ीकार	+	अ	=	स्व़ीकार (स्व़ीकारणो)
		अनुराग	+	अ	=	अनुराग (अनुरागणो)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४३

(ख) कृत्-प्रत्यय

(३१६) कृत् प्रत्यय धातुरै साथ जुड़नै नाम, विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण शब्द वणावै । मुख्य-मुख्य कृत् प्रत्यय इण भांत है—

(१) नाम वणावणरा प्रत्यय

अ —चाल, समझ, चमक, जोड़, मेळ, उतार, फेर, उठ-बैठ ।

अंत —भिड़ंत, लड़ंत ।

आई —चढाई, अवाई, पढाई, जुताई, लिखाई, कमाई, चराई ।

आट —गड़गड़ाट, घबराट, जगमगाट, मुसकराट ।

आण —उठाण, मिलाण, थकाण ।

आपो—चढापो, चलापो, देखापो ।

आवो—खावो, पीवो, देखवो ।

आरी—जियारी ।

आव —लगाव, बचाव, छिड़काव, घुमाव, पड़ाव ।

आवट—लिखावट, थकावट, मिलावट, दिखावट ।

आस —प्यास, लिखास, पैरास ।

इयो —जड़ियो, रोवणियो, हंसणियो, खावणियो, धोवणियो, पोवणियो ।

ऊ —झाड़ू, पाड़ू ।

ऐत —लठैत ।

ओ —घेरो, जोड़ो, लेवो-देवो, टोटो, मेळो, झूलो, टांको, बुलावो, चढावो, पैरावो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ओतो—समझोतो ।
ओती—कटोती ।
क —बैठक, बैसक ।
की —फिरकी ।
गारो —पुरसगारो ।
ण —चलण, सीड़न, अटेरण, लेणदेण, कतरण ।
णी —करणी, कहणी, कथणी, चटणी, ताव़णी, जामणी, कतरणी, करणी, ढकणी, पैराव़णी, ओढाव़णी ।
णो —पढणो, पोढणो, लेणो-देणो, पाव़णो, लड़नो, कसणो, बंधणो, ओढणो, ओढाव़णो ।
त —रमत, वचत, खपत, लागत, रंगत ।
ती —वढती, चढती, घटती, पाव़ती ।
तर —भणतर ।

(२) विशेषण वणाव़णरा प्रत्यय

अ —घाट=कम, भर ।
अइयो —गव़इयो, भरइयो ।
अणियो —पढणियो, करणियो, गाव़णियो ।
अक —तारक ।
आऊ —उठाऊ, धराऊ, मराऊ, कराऊ, दिराऊ, सजाऊ ।
आक —लड़ाक, तैराक, खव़ाक ।
आकड़ —बुझाकड़, कुदाकड़, रमाकड़ ।
इयल —अड़ियल, सड़ियल, मरियल ।
इयो —लिखणियो, पढणियो, करणियो ।
इयो —करियो, देखियो, रांधियो ।
ऊ —खाऊ, विगाड़ू, मारू, चालू, लागू, उतारू, लद्दू ।
ई —जोड़ी, हंसी, वोली, रेती, टांकी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ओटी	—कसोटी ।
अेता	—जणेता ।
अेती	—चहेती, करेती ।
अेतो	—परणेतो, जाणेतो ।
अेल	—मरेल, अड़ेल ।
अेरो	—कमेरो ।
ओ	—वैठो, ऊभो, नाठो ।
ओड़	—हंसोड़ ।
णी	—चढणी, खाव़णी, भुसणी ।
णो	—करणो, खाव़णो, भुसणो, डसणो ।
ती	—करती, जाती, देखती ।
तो	—करतो, जांव़तो, देखतो, लेतो ।
तोड़	—मरतोड़ ।
तोड़ो	—करतोड़ो, जांव़तोड़ो, देखतोड़ो ।
यो	—खायो, दियो, देख्यो ।
व़ों	—ढळवों, कटवों ।
व़ाळो	—करणव़ाळो ।

(३) क्रिया-विशेषण वणाव़णरा प्रत्यय ।

अ	—लिख, देख ।
अर	—लिख-अर, देख़-अरा ।
नै	—लिख-नै, आय-नै ।
कै	—देख-कै, पढ-कै ।
इयां	—लिखियां, आयां, जायां, लियां, लियां-लियां, कियां ।
तां	—जातां, जांव़तां, करतां, देखतां ।

(४) संस्कृतरा कृत्-प्रत्यय

अ	—घोर, नाद, बुध, पाठ, लोभ, जय ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अक —गायक, पाठक, लेखक ।

अन —नंदन, मोहन, साधन, भवन, मरण, श्रवण, भूषण, चरण, प्रार्थन, आराधन ।

अना —वेदना, प्रार्थना, तुलना, आराधना ।

अनीय —दर्शनीय, विचारणीय, करणीय, रमणीय, आदरणीय ।

आ —कथा, पूजा, चिन्ता ।

इन् (ई)—भावी, धनी, गुणी ।

इष्णु —सहिष्णु ।

उ —भिक्षु, साधु ।

उक —भिक्षुक, भावुक ।

त —गत, विगत, भूत, मृत, रत, जात, युत, ज्ञात, भक्त, रक्त, युक्त, आकृष्ट, प्रविष्ट, तृप्त, सिद्ध, विद्ध, गृहीत, कथित, विदित ।

(न) —उद्विग्न, लीन, हीन, संकीर्ण, खिन्न, भिन्न ।

ता —दाता, वक्ता, श्रोता, हर्त्ता, कर्त्ता ।

तव्य —कर्तव्य, द्रष्टव्य, मंतव्य, भवितव्य ।

ति —भक्ति, प्रीति, मति, शक्ति, नीति, स्मृति, रति, बुद्धि, सिद्धि, ऋद्धि, दृष्टि, वृष्टि, भित्ति ।

(नि) —हानि, ग्लानि ।

त्र —खनित्र, चरित्र, चित्र, पवित्र, शस्त्र, क्षेत्र ।

न —यत्न, स्वप्न, प्रश्न ।

मान —यजमान, वर्तमान, विराजमान, विद्यमान ।

य —कार्य, क्षम्य, भव्य, दृश्य, सह्य ।

या —विद्या, क्रिया ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४४

कई विशेष कृदन्त

(३१९) नीचे वताया कृदन्त महत्त्वपूर्ण हुणैसूं उणांरो विशेष वर्णन करीजै है—

(१) संज्ञा-कृदन्त (२) वर्त्तमान-विशेषण-कृदन्त (३) भूत विशेषण-कृदन्त (४) भविष्य विशेषण-कृदन्त (५) वर्त्तमान क्रिया-विशेषण-कृदन्त (६) भूत क्रिया विशेषण-कृदन्त (७) विधि-कृदन्त (८) हेतु-कृदन्त (९) पूर्वकालिक कृदन्त।

(३२०) संज्ञा कृदन्त वणावण वास्तै धातुरै आगै णो अथवा ण अथवा वो प्रत्यय जोड़ै। जियां—

आवणो	आवण	आवो
जावणो	जावण	जावो
लेणो-देणो	लेण-देण	लेबो-देबो
करणो	करण	करवो
पढणो	पढण	पढवो
चालणो	चालण	चालवो

(३२१) वर्तमान विशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै तो प्रत्यय लागै; इणांरै साथै कदे-कदे थको या हुवो शब्द जो ड़देवै—

करतो	करतो थको	करतो हुवो
करता	करता थका	करता हुवा
करती	करती थकी	करती हुई

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३२२) थको और हुव़ो-री जागां प्राय:कर ड़ो प्रत्यय जोड़ीजै । ड़ो प्रत्यय जोड़ै जद जाति और वचनरै अनुसार विकार ड़ो प्रत्ययमें हुवै, कृदन्तमें नहीं हुवै ।

करतोड़ो करतोड़ा करतोड़ी ।

(३२३) स्वरान्त धातुमें धातुरो अंतिम स्वर प्राय: सानुनासिक हुज्यावै—

खातो	खांतो	खांव़तो
खाता	खांता	खांव़ता
खाती	खांती	खांवती
खातोड़ो	खांतोड़ो	खांव़तोड़ो ।

(३२४) भूत विशेषण-कृदन्तमें **इयो** अथवा **यो** प्रत्यय लागै । प्रत्ययरै आगै वर्तमान-कृदन्तरी भांति ड़ो प्रत्यय अथव़ा थको व़ा हुव़ो शब्द जुड़ै—

करियो	कर्‌यो	
करिया	कर्‌या	
करी	करी	
करियोड़ो	कर्‌योड़ो	
करियोड़ा	कर्‌योड़ा	
करियोड़ी	कर्‌योड़ी	
लागियो	लाग्यो	लागो
चूकियो	चूक्यो	चूको

कई भूत-कृदन्त संस्कृत-प्राकृतरा भूत-कृदंतासूं वणियोड़ा है—

नष्ट	नट्ठ	नाठो
तुष्ट	तुट्ठ	तूठो
रुष्ट	रुट्ठ	रूठो
वृष्ट	वुट्ठ	वूठो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उपविष्ट	वइट्ठ	वैठो
प्रविष्ट	पइट्ठ	पैठो
लब्ध	लद्ध	लाधो
कृत	किय	कियो
सुप्त	सुत्त	सूतो
युक्त	जुत्त	जूतो
दृष्ट	दिट्ठ	दीठो
मृत	मुय	मुवो
गत	गय	गयो
	लिण्ण	लीनो
	दिण्ण	दीनो
	रुण्ण	रूनो
	किण्ण	कीनो
	किद्ध	कीधो
	लिद्ध	लीधो
	दिद्ध	दीधो
	पिद्ध	पीधो ।

टिप्पणो—भूत-कृदंत और सामान्य-भूत-काळरा रूप अेक समान हुवै । भूत-कृदंतरै आगै प्रायकर ड़ो प्रत्यय अथवा थको अथवा हुवो शब्द जुड़ै ।

(३२५) भविष्य विशेषण-कृदन्त—संज्ञा-कृदन्तरी दूसरी अथवा तीसरी विभक्तिरै आगै आळो, वाळो प्रत्यय जुड़ै—

करणाळो	करणआळो	करणवाळो
करणाळा	करणआळा	करणवाळा
करणाळी	करणआळी	करणवाळी
करबाळो	करबाआळो	करवावाळो
	करणैआळो	करणैवाळो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३२६) विधि-कृदन्त—धातुरै आगे णो अथवा वो प्रत्यय जुड़ै—

करणो खाव़णो
करणा खाव़णा
करणी खाव़णी

उदाहरण—मनै काम करणो है।
तनै काल परीक्षा देणी है।
इसो काम नहीं करणो।

(३२७) वर्त्तमान क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै तां प्रत्यय लागै। ओ कृदन्त वर्तमान विशेषण-कृदन्तसूं समानता राखै—

करतां आतां आंतां आंव़तां।

(३२८) भूत क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै इयां, यां, अथव़ा आं प्रत्यय लागै। ओ भूत विशेषण-कृदन्तसूं समानता राखै—

करियां—कर्यां, आयां, बैठां, नाठां।

(३२९) हेतु-कृदन्त—धातुरै आगै अण अथवा बा प्रत्यय लागै, कदे-कदे साथै नै प्रत्यय और जुड़ै—

(१) अण—करण खाव़ण पीव़ण
करणनै खाव़णनै पीव़णनै।

(२) वा—करबा खावा पीव़ा
करबानै खाबानै पीवानै।

(३४०) पूर्वकाळिक-कृदन्त—धातुरै रूपमें—ही हुव़ै, अथव़ा साथमें धातुरै आगै नै या 'र या अर प्रत्यय जुड़ै—

कर खा पी
करनै खायनै पीनै
कर'र खा'र पी'र
कर-अर खाय-अर पी-अर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४५

(ग) तद्धित प्रत्यय

(३४१) मुख्य-मुख्य तद्धित-प्रत्यय इण भांत है—

(१) संज्ञा वणाव़णरा प्रत्यय

(१) भाव़वाचक संज्ञा

आई —भलाई, लंबाई, पिंडताई, ठकराई, चिकणाई, खटाई, ललाई, सादाई ।

आको —सड़ाको, धड़ाको, भड़ाको, धमाको ।

आट —चरड़ाट, भरड़ाट, वण्णाट, चिकणाट ।

आटो —चरड़ाटो, सर्राटो ।

आण —ऊंचाण, नीचाण ।

आणो —तुरकाणो ।

आयत —अपणायत, विछायत, पंचायत, बोतायत ।

आरो —जमारो ।

आळी —लेव़ाळी, देव़ाळी ।

आळो —ऊनाळो, सियाळो, वरसाळो ।

आस —मिठास, खटास, चरकास, वाड़ास, कड़व़ास, तीखास, चिकणास, गरमास, निव़ास, रतास, धोळास, कळांस, काळास ।

इयाड़ —मूंघियाड़, सूंघियाड़ ।

ई —हिंदी, गुजराती, राजस्थानी, अंग्रेजी, बुद्धिमानी, अकलमंदी, साव़धानी, गरीबी, महाजनी, मजूरी, दस्तूरी, चोरी, बीसी, पच्चीसी, साठी, बत्तीसी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ईवाड़ो —मूंघीवाड़ो, सस्तीवाड़ो, सूंघीवाड़ो ।

ऊं —नवूं ।

ओ —आगो-पीछो, सराफो ।

औती —बुढौती, मनौती, कटौती ।

गी —मांदगी, देणगी ।

गीरी —सिपाहीगीरी ।

ताई —मूरखताई ।

प —स्याणप (सैंणप), धीरप ।

पण —बचपण, भलपण, सगपण ।

पणो —टाबरपणो, माईतपणो, मिनखापणो ।

पो —बुढापो, मोटापो ।

म —पांचम, आठम, दसम ।

यूं —पांच्यूं, सात्यूं, दस्यूं ।

संस्कृत-प्रत्यय

अ —गौरव, शैशव ।

इमा —महिमा, लघिमा, गरिमा, अणिमा, लालिमा, हरीतिमा ।

ई —चातुरी, माधुरी ।

ता —सरळता, समता, नीचता, सहायता ।

त्यका —अधित्यका, उपत्यका ।

त्व —मनुष्यत्व, गुरुत्व, कवित्व ।

य —लालित्य, पांडित्य, माधुर्य, धैर्य, काव्य, वाणिज्य ।

(२) जातिवाचक

आई —मिठाई, खटाई ।

आण —जोधाण, जेसाण ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आणी —हिंदवाणी, तुरकाणी ।

आणो —हिंदवाणो, जोधाणो, वीकाणो, तिलंगाणो, सिराणो, पगाणो, दादाणो, नानाणो ।

आड़ —मेवाड़, ढूंढाड़ ।

आंथियो —सिरांथियो, पगांथियो ।

आनो —राजपुतानो ।

आयत —विछायत, पंचायत, पोहरायत, लैणायत ।

आर —सुनार, लुहार, कुंभार, चमार ।

आरो —लखारो, ठंठारो, धूतारो ।

आळी —हथाळी, दिवाळी ।

आळो —पनाळो ।

आवट —मावट, कचावट ।

आवटो —मावटो, वावटो ।

इयो —रसोइयो, आढतियो ।

ई —तेली, ढोली, तंबोळी;
खेती, वाड़ी, असवारी :
बत्तीसी;
कंठी, अंगूठी;
भींड़ी, सीरी ।

ईवाड़ो —मैलीवाड़ो ।

अेरो —नानेरो, दादेरो ।

अेल —नकेल, फुलेल ।

अेली —तपेली, अधेली, हवेली ।

अेलो —अधेलो ।

ओ —आगो, पीछो, लारो, भारो, बोझो, सराफो ।

ओळ —कागोळ ।

ओड़ो —हथोड़ो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

औती —कठौती ।
गी —गंदगी ।
णी —चांदणी ।
ळी —सूतळी ।
ळो —पूतळो ।
ऌाड़ —मारऌाड़, गोडऌाड़ ।
ऌाड़ो —अैंठऌाड़ो ।
ऌाळ —मेघऌाळ, अगरऌाळ, ओसऌाळ, पल्लीऌाळ ।

संस्कृत प्रत्यय

आमह —पितामह, मातामह ।
ता —जनता ।
य —राज्य, वयस्य, सदस्य, गव्य ।

(३) अपत्यवाचक

अ —कांधळ ।
ओ —वीको, वीदो, जोधो ।
ओत —कांधळोत, राऌळोत, संतदासोत ।
आणी —सादाणी, भादाणी, लालाणी, कीकाणी ।
को —गोयनको, हिम्मतसिंघको;
नाई-को, वामण-को, राम-को ।
ऌत —वीदाऌत, राणाऌत, रांकाऌत, रामाऌत, चूंडाऌत ।

संस्कृत प्रत्यय

अ —भार्गव, पांडऌ, कौरऌ, यादऌ, राघव, पार्थ, सौमित्र, सौभद्र ।
इ —दशरथि, सौमित्रि, पाणिनि ।
अेय —वैनतेय, मार्कण्डेय, भागिनेय, कौन्तेय ।
य —आदित्य, दैत्य, जामदग्न्य ।
व्य —पितृव्य, भ्रातृव्य ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(४) ऊनवाचक प्रत्यय

इयो —गोपाळियो, लिछमणियो।
ओली —खटोली।
की —मिनकी, भाणकी, नायणकी।
को —मिनको, टोडको।
ड़ी —लाधूड़ी, पांखड़ी, गांठड़ी, पलंगड़ी, माव़ड़ी, छावड़ी।
ड़ो —रामूड़ो, भाईड़ो, कानूड़ो, मनड़ो, जिव़ड़ो, छावड़ो, वापड़ो, पंखीड़ो, संदेसड़ो।
ती —घोड़ती, नायणती।
तो —घोड़तो, मंगतो।
लो —रामलो, घोड़लो, तिणकलो।

ऊनवाचक प्रत्यय कदे-कदे दोलड़ा लागै—

आंखड़ली, वांसड़ली, रातड़ली मावड़ती, आंवलियो, घोड़लियो, तिणकलो, वाटकड़ी।

(५) आदरवाचक

जी —गुरूजी, पिंडतजी, भाईजी, सासूजी, माजी।
सा —गुरांसा, भाईसा, मा-सा, काको-सा।

(६) कर्तृवाचक

आड़ी —खिलाड़ी।
आळ —लेव़ाळ, देव़ाळ।
आरी —पुजारी, भिखारी।
आरो —विणजारो, हत्यारो।
अैती —धाड़ैती।
इयो —खटपटियो।
ख़ोर —हरामखोर, चुगलखोर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

खोरी —सक्करख़ोरो, चुगलखोरो ।
गर —कारीगर, जाणगर, माणीगर, चूड़ीगर, रफूगर।
गारो —कामणगारो, जादूगारो ।
दार —चौकीदार, कामदार, हव़लदार ।
व़ार —उम्मेदव़ार ।

(२) विशेषण वणाव़णरा प्रत्यय

(१) मत्वर्थीय प्रत्यय—

आल —दयाल ।
आलू —दयालू ।
आळ —रूपाळ ।
आळो —रूपाळो, गाडीआळो, नखराळो, लादआळो, (लादाळो)
इयो —आढतियो ।
ई —धनी, सुखी, गुणी, सीरी, भीड़ी ।
ईलो —कोडीलो, खोड़ीलो, खांतीलो, भांतीलो, रांतीलो।
ऊ —गरजू, भीड़ू, मेळू ।
ची —मसालची ।
दार —खूवीदार, रंगदार, धारीदार, जाळीदार, छड़ीदार ।
मंत —श्रीमंत ।
मान —बुद्धिमान, श्रीमान ।
ल —दांतल, घायल, दागल ।
व़ंत —वळव़ंत, गुणव़ंत ।
व़ंतो —धनव़ंतो, गुणव़ंतो ।
व़ान —गाडीव़ान, वळव़ान, रूपव़ान, वागव़ान, धनव़ान।
व़ाळ —गयाव़ाळ, गयीव़ाळ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वाळो —रथवाळो, बीड़ीवाळो ।

संस्कृत-प्रत्यय

इत —तारकित, कंटकित, पुष्पित, सुखित ।

इक —मायिक ।

इम —अग्रिम, अंतिम ।

इल —फेनिल, तुंदिल, पंकिल ।

र —मधुर ।

वी —मेधावी, मायावी, तेजस्वी, ओजस्वी ।

(२) अन्य विशेषण–प्रत्यय

आऊ —घराऊ, वटाऊ, अगाऊ ।

आड़ो —मेवाड़ो ।

आण —पैलाण, दूजाण ।

आयो —तिसायो ।

आर —गंवार, दुधार ।

आरी —सुखारी, दुखारी ।

आरू —दुधारू ।

इयारी —सुखियारी, दुखियारी ।

इयो —सुखियो, चंदणियो, अंगूरियो, कळकतियो ।

ई —गुलावी, सूती, देसी, पंजावी, मारवाड़ी ।

ईणो —लाखीणो, हमीणो, तमीणो ।

ईल —रंगील ।

ईलो —रंगीलो, रसीलो, चटकीलो, वादीलो ।

ऊं —दोऊं, तीनूं, नवूं ।

ऊ —वरसाळू, सियाळू, ऊनाळू, घरू ।

अैरी —सुनैरी ।

अैरो —सुनैरो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ओ —भूखो, तिसो, ठंडो, मराठो ।

गर —वडगर ।

नूं —दोनूं ।

लड़ो —इकेलड़ो, दोलड़ो, तेलड़ो, चौलड़ो, पंचलड़ो ।

लो —अेकलो, म्हारलो, थारलो, आपणलो, कनलो, आगलो, लारलो, पाछलो, ऊंचलो, नीचलो, ऊपरलो, ईनलो, ऊनलो ।

ळो —म्हांळ्-ळो, थांळ्-ळो ।

वड़ो —इकेवड़ो, दोवड़ो, तेवड़ो ।

वों —पांचवों, सातवों, दसवों ।

सर —कायदेसर ;

संस्कृत प्रत्यय

अ —शैव, वैष्णव, पांचाल, कापोत, मौन, नैश, यौवन, पार्थिव ।

अक —मीमांसक ।

इक —वार्षिक, सैनिक, पथिक, शारीरिक, मानसिक, वाचिक, कायिक, आस्तिक, वैदिक, पारलौकिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक ।

इय —क्षत्रियं, राष्ट्रिय ।

ई —कुटुंबी ।

ईन —कुलीन, ग्रामीण, विश्वजनीन ।

ईय —पाणिनीय, भारतीय, त्वदीय, मदीय, राष्ट्रीय ।

अेय —वाराणसेय, पौरुषेय, पाथेय, आतिथेय ।

कीय —स्वकीय, राजकीय, परकीय ।

कट —प्रकट, उत्कट, विकट ।

तन —सनातन, पुरातन, सायंतन, अधस्तन, चिरंतन ।

त्य —दाक्षिणात्य, पाश्चात्य, पौरस्त्य, अमात्य ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मात्र —फळमात्र ।

न —स्त्रैण ।

पाश —केशपाश ।

मय —मृन्मय, काष्ठमय, दुःखमय, अन्नमय ।

य —वायव्य, सभ्य, न्याय्य हृद्य, धन्य, वश्य ।

(३) क्रियाविशेषण वणावणरा प्रत्यय

आक — तड़ाक, भड़ाक, सटाक, खटाक ।

आस —कदास ।

देसी —पट-देसी, झट-देसी, खटाक-देसी, सड़ाक-देसी ।

वार —क्रमवार ।

सर —रीत-सर, काम-सर, लागत-सर, कायदे-सर, वक्त-सर ।

संस्कृत प्रत्यय

तः —विशेषतः, स्वतः, परतः ।

वत् —पुत्रवत् ।

शः —अनेकशः, अक्षरशः, शब्दशः, क्रमशः ।

चित् —कदाचित्, क्वचित्, किंचित् ।

(४) स्वार्थिक प्रत्यय

स्वार्थिक प्रत्यय लाग्यांसूं अर्थ नहीं वदळै, सागी रैवै—

आड़ी —अगाड़ी, पिछाड़ी ।

ओरो —घणेरो, भलेरो, आघेरो, परेरो, वडेरो ।

ओ —हंसो, कागो, रामो, वळदेवो ।

क —वाळक, भिक्षुक ।

को —वडको, छोटको, तिणको ।

ती —कमती ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ल —नणदल ।

ळो —आंधळो, सांव़ळो ।

कई ऊनवाचक प्रत्यय वास्तव में स्वार्थिक प्रत्यय-ही है—

ड़ी —कोयलड़ी, सहेलड़ी ।

ड़ो —संदेसड़ो, मनड़ो, हिव़ड़ो, करियोड़ो ।

(५) नारी–प्रत्यय

नरजातिसूं नारीजाति वणाव़णरा प्रत्यय भी तद्धित प्रत्यय है। उणांरो वर्णन लारै संज्ञा-प्रकरणमें हो चूको है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४६

समास

(३४२) दो शब्दांनै मिलायनै अेक नयो शब्द वणावणो इणनै समास कैवै । जियां—

सुख + दुख = सुख-दुख
हरि + भक्ति = हरि-भक्ति
जन + मन = जन-मन ।

(३४३) समाससूं वणियोड़ा शब्द सामासिक शब्द अथवा समास कहीजै । समस्त शब्दरा दोनूं अंगभूत शब्द का तो मिलायनै लिखीजै, का दोनांरै वीचमें योजक-चिन्ह (—) दिरीजै । जियां—

हरिभक्ति, हरि-भक्ति ।

(३४४) समासरै आगै भळै शब्द जोड़नै नयो समास वणायीज सकै । जियां—

सुख-दुख + दायक = सुख-दुख-दायक ।
हरि-भक्ति + प्रिय = हरि-भक्ति-प्रिय ।
जन-मन + मोहन = जन-मन-मोहन ।

(३४५) समासरा च्यार भेद हुवै—

(१) द्वन्द्व—उभय-पद-प्रधान ।
(२) तत्पुरुष—उत्तर-पद-प्रधान ।
(३) वहुव्रीहि—नान्यतर-पद-प्रधान ।
(४) अव्ययीभाव—पूर्व-पद-प्रधान ।

(१) द्वन्द्व

(३४६) जद और अथवा या शब्दसूं जुड़ियोड़ा दो शब्दांनै, वीच

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मांयसूं और अथवा या नै आघो करनै, मिलायीजै। इणमें दोनूं शब्द प्रधान अर्थात् बराबरीरा हुवै। जियां—

सुख-दुख	=	सुख और दुख
मा-बाप	=	मा और बाप
बेटो-बेटी	=	बेटो और बेटी
राम-लिछमण	=	राम और लिछमण
लाल-पीळा	=	लाल और पीळा
दो-तीन	=	दो या तीन
काळो-गोरो	=	काळो या गोरो।

(३४७) द्वन्द्वरा दो भेद हुवै—

(१) समाहार—जद दोनां शब्दांरो सामूहिक अर्थ लिरीजै। समाहार-द्वन्द्व सदा अेकवचन-में हुवै। जियां—

मैं घणो ही सुख-दुख उठायो।

(२) इतरेतर—जद दोनां शब्दांरो न्यारो-न्यारो अर्थ लिरीजै। इतरेतर सदा अनेकवचनमें हुवै—

मैं घणा ही सुख-दुख उठाया।

राम-लिछमण वनमें गया।

(२) तत्पुरुष

(३४८) तत्पुरुषमें पछलो शब्द प्रधान हुवै और पैलड़ो शब्द उणरी विशेषता बतावै। इणमें पैला शब्दरा विभक्ति-चिह्नरो लोप करनै दोनां शब्दांनै मिलायीजै—

गंगा-रो तट	=	गंगा-तट
देस-सूं निकाळो	=	देस-निकाळो
आप पर बीती	=	आप-बीती

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३४९) तत्पुरुषरा तीन भेद हुवै—

(१) व्यधिकरण तत्पुरुष (२) समानाधिकरण तत्पुरुष और (३) उपपद तत्पुरुष ।

(३५०) व्यधिकरण तत्पुरुष— जद समासरा दोनूं शब्द न्यारी-न्यारी विभक्तियांमें हुवै । पैलड़ो शब्द चौथीसूं आठवीं ताणी किणी विभक्तिमें हुवै और पछलो शब्द पैली विभक्तिमें हुवै । जियां—

कृष्ण-नै अर्पण = कृष्णार्पण
दु:ख-नै प्राप्त = दु:ख-प्राप्त
गुण-सूं बायरो = गुण-बायरो
धन-सूं अंध = धनांध
रूप-रो मद = रूप-मद
शिव-रो मंदिर = शिव-मंदिर
देश-रो भक्त = देश-भक्त
रसोई-रो घर = रसोई-घर
कार्य-में चतुर = कार्य-चतुर
पर-में वीतो = पर-वीती
घर-में बैठ्यो = घर-बैठ्यो ।

(३५१) जिण तत्पुरुष समासरो दूसरो शब्द इसो हुवै जिणरो स्वतंत्र प्रयोग नहीं हुवै उणनै उपपद-तत्पुरुष कैवै—

कुंभनै करै जको कुंभकार ।
जळमें चरै जको जळचर ।
जळनै धारै जको जळधर ।
गोवांनै पाळै जको गोप ।
चिड़ीनै मारै जको चिड़ीमार ।

(३५२) समानाधिकरण तत्पुरुष—जद दोनूं शब्द अेक ही विभक्ति-

में—अर्थात् प्रथमा विभक्तिमें—हुवै । इणनै कर्मधारय भी कैवै । जियां—

काळी है जकी मिर्च	=काळी-मिर्च ।
बाळ है जको राजा	=बाळ-राजा ।
आधो है मरियो जको	=अध-मरियो ।
जको लाल भी है और पीळो भी	=लाल-पीळो ।
जको खाटो भी है और मीठो भी	=खट-मीठो ।
दहीमें डूबियोड़ो वड़ो	=दही-वड़ो ।
घन जिसो श्याम	=घनश्याम ।
चन्द्र जिसो मुख	=चंद्र-मुख ।
मुख-हीज चंद्र	=मुख-चंद्र ।

(३५३) समानाधिकरण तत्पुरुषमें अेक नाम और अेक विशेषण हुवै, कदे-कदे दो विशेषण अथवा दो नाम हुवै । अेक नाम और अेक विशेषण हुवै तो विशेषण पैली आवै पण कदे-कदे पछै भी आवै ।

विशेषण और नाम	—काळीमिर्च, परमानंद, घनश्याम ।
विशेषण और विशेषण	—ऊँचो-नीचो (मारग) ।
	लाल-पीळी (आंख) ।
नाम और नाम	—चन्द्र-मुख (चंद्र जिसो मुख) ।
	वचनामृत (अमृत जिसो वचन) ।

(३५४) पैलड़ो शब्द संख्यावाचक विशेषण हुवै और सारै समासरो सामूहिक अर्थ हुवै जद द्विगु समास कहीजै—

तीनां लोकांरो समूह	=त्रिलोकी ।
पांच सेरांरो समूह	=पंसेरी ।
पांच वटांरो समूह	=पंचवटी ।
च्यार महीनांरो समूह	=चौमासो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दो आनांरो समूह = दो-आनी ।
छै दामांरो समूह = छदाम ।

(३५५) कई लोग प्रताप, अधिराज आदिमें प्रादि-समास तथा अधर्म, अनिष्ट, नगण्य, अणजाण, अणधारियो आदि में नञ्-तत्पुरुष समास मानै है; पण प्र, अ, अन्, अण, न आदि उपसर्ग है, समास दो शब्दांरो हुवै, उपसर्ग और शब्दरो नहीं; इणीतरां स-पुत्र, स-सम्मान, सहर्ष, सोदर आदिमें भी स नै उपसर्ग समझणो ।

(३) बहुव्रीहि

(३५६) बहुव्रीहिमें दोनूं ही शब्द अप्रधान हुवै, अर्थात् समासरा दोनूं शब्द जिण पदार्थारो बोध करावै पूरो समास उणांसूं भिन्न तीजै-हीज पदार्थरो बोध करावै । जियां—

(१) लंबोदर

ओ समास लंब और उदर इण दो शब्दांरा मेळसूं बणियो है पण इणरो अर्थ ना तो लंबो है, ना उदर; पण वो व्यक्ति है जिणरो उदर लांबो (अर्थात बडो) है अर्थात गणेशजी ।

(२) दशानन

इण में ना दश-रो अर्थ है, ना आनन रो; पण उण व्यक्तिरो अर्थ है जिणरै दश आनन हा अर्थात रावण ।

(३५७) बहुव्रीहिमें भी तत्पुरुष जियां पैलै शब्दरी विभक्तिरो लोप हुवै, पूरो समस्त शब्द विशेषण हुवै ।

(३५८) बहुव्रीहिरा दो भेद हुवै—

(१) व्यधिकरण—जद पैलड़ै शब्दमें पहली विभक्ति हुवै और दूसरैमें सातवीं अथवा आठवीं—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चक्र है पाणिमें जिणरै =चक्रपाणि (विष्णु)।
इंद्र है आदिमें जिणांरै =इन्द्रादि (देवता)।
चंद्र है शेखर पर जिणरै=चन्द्रशेखर (शिव)।

(२) समानाधिकरण—जद दोनूं शब्द अेक ही, अर्थात् प्रथमा, विभक्तिमें हुवै—

सात है खंड जिणमें =सतखंडो (महल)।
च्यार है भुजा जिणरै =च्यार-भुजा (देवी)।
महा है बाहु जिणरा =महा-बाहु (वीर)।
चन्द्र-सो है मुख जिणरो =चंद्र-मुख।

(४) अव्ययीभाव

(३५९) जो समास अव्यय वण जावै अर्थात क्रियाविशेषणरो काम करै उणनै अव्ययीभाव कैवै।

(३६०) इणमें पैलड़ो शब्द प्राय:कर अव्यय हुवै—

यथा-शक्ति =शक्तिरै अनुसार।
क्षण-क्षण =प्रत्येक क्षण में।
यथा-संभव=संभव हुवै जित्तै ताई।
हर-घड़ी =हरेक घड़ीमें।
रातूं-रात =रातरै मांय-हीज।
मनी-मन =केवळ मनमें।

(३६१) अेक-ही शब्द अर्थरै अनुसार न्यारा-न्यारा समासरै अन्तर्गत आवै। जियां—सत्यव्रत, लाल-पीळा।

(१) सत्यव्रत —सत्य और व्रत =द्वन्द्व।
सत्यरो व्रत =तत्पुरुष।
सत्य है जो व्रत =कर्मधारय।
सत्य है व्रत जिणरो=बहुव्रीहि।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२) लाल-पीळा—लाल और पीळा

(कई फळ लाल है, कई पीळा है)=द्वन्द्व ।

जका लाल भी है और पीळा भी है

(हरेक फळ लाल और पीळो है)=कर्मधारय ।

(३६२) समासरा शब्दांनैं न्यारा-न्यारा करणैंनैं विग्रह कैवै । ऊपर हरेक समासरो विग्रह साथैं दियो है । अव्ययीभावरो विग्रह समासमें आयोड़ा शब्दांसूं नहीं हुवै, अर्थरैं अनुसार दूजा शब्द लावणा पड़ै—

राजा-राणी—राजा और राणी (द्वन्द्व) ।
दिन-रात —दिन और रात (द्वन्द्व) ।
बाळ-हठ —बाळ(क)रो हठ (तत्पुरुष) ।
सत्-पुरुष —सत् है जो पुरुष (कर्मधारय) ।
पंसेरी —पांच सेरां दो समूह (द्विगु) ।
कमजोर —कम है जोर जिणमें (बहुव्रीहि) ।
यथाविधि —विधिरैं अनुसार (अव्ययीभाव) ।
दिनरात —दिनमें और रातमें लगातार (अव्ययीभाव) ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४७

पुनरुक्त शब्द

(३६३) सागी शब्द दो वार आयांसूं जको शब्द वणै उणनै पुनरुक्त शब्द कैवै । जियां—

घड़ी-घड़ी, वड़ा-वड़ा, देश-देश, जय-जय ।

(३६४) पुनरुक्त शब्द अेक प्रकाररो सामासिक शब्द ही हुवै ।

(३६५) पुनरुक्त शब्द सात तरांरा हुवै—

१ जद शब्दरै आगै सागी शब्द आवै—

रोम-रोम	लोटां-लोटां
कोडी-कोडी	पगां-पगां
दाणो-दाणो	हुतां-हुतां
भाई-भाई	करतां-करतां
मीठा-मीठा	वैठां-वैठां
राम-राम	पूगतां-पूगतां
कुण-कुण	ला-ला
कोई-कोई	पी-पी
जको-जको	देख-देख
	आवो-आवो
	धीरे-धीरे
साची-साची	कदे-कदे
धीमो-धीमो	ऊपर-ऊपर
चूर-चूर	सागै-सागै

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२ जद शब्दरै आगै सागी शब्द आवै पण वीचमें कोई संयोजक आखर आ ज्याय—

कोर-म-कोर	साथै-रो-साथै
सोट-म-सोट	लारै-रो-लारै
वारंवार	कठै-रो-कठै
रात-वि-रात	वो-ही-वो
काल-रो-काल	दूध-ही-दूध
	सूतो-ही-सूतो ।

३ जद शब्दरै आगै उणरो पर्याय शब्द जुड़ै—

सदा-सर्वदा	लुच्चो-लफंगो
भाई-वंध	लूलो-लंगड़ो
मोटो-ताजो	जळ-वळ
	सोचणो-विचारणो ।

४ जद शब्दरै सागै जोड़ैरो शब्द जोड़ीजै—

लेण-देण	काका-वावा
अठै-उठै	आंटो-सूंवो
आर-पार	ऊंधो-सूंधो
जियां-तियां	दिनूंगै-सिंझ्या
	आर-म-पार ।

५ जद क्रियारै सागै क्रियारो प्रेरणार्थक रूप जोड़ीजै—
होणो-हुवणो, करणो-करावणो, मरणो-मारणो ।

५ जद शब्दरै आगै निरर्थक समानुप्रास शब्द जोड़ीजै—

टेढो-मेढो	सीधो-साधो
आमो-सामो	भीड़-भाड़
पूछ-ताछ	टीम-टाम
वात-चीत	टाल-म-टोळ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

६ जद शब्दरै आगै सार्थक समानुप्रास शब्द जोड़ीजै—

समझणो-बूझणो   बोलणो-चालणो
जोर-शोर   हाल-चाल
लड़नो-भिड़नो ।

७ जद दोनूं शब्द अर्थहीन हुवै—

अटर-सटर, सटर-पटर, अंड-बंड ।

(३६६) बोलचालमें अपूर्ण पुनरुक्त शब्दांरो घणो प्रचार है। पुनरुक्ति करण वास्तै प्रायःकर ध अक्षर काममें लायीजै—

रोटी-धोटी   रोवणो-धोवणो
मोटो-धोटो   जीमणो-धीमणो
कपड़ो-धपड़ो   कलम-धलम ।

पुनरुक्ति वास्तै न्यारी-न्यारी भाषावांमें न्यारा-न्यारा आखर काममें आवै—

हिंदी — व़, उ (जल-व़ल, जल-उल, घोड़ा-ओड़ा)
बंगला — ट (जोल-टोल, घोड़ा-टोड़ा)
मैथिली — त (जल-तल, घोड़ा-तोड़ा)
गुजराती— व (जळ-वळ, घोड़ो-वोड़ो)
मराठी — ब (जळ-बिळ, घोड़ो-बीड़ो) ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४८

अनुकरण-शब्द

(३६७) किणी पदार्थरी यथार्थ अथवा कळपित ध्वनिनै ध्यानमें राखनै जको शब्द वणायीजै उणनै अनुकरण-शब्द कैवै । जियां—

कट्, खट्, वट्, सर्, फुर् ।

(३६८) अनुकरण-शब्द प्रायः पुनरुक्त होयनै प्रयुक्त हुवै । जियां—

खटखट गटगट पटपट फटफट सटसट ।
गड़गड़ भड़भड़ तड़तड़ वड़वड़ सड़सड़ ।
सरसर चरचर फरफर टरटर फरफर ।
खळखळ सळसळ भळभळ, कलकल, छलछल ।
चरड़-चरड़, जरड़-जरड़, वरड़-वरड़, सरड़-सरड़ ।

(३६९) पुनरुक्तिसूं पैली वीचमें 'आ' प्रत्यय जोड़नैसूं क्रियाविशेषण वणै—

खटाखट गटागट वटावट सटासट ।
भड़ाभड़ तड़ातड़ सड़ासड़ दड़ादड़ ।

(३७०) कदे-कदे आक प्रत्यय जोड़नै पुनरुक्ति करीजै—

खटाक-खटाक वटाक-वटाक
तड़ाक-तड़ाक सड़ाक-सड़ाक ।

(३७१) कदे-कदे अनुकरणवाचक शब्दरी अधूरी पुनरुक्ति हुवै अर्थात् पहलो आखर वदळनै पुनरुक्ति करीजै—

खदवद खड़वड़ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ४६

संयुक्त क्रिया

(३७२) कृदंत, नाम अथवा विशेषणरै साथै क्रियारा संयोगसूं जकी नवी क्रिया वणै उणनै संयुक्त क्रिया कैवै। जियां—

(१) सीता पाठ वांच लियो।
(२) वरसा हुवण लागी।
(३) मनै काम करण दो।
(४) हरी दिनूंगै आया करै है।
(५) क्यूं सिर माथै बोझ लियां फिरै ?
(६) माधोजी रोटी कर राखी है।
(७) बामण आता जासी अर जीमता जासी।
(८) देवो पाठ याद करै है।
(९) दुर्गा तीन पोथियां मोल ली।
(१०) आ बात याद आयी कोनी।
(११) भाई मनै घणो प्यार करै है।
(१२) मैं पोथी आरंभ करी।
(१२) सिपाही सगळी कथा वर्णन करी।
(१४) रकम नास कर दी।

(३७३) बणावटरी दृष्टिसूं संयुक्त क्रिया आठ प्रकाररी हुवै—

(१) जका पूर्वकाळिक-कृदंतसूं वणै। इणमें पूर्वकाळिक कृदन्तरै आगै लेवणो, देवणो, सकणो, चूकणो, नाखणो, गेरणो, मरणो, पावणो, जावणो, आवणो इत्यादि क्रियावां आवै। जियां—

ले लियो, कर लियो, बैठ लियो, आ लियो।
ले दियो, कर दियो, नाख दियो, रो दियो।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ले सकियो, कर सकियो, बैंठ सकियो, आ सकियो।
ले चूको, कर चूको, बैंठ चूको, आ चूको।
ले नाखियो, कर नाखियो, तोड़ नाखियो।
ले गेरयो, कर गेरयो, मार गेरयो।
ले मरियो, कर मरियो, डूब मरियो।
ले पायो कर पायो बैंठ पायो आ पांयो।
लेय ग्यो, कर ग्यो, बैंठग्यो, आयग्यो।
ले आयो, कर आयो, बैंठ आयो, जा आयो।

(२) जकी हेतु-कृदंतसूं वणै। इणमें हेतु-कृदंतरै आगै देवणो, पावणो, लागणो, सकणो, इत्यादि क्रियावां आवै। जियां—

लेवण दियो, करण दियो, आवण दियो।
लेवण पायो, करण पायो, आवण पायो।
लेवण लागियो, करण लागियो, आवण लागियो।
लेवण सकियो, करण सकियो, आवण सकियो।
लेणै सकियो, करणै सकियो, आणै सकियो।
लेवा दियो, करवा दियो, आवा दियो।

(३) जकी विधि-कृदंतसूं वणै। इणमें विधि-कृदंतरै आगै करणो, चावणो पड़नो इत्यादि क्रियावां जुड़ै। जियां—

लेवो करै, करवो करै, आवो करै।
लेवो चावै, करवो चावै, आवो चावै।
लेणो चावै, करणो चावै, आणो चावै।
लेणो पड़ै, करणो पड़ै, आणो पड़ै।

(४) जकी वर्तमान विशेषण-कृदंतसूं वणै। इणमें आवणो, जावणो, रैवणो इत्यादि क्रियावां जुड़। जियां—

लेतो आयो, करतो आयो, बैंठतो आयो।
लेतो गयो, करतो गयो, बैंठतो गयो।
लेतो रयो, करतो रयो, आतो रयो।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(५) जकी भूत विशेषण-कृदंतसूं वणै। इणमें आवणो, जावणो, करणो, चावणो, पड़नो इत्यादि क्रियावां आवै। जियां—

चालियो आवै, भरियो आवै।
चालियो जावै, भरियो जावै।
करियो जावै, पढियो जावै।
आयो चावै है, उठियो चावै है।
करियो चावै है, पढियो चावै है।
छूटियो पड़ै है, टूटियो पड़ै है।
आया करै है, वांचिया करै है।

(६) जकी वर्तमान क्रियाविशेषण-कृदंतसूं वणै। इणमें आवणो इत्यादि क्रियावां जुड़ै। जियां—

करतां आवै हैं, वांचतां आवै है।
उठतां आवै है, उडावतां आवै है।

(७) जकी भूत क्रियाविशेषण-कृदंतसूं वणै। इणमें जावणो, फिरणो इत्यादि क्रियावां जुड़ै। जियां—

लियां जावै है, वांचियां जावै है
आयां जावै है, कियां जावै है।
उठियां जावै है, रोयां जावै है।
लियां फिरै है, चढियां फिरै है।

(८) जकी संज्ञा अथवा विशेषणसूं वणै। इसमें विशेषकर करणो और हुवणो क्रियावां आवै। जियां—

स्वीकार करणो, स्वीकार हुवणो।
याद करणो, याद हुवणो।
याद रैवणो, याद आवणो।
नास करणो, नास हुवणो।

(३७४) अर्थरी दृष्टिसूं संयुक्त-क्रियारा अनुमति-सूचक, अभ्यास-

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूचक, इच्छासूचक, आरंभसूचक, आवश्यकतासूचक, कर्तव्यसूचक, परीक्षा-सूचक, प्रकर्षसूचक, समाप्तिसूचक, सातत्यसूचक, सामर्थ्यसूचक इत्यादि अनेक प्रकार हुवै़—

(१) अनुमति-सूचक—जावण देवै़, जावा देवै़ ।

(२) अभ्यास-सूचक—आया करै, आतो रैवै़ ।

(३) सातत्यसूचक—करतो जावै़, कियां जावै़, करतो रैवै़ ।

(४) आरंभसूचक—तरण लागै, करवा लागै ।

(५) इच्छासूचक—करणो चावै़, कियो चावै़ ।

(६) आवश्यकतासूचक—करणो पड़ै, करणो पड़ैला, करणो है, करणो हुसी ।

(७) कर्तव्यसूचक—करणो चाहीजै, कियो चाहीजै ।

(८) परीक्षासूचक—कर देखै ।

(९) प्रकर्षसूचक—कर नाखियो, कर गेरचो, कर मारचो, कर वैठ्यो, कर पड़्यो, दे मारचो, कर दियो, कर लियो, करग्यो ।

(१०) समाप्तिसूचक—कर चूको, कर छूटो ।

(११) सामर्थ्यसूचक—कर सकै, कर पावै़ ।

(१२) शीघ्रतासूचक—आयो चावै़ है, वजी चावै़ है, कियो चावै़ है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अध्याय ४

वाक्य-विचार

पाठ ५०

उद्देश्य और विधेय

(३७६) शब्दांरो जको समूह अेक पूरी वात कैवै वो वाक्य कहीजै।

(३७७) वाक्यरा दो भाग हुवै—(१) उद्देश्य और (२) विधेय।

(३७८) आपां कोई वात कैवां जद कैई पदार्थरो नांव लेवां और उणरै वारैमें कोई वात कैवां।

(३७९) जिण पदार्थरै वारैमें वात कहीजै उणनै उद्देश्य कैवै और जिका वात कहीजै उणनै विधेय कैवै। जियां—

(१) विद्यार्थी पढै है।

अठै पैली विद्यार्थी-रो नांव लियो, फेर उणरै वारैमें अेक वात कही कै, पढै है। इण वाक्यमें विद्यार्थी शब्द उद्देश्य और पढै है शब्द विधेय है।

(२) फळ तोड़ीजै है।

अठै पैली फळ-रो नांव लियो, फेर उणरै वारैमें आ वात कही कै, तोड़ीजै है। अठै फळ उद्देश्य और तोड़ीजै है विधेय है।

(३८०) विधेयमें कम-सूं-कम क्रिया जरूर रैवै।

(३८१) वाक्य छोटा-वडा सब तरांरा हुवै। सबसूं छोटै वाक्यमें दो शब्द हुवै—अेक उद्देश्य और अेक विधेय। कदे-कदे उद्देश्य लुकियोड़ो रैवै जद वाक्य अेक हीज शब्दरो हुवै। जियां—

(१) जा।

अठै पूरो वाक्य 'तूं जा' है, उद्देश्य 'तूं' छिपियोड़ो है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२) आऊं हूं ।

अठै पूरो वाक्य 'हूं आऊं हूं' है, उद्देश्य 'हूं' छिपियोड़ो है ।

(३८२) वडा वाक्यांरा उदाहरण—

म्हारा पिताजी ऊपर गया है ।

अठै पिताजी-रै बारैमें वात कही कै गया है, म्हारा शब्द विशेषण है और पिताजी-री विशेषता वतावै है, ऊपर शब्द क्रियाविशेषण है और गया है क्रियारी विशेषता वतावै है । इण वाक्यमें—

म्हारा पिताजी उद्देश्य है और
ऊपर गया है विधेय है ।

उद्देश्यरा विशेषण उद्देश्यरै अंतर्गत और विधेयरा विशेषण विधेयरै अन्तर्गत आवै ।

(३८३) क्रियारो पूरक विधेयरो अंग हुवै ।

(३८४) कर्ता, संबंध और संबोधननै छोडनै बाकीरा सै कारक विधेयरा अंग हुवै ।

(३८५) संबंध कारक विशेषणरो काम करै, इण वास्तै जिण शब्दरी विशेषता वतावै उणरै (भेद्यरै) साथै जावै । जियां—

किसनै-रो भाई म्हारै घरै आयो ।

अठै 'किसनै-रो' शब्द 'भाई' रै साथै जासी और 'म्हारै' शब्द 'घरै' रै साथै ।

(३८६) पूरक और कर्मरा विशेषण विधेयरा अंग हुवै ।

(३८७) नामयोगी आपरी संज्ञारै साथै पूरकरो अंग हुवै ।

(३८८) पूर्वकाळिक क्रिया आपरै पूरक, कर्म अथवा दूजा कारकांरै साथै विधेयरो अंग हुवै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५१

वाक्यांरा तीन प्रकार

(३८९) रचनारी दृष्टिसूं वाक्यरा तीन प्रकार हुवै—(१) सरळ, (२) जटिल और (३) संयुक्त।

(३९०) जिण वाक्यमें अेक ही समापिका क्रिया हुवै वो सरळ वाक्य कहीजै। जियां—

रामचन्द्र मद्रास जावैला।

(३९१) जिको वाक्य दूसरै वाक्यरो भाग हुवै उणनै उपवाक्य कैवै। जियां—

(१) रामचन्द्र मनै कैतोहो कै हूं मंदराज जासूं।

इण वाक्यमें दो छोटा वाक्य है—

(१) रामचन्द्र मनै कैतो हो।

(२) हूं मंदराज जासूं।

दोनूं उपवाक्य है।

(२) मनै ठा कोनी कै छोरा कठै है और वै कांई करै है।

इण वाक्यमें तीन छोटा वाक्य है—

(१) मनै ठा कोनी।

(२) छोरा कठै है।

(३) वै कांई करै है।

तीनूं उपवाक्य है।

(३९२) उपवाक्य कदेई आपसमें बराबर हुवै, कदेई अेक प्रधान हुवै और बाकी आश्रित।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३६३) आश्रित उपवाक्य तीन तरांरा हुवै—(१) नामिक उपवाक्य, (२) विशेषण-उपवाक्य, (३) क्रियाविशेषण-उपवाक्य ।

(३६४) जको उपवाक्य प्रधान उपवाक्यरी क्रियारो कर्त्ता, कर्म अथवा पूरक हुवै उणनै नामिक-उपवाक्य कैवै । जियां—

(१) भाईजी कयो, कै काले आऊंला ।

(२) वो जाणै कोनी, हूं कांई करूं हूं ?

(३) उणरो नांव कांई है,-इण वातरो मनै पतो कोनी ।

(३६५) जको उपवाक्य प्रधान उपवाक्यरै कैई नाम या सर्वनामरी विशेषता वतावै बो विशेषण-उपवाक्य । जियां—

(१) काम नहीं करैला वै पिसतावैला ।

(२) ओ घर बोही है, जिणमें राधारो जलम हुयो हो ।

(३) चमकै जको संगळो सोनो को हुवै नी ।

(४) हाको करता हा जका टाबर कठै गया ?

(३६६) जको उपवाक्य प्रधान उपवाक्यरी क्रियारी विशेषता वतावै वो क्रियाविशेषण-उपवाक्य । जियां—

(१) वो ले जासी जठै चालसां ।

(२) अबै पग उठावो, कारण मोड़ो हुयग्यो है ।

(३) वो इत्तो तिसायो हो, कै तीन लोटा पाणी पीग्यो ।

(४) तूं चालसी, तो म्हे चालसां ।

(५) बामण सेर मिठाई खायी, तोई धापियो कोनी ।

(३६७) अै उपवाक्य प्रधान वाक्यरै साथै व्यधिकरण संयोजकसूं, अथवा जो सर्वनामसूं, अथवा जो सर्वनामसूं वणियोड़ा क्रियाविशेषण अथवा विशेषणसूं, जुड़ियोड़ा रैवै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३६८) जिणमें अेक प्रधान और अेक या अनेक आश्रित उपवाक्य हुवै वो जटिल वाक्य कहीजै । जियां—

(१) रामदास मनै लिखियो, कै हूं कळकत्तै जाऊंला ।
(२) मेह वरसतो, तो खेती घणी चोखी हुती ।
(३) परिश्रम करै जको सफळ हुवै ।
(४) मनै तूं फूल दै, तो हूं तनै नवी कलम दूं ।
(५) आपां जीतसां जिकामें कसर ही कांई ?
(६) हूं घरै पूग्यो जद रोटी मिली ।
(७) भाई काल कोनी आयो, कारण सरीर ठीक कोनी हो ।
(८) वरखा चोखी हुई, जिणसूं धान मोकळो हुयो है ।
(९) मजूर काम आछो कियो, इणवास्तै इनाम मिळियो ।
(१०) जो संकर मान लै, तो काम वण ज्याय ।

(३६९) संयुक्त वाक्यमें दो या अधिक परस्पर-अनाश्रित वाक्य हुवै ।

(४००) संयुक्त वाक्य तीन तरांरा हुवै—

(१) जिणमें दोनूं उपवाक्य सरळ वाक्य हुवै ।
(२) जिणमें अेक सरळ और अेक जटिल वाक्य हुवै ।
(३) जिणमें दोनूं जटिल वाक्य हुवै ।

(४०१) परस्पर-अनाश्रित उपवाक्य समानाधिकरण संयोजकांसूं जुड़िया हुवै । अेक वाक्यमें इसा उपवाक्य घणा हुवै तो संयोजक अन्तिम वाक्यरै पैली आवै, वाकी उपवाक्यांरै आगै कामो (,) लिखीजै—

(१) रामू गयो अर हूं आयो ।
(२) राधा चूलो जगायो अर मैं आटो ओसणियो ।
(३) गोमती घरे गयी पण सीता अठै-हीज है ।
(४) सेठरै धन मोकळो पण सुख कोनी ।
(५) किसान उठियो, हळ लियो और खेतनै हालियो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(६) राजानै वनमें तीन बामण मिळिया जिणांनै राजा नमस्कार कियो और आपरो वृत्तांत कयो ।

(७) गंगा अेक पोथी लायी जिणरा दो रुपिया लागा और गव़रां अेक साड़ी लायी जिणरा पांच रुपिया लागा ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५२

वाक्यांरा नव़ प्रकार

(४०२) अर्थरी दृष्टिसूं वाक्यरा नव़ प्रकार हुवै —

(१) विधानार्थक — जिणमें विधान पायो जावै —

रामू गांव़ गयो ।

(२) निषेधार्थक — जिणमें निषेध पायो जावै —

रामू गांव़ कोनी गयो ।

(३) प्रश्नार्थक — जिणमें प्रश्न पायो जावै —

रामू गांव़ गयो कांई ?

रामू गांव़ कोनी गयो कांई ?

(४) आज्ञार्थक — जिणमें आज्ञा पायी जावै —

रामू ! तूं गांव़ जा ।

रामू ! तूं गांव़ मती जा ।

(५) इच्छार्थक — जिणमें इच्छा पायी जावै —

रामू जुग-जुग जीवै ।

(६) संभाव़नार्थक — रामू गांव़ जांव़तो हुवै ।

(७) संदेहार्थक — रामू गांव़ गयो हुसी ।

(८) संकेतार्थक — रामू गांव़ जांव़तो तो गाडी लांव़तो ।

(९) विस्मयादि-बोधक — जिणमें विस्मय आदि भाव़ पायीजै —

रामू गांव़ गयो !

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५३

वाक्य-रचना

(१) शब्द-क्रम

(४०३) वाक्य वणावणमें शब्दांनै आगै-पाछै राखणा पड़ै। इणनै शब्द-क्रम कैवै।

(४०४) वाक्यमें शब्दांरो साधारण रूपसूं जको क्रम हुवै वो नीचै दिरीजै है—

(१) पैली कर्ता, पछै दूजा शब्द और सारांसूं पछै क्रिया आवै।

(२) विशेषण विशेष्यसूं पैली आवै, कर्तारो विशेषण कर्तासूं पैली आवै—

काळी गाय धोळो दूध देवै।

(३) विशेषण पूरक हुवै जद कर्तासूं पछै आवै—

पाण फूटरी है।

(४) संबंध कारक संबंधी संज्ञा अथवा नामयोगी अव्ययसूं पैली आवै—

(१) म्हारो घर थारै घरसूं आछो है।

(२) गाय रूंखरै नीचै बैठी है।

(५) सकर्मक क्रियारो पूरक कर्मरै पछै आवै—

राजा भीमनै सेनापति वणायो।

(६) नामयोगी अव्यय आपरी संज्ञारै पछै आवै—

कोठीरै लारै वगीचो है।

(७) संबोधन और विस्मयादिबोधक शब्द वाक्यरा आरंभमें आवै।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(८) कृदंतांरा कर्म कृदंतांरै साथै, उणांसूं पैली, आवै—

(१) रामू पोथी लेयनै घरै गयो।

(२) किसन पाठ याद करतो-करतो परीक्षा देवण गयो।

(९) प्रश्नवाचक अव्यय 'कांई' वाक्यरै अन्तमें आवै—

तूं जासी कांई ?

(१०) निषेधवाचक अव्यय क्रियारै ठीक पैली आवै; कदे-कदे अंतमें भी आवै; 'कोनी' अव्यय कदे-कदे क्रियारै दोनां पासी आवै—

(१) तूं घरै मती जाये।

(२) मैं पोथी कोनी वांची।

(३) तूं आये मती।

(४) भाई पोथी वांची कोनी।

(५) भाई पोथी को वांची नी।

(११) संप्रदान कारक प्राय:कर कर्मसूं पैली आवै—

राजा वामणांनै दिखणा दी।

(४०५) और उदाहरण—

(१) राजा न्यायरै साथ प्रजारो पाळन करै हो।

(२) राजूरो छोटो भाई रामदयाल गंगारो वैनोई है।

(३) ओ वैद घणो आछो है।

(४) साहूकाररो वेटो म्हारै साथै नागोर चालसी।

(५) वादस्या अभैसिंघजीनै सूवैदार वणाया।

(६) दो वांदरा घररै ऊपर वैठा है।

(७) भाई ! तूं घरै कणां जासी ?

(८) अरे ! किसनो कद आयो ?

(९) थारो भाई कळकत्तै जासी कांई ?

(१०) मैं आज पोथी कोनी वांची।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(११) तूं सिज्यारो वगीचै मती जायीजै ।
(१२) मोव़नै आज रोटी खायी कोनी ।
(१३) तूं दिन-रो सोयै मती, भलो !
(१४) आ वात म्हारै समझमें को आयी नी ।
(१५) जीव़णराम रतनीनै दो कलमां दी ।
(१६) सारदा पोथी लेयनै आव़ैला ।
(१७) मनै काम करणो है ।
(१८) राजानै देखतां ही वैरी भाग छूटा ।

(४०६) शब्दांरा साधारण क्रममें प्राय:कर व्यतिक्रम हुव़ै; जिण शब्द पर जोर दिरीजै वो शब्द प्राय:कर पैली आव़ै—

(१) घरमें बैठो है नी वो ।
(२) हूं जीम्यो कोनी आज ।
(३) आछो तूं कोनी क हूं ?
(४) ओ काम राधा करसी ।
(५) आज पिंडतजी म्हारै घरै आया हा ।
(६) आछो-भूंडो तो हूं जाणूं कोनी ।
(७) घररै सामनै खेल हुव़ैला ।
(८) मिंदररै ऊपर वांदरा बैठा है ।

(४०७) कर्मणि-प्रयोग और भाव़े-प्रयोगमें भी साधारण क्रम ओ-ही रैव़ै । इण प्रयोगांमें कर्ता पांचवीं विभक्तिमें हुव़ै तथा कर्म पहली विभक्तिमें—

(१) म्हारै-सूं ओ काम कोनी करीजै ।
(२) म्हारै-सूं अव़ार कोनी जायीजै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५४

अन्वय (मेळ)

(४०८) वचन, जाति और पुरुषरी समानतानै अन्वय कैवै ।

(१) क्रियारो अन्वय

(४०९) कर्तृवाच्यरी अकर्मक क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै ।

(४१०) कर्तृवाच्यरी सकर्मक क्रिया धातुसूं तथा संकेत-भूतसूं वणियोड़ा काळांमें कर्तारै अनुसार हुवै ।

(४११) कर्तृवाच्यरी सकर्मक क्रिया सामान्यभूतसूं वणियोड़ा काळांमें कर्मरै अनुसार हुवै ।

(४१२) कर्मवाच्यरी क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै ।

(४१३) भाववाच्यरी क्रिया कर्ता अथवा कर्म किणीरै अनुसार नहीं हुवै; सदा अेकवचन, नरजाति, अन्यपुरुषरी हुवै ।

(४१४) कर्ता और कर्म मांयसूं जको प्रथमा विभक्तिमें हुवै क्रिया उणरै अनुसार हुवै, दोनूं प्रथमामें हुवै तो क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै । जियां—

(१) घोड़ो भाग्यो ।
(२) घोड़ै घास खायो ।
(३) घोड़ैसूं घास खायीजै ।
(४) घोड़ो घास खावै है ।

(२) कर्तरि-प्रयोग में कर्ता और क्रियारो अन्वय

(४१५) कर्ता अेकसूं ज्यादा हुवै तो क्रिया वहुवचनमें हुवै—

राम और लक्ष्मण वनमें गया ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(४१६) नरजाति और नारीजाति दोनूं जातियांरा कर्ता हुवै तो क्रिया नर-जातिरी हुवै—

राजा और राणी अठै आया ।

(४१७) उत्तम, मध्यम और अन्य तीनूं पुरुषांरा कर्ता हुवै तो क्रिया उत्तमपुरुषरी हुवै—

हूं, तूं और रतन पोथी वांचसां ।

(४१८) उत्तम और मध्यम दोनूं पुरुषांरा कर्ता हुवै तो क्रिया उत्तमपुरुषरी हुवै—

हूं और तूं काल अठै आसां ।

(४१९) मध्यम और अन्य दोनूं पुरुषांरा कर्ता हुवै तो क्रिया मध्यमपुरुषरी हुवै—

तूं और रतन पोथी वांचीजो ।

(४२०) कदे-कदे क्रियारा वचन, जाति, पुरुष अंतिम कर्तारै अनुसार हुवै ।

(४२१) आदर दिखावण वास्तै अेकवचनरा कर्तारै साथै अनेक-वचनरी क्रिया आवै—

गुरूजी कद पधारिया ?

(४२२) आदर दिखावण वास्तै नारी-जातिरा कर्ता अथवा कर्मरै साथै नर-जातिरी क्रिया आवै—

राणीजी काल पधारिया हा ।

राणीजीनै कद बुलाया हा ?

(४२३) आदर दिखावण वास्तै प्रेरणार्थक रूपांरो प्रयोग करीजै । जियां—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१) आप काग़द वेगो दिराव़सो ।

(२) राज सारा समाचार लिखायीजो ।

(३) पान लिरायीजै ।

(४२४) आदर दिखाव़ण वास्तै मध्यमपुरुष-वाची आप सर्व़नामरै साथै कदे-कदे अन्यपुरुषरी क्रिया वापरीजै । जियां—

(१) पान लिरायीजै, सा !

(२) अब डेरै पधारीजै ।

(३) थोड़ो कष्ट कराव़ै ।

(४) सारा समंचार लिखाय दिराव़ै ।

(३) कर्मणिप्रयोगमें कर्म और क्रियारो अन्व़य

(४२५) कर्मणि-प्रयोगमें कर्म और क्रियारो अन्व़य उणी भांत हुव़ै जिण भांत कर्तरि-प्रयोगमें कर्ता और क्रियारो ।

(४) विशेषण और विशेष्यरो अन्व़य

(४२६) ओकारान्तनै छोडनै वाकी विशेषणांमें वचन, जाति अथव़ा पुरुषरै कारण कोई अंतर नहीं हुव़ै ।

(४२७) ओकारान्त विशेपणमें विशेष्यरै अनुसार परिवर्तन हुव़ै ।

(४२८) विशेष्य अनेकवचन हुव़ै तो विशेषण भी अनेकवचन हुव़ै—

काळा घोड़ा दौड़िया ।

(४२९) विशेष्य नारी-जातिरो हुव़ै तो विशेषण भी नारी-जातिरो हुव़ै—

काळी घोड़ी दौड़ी ।

(४३०) नारी-जातिरो विशेषण दोनां वचनांमें समान रैव़ै—

काळी घोड़ी ।

काळी घोड़ियां (काळियां घोड़ियां नही हुव़ै) ।

(४३१) नर-जातिरा विशेषणमें विशेष्यरी विभक्तिरै अनुसार भी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परिवर्तन हुवै । विशेष्य जिण विभक्तिमें हुवै विशेषण भी उणी विभक्ति-में हुवै —

काळो घोड़ो लावो ।

काळा घोड़ानै लावो ।

काळै घोड़ै खांचियो ।

(४३२) अनेकवचनमें विभक्तिरै अनुसार परिवर्त्तन नहीं हुवै—

काळा घोड़ा लावो ।

काळा घोड़ांनै लावो ।

काळा घोड़ां खांचियो ।

(४३३) संख्यावाचक विशेषणरै साथै कदे-कदे अेकवचन विशेष्य भी आवै—

(१) दो दिनमें कळकत्तै पूगसूं ।

(२) दस कोस माथै अेक गांव मिलसी ।

(४३४) आदर वतावण वास्तै अेकवचनरा नाम-रै साथै अनेकवचन-रो विशेषण, तथा नारीजातीय नाम-रै साथै नरजातीय विशेषण, आवै—

(१) वडा राणाजी मिंदर पधारिया है ।

(२) वडा राणीजी रावळै विराजिया है ।

(५) छठी विभक्तिरो अन्वय

(४३५) छठी विभक्तिरा परसर्गमें भेद्य (संवंधी संज्ञा) रै अनुसार परिवर्तन हुवै—

देसरो राजा ।

देसरा राजा ।

देसरी राणी ।

देसरी राणियां ।

(४३६) नरजाति अेकवचनरो भेद्य दूसरी अथवा तीसरी विभक्तिमें हुवै तो परसर्गरो तदनुसार रा अथवा रै हुवै—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१) माळी-रा बेटानै बुलावो ।
(२) माळी-रै बेटै फूल तोड़िया ।

(६) क्रियाविशेषणरो अन्वय

(४३७) कईअेक विशेषण क्रियाविशेषणरो काम करै । उणांमें साधारण विशेषणांरी जियां विशेष्यरै अनुसार वचन-जातिरो भेद हुवै—

विद्यार्थी मोड़ो आयो ।
विद्यार्थी मोड़ा आया ।
बैन मोड़ी आयी ।
बैनां मोड़ी आयी ।

(४३८) वेगो, ऊंचो, नीचो, आडो, अंवळो, धीमो, धीरो, उंतावळो, थोड़ो, घणो इणी तरांरा शब्द है—

(१) घोड़ो धीरो चालै ।
(२) बाळक धीमा चालै ।
(३) अनार कदेई आडी आसी ।
(४) तूं वेगी जा ।
(५) वो अबै आवै थोड़ो ही है ।
(६) वा अबै जीमै थोड़ी ही है ।
(७) शारदा भाईनै मोड़ो लायी ।
(८) शारदा बैननै मोड़ी लायी ।
(९) शारदा भायांनै मोड़ा लायी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५५

राजस्थानी शब्द-समूह

(४३९) राजस्थानी शब्द-समूहमें च्यार भांतरा शब्द है—

(१) तत्सम,

(२) तद्भव़,

(३) देसी, और

(४) परदेसी ।

(४४०) तत्समरो अर्थ है संस्कृतरै समान । जका शब्दांरा रूप संस्कृतरै समान है वै शब्द तत्सम कहीजै । तत्सम शब्दांमें घणकरा प्रातिपदिक रूप में आया है, पण कई-अेक प्रथमा विभक्तिरा अेकवचनरा रूपमें भी आया है ।

उदा०—(१) नर, विद्या, नारी, पति, धन, धर्म, चक्र, पत्रिका, नापित, भगिनी, धवल, चंद्र, सूर्य, सत्य, मिष्ट ।

(२) पिता, माता, भ्राता, राजा, कर्म, मन, गुणी, स्व़ामी, ज्ञानी ।

(४४१) तद्भव़रो अर्थ है संस्कृत शब्दांसूं उत्पन्न हुयोड़ा । तद्भव़ शब्द वै है जका संस्कृत शब्दांसूं परिवर्तित होयनै वणिया है ।

उदा०—धरम, चाक, पाती, नाई, वहन, भाई, चाँद, सूरज, काळो, धोळो, आतमा, मूरख, ग्यानी, साचो, मीठो ।

(४४२) देसी शब्द वै है जिणांरो संस्कृतसूं संवंध नहीं । इसा शब्द

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

प्रायःकर देसरी संस्कृतेतर पुराणी भाषावांसूं आया है। अनुकरणात्मक शब्द भी देसी शब्दांमें गिणीजै।

उदा०—(१) पेट, खिड़की, कोडी।
(२) खड़खड़, सरसर, चर्र-चर्र, तड़ातड़, फटाफट, झिरमिर, सर्राटो, फटफटियो, गड़गड़ाट, फटाक-देसी।

(४४३) परदेसी शब्द बै है जका फारसी, अरबी, तुरकी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, वगैरा देसरै बाहररी भाषावांसूं आया है।

उदा०—(१) तुर्की—गलीचो, चकमक, चक्कू, तोप, दरोगो, बेगम, मुचलको, सौगात, उड़दू।
(२) अरबी—इमारत, तसवीर, खबर, अखबार, इमत्यान ऊमर, किताब, दवाई, दवात, रकम, सनद, सलूक, साबण।
(३) फारसी—अचार, कागद, चसमो, तराजू, तकियो, खुराक, जिनावर (जानवर), दरकार, नमूनो, नरम, नहर, बंदोवस्त, हजार, दस्तकारी, खुद, खुदा, सबजी, सामान।
(४) पुर्तगाली—अलमारी, कमीज, कपतान, कमरो, गोभी, गोदाम, चाबी, तमाखू, लीलाम, बालटी, बिसकुट, बुताम, बोतल, मिस्त्री।
(५) अंग्रेजी—इंजन, अफसर, असपताळ, कंपनी, कोट, कमेटी, कापी, गिलास, चिमनी, टिगट, ठेसण, दरजण, नंबर, नोट, पंप, पारटी, पास, फीस, फोटू, बूंट, मशीन, माचिस, मोटर, रबड़, रपोट, रेल, लंप, लालटेण, लाट, होल्डर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाठ ५६

विराम

(४४४) आपां कोई वात कैवां जद वीच-वीचमें थोड़ो-घणो ठैरणो पड़ै । इसा ठैरणानै विराम कैवै । विराम तीन हुवै—

(१) अल्पविराम, (२) अर्धविराम और (३) पूर्णविराम ।

(४४५) वाक्यरा अंतमें सदा पूर्णविराम हुवै, वाक्यरा वीचमें पूर्णविराम नहीं हुवै ।

(४४६) विराम वतावण वास्तै कितराक चिह्न वापरीजै जिणांनै विराम अथवा विराम-चिह्न कैवै । मुख्य विराम-चिह्न तीन है—

(१) अल्पविराम या कामो – ओ अल्प विराम वतावै ।

(२) अर्धविराम या सेमीकोलन (;)—ओ अर्ध विराम वतावै ।

(३) पूर्णविराम (.) (।)—ओ पूर्ण विराम वतावै ।

(४४७) ऊपर वताया विराम-चिह्नांरै अलावै कितराक चिह्न और वापरणामें आवै है । जियां—

(१) प्रश्नचिह्न (?)—प्रश्नार्थक वाक्यरा अंतमें लिखीजै ।
उदाहरण—तूं जोधपुर-सूं कद आवैला ?

(२) उद्गारचिह्न (!)—उद्गारार्थक और इच्छार्थक वाक्यरा अंतमें तथा संवोधन शब्दरै आगै लिखीजै । उदाहरण—

रामू गांव गयो !

राजा जुग-जुग जीवै !

हाय ! ओ कांई हुयो !

राधा ! पोथी ला ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

(३) योजक (-)—ओ चिह्न दो शब्दांनै जोड़ै।

उदाहरण—राजा-राणी, आवणो-जावणो, राज-पुरुष।

(४) संक्षेपक (०) अथवा (.)—ओ चिह्न शब्दरो संक्षेप करै; शब्दरो पैलड़ो आखर लिखनै आगै ओ चिह्न लिखणैसूं पूरो शब्द समझीज ज्यावै—

उदाहरण— पं० = पंडित
सें० = सेर
सा०र० = साहित्यरत्न

(५) पूरक (°)—शब्दरै आगै अथवा लारै ऊपरलै पासी लिखीजै—

उदाहरण— °भूषण = साहित्यभूषण
साहित्य° = साहित्यभूषण

(६) आवर्तक (")—ऊपरी पंक्तिमें लिखियोड़ा शब्द या शब्दांरी आवृत्ति नीचैरी पंक्तिमें करणी हुवै जद ओ चिह्न वापरीजै—

उदाहरण

(क) पानो १४ लकीर ८ रामदास रामचंद्र
" ३० " २२ " "

(ख) राजस्थानरो इतिहास भाग १, पानो २०
" " २, " २५

(७) काकपद (‸) (‸)—लिखती वेळां कोई आखर छूट ज्यावै तो ओ चिह्न लिखनै ऊपर अथवा हासियामें छूटियोड़ो आखर लिख देवै—

ह

उदाहरण—पं० मदनमो‸न जी मालवीय।
मोहनदास क‸मचंद गांधी। र

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(८) रिक्त-चिह्न (...)—जद किणी शब्द अथवा शब्दांनै छोड देणा हुवै तो इणरो प्रयोग करीजै—

(१) माधो आंवतो हो पण ···

(९) लोपक (’)—लिखती वेळा शब्दरो कोई आखर लुप्त हुवै तो उणरी जागां ओ चिह्न लिखीजै—

ना’र = नाहर

सा’व = साहव

(१०) अवतारक (‘ ’) (“ ”)—अवतरण या उद्धरण देणो हुवै जद अै चिह्न वापरीजै।

(११) निर्देशक या डंश (—)—जद किणीनै निर्देश करणो हुवै अथवा उण कानी संकेत करणो हुवै जद ओ चिह्न वापरीजै—

(१) गोदावरी, कृष्णा, कावेरी—अै दक्षिण-भारतरी नदियां हैं।

(२) क्रियारा दो प्रकार हुवै—(१) सकर्मक (२) अकर्मक।

(३) सेठ कयो—काल आप कद आसो ?

(१२) कोठा—अै दोय भांतरा हुवै—

(१) गोळ ( )

(२) चौखूंटा [ ]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परिशिष्ट १

राजस्थानी शब्दांरी जोड़नी

१ तत्सम शब्द

१ संस्कृत तत्सम शब्दांरी जोड़णी मूळ मुजब करणी—

उदा० — पति, गुरु, कृपा, दृष्टि, शेप, रोप, यश, अक्षर, ॐकार, ज्ञान ।

२ संस्कृतरा तत्सम शब्द प्रथमा अेकवचनरा रूप में लेणा, आगै विसर्ग हुवै़ तो उणनै छोड देणो—

उदा० —पिता, माता, दाता, आत्मा, राजा, धनी, स्वा़मी, लक्ष्मी, श्री, मन, यश ।

३ संस्कृतरा व्यंजनांत शब्द स्वरांत करनै लेणा—

उदा०—विद्वान, धनवान, जगत, परिषद, सम्राट, अर्थात, पश्चात, किंचित ।

विशेष — इसा शब्द समासमें पूर्वपद होयनै आवै़ तो मूळ संस्कृत मुजब लिखणा —

उदा० — पश्चात्पद, किंचित्कर, जगत्पति, विद्वद्वर ।

४ संस्कृत तत्सम शब्दांमें दो स्वरांरै वीचमें जको ड, ल और व आवै़ उणनै ड़, ळ और व़ लिखणो—

उदा०—पीड़ा, व्रीड़ा, क्रीड़ा, क्रोड़; जळ, वळ, काळ, माळा, बाळक निष्फळ, निर्मळ, पाताळ;, पव़न, भव़न, प्रव़र, कवि़, देवी़, देवे़न्द्र, तरुव़र, सरोव़र ।

तद्भव शब्द

५ भाषामें तद्भव़ और तत्सम दोनूं रूप चालता हुवै़ तो दोनूं स्वी़कार करणा—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उदा०—भाग्य—भाग, रात्रि—रात, वार्ता—वारता, यश—जस।

६ तद्भव शब्दांमें ऋ ङ ञ श ष क्ष ज्ञ इता आखरांरो प्रयोग नहीं करणो।

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियांमें श आखररो प्रयोग देखीजै है, उण बोलियांरा अवतरण आवै जठै श आखररो प्रयोग करणो।

उदा०—जाईश।

७ राजस्थानी तद्भव शब्दांरा अन्तमें आवै जिका ई और ऊ दीर्घ लिखणा—

उदा०—पाणी, दही, घी, छोरी, नारी, मणी, हरी, लाडू, लागू, वाधू, पावू, जसू, सावू, साधू, गरू।

विशेष—मणि, कान्ति, हरि, साधु, गुरु, इत्यादि तत्सम शब्द हुवै जद छोटी इ और छोटा उ सूं लिखणा।

पुराणी भाषामें राम-नूं (राम-नै), जू (जो), सू (सो), किसूं (क्या) वगैरा आवै, उणांनै राम-नुं, जु, सु, किसुं नहीं लिखणा।

८ राजस्थानमें कठैई-कठैई आ-रो उच्चारण औ या ऑ या ओ जिसो हुवै, लिखणमें इसो उच्चारण नहीं दरसावणो, आ हीज लिखणो—

उदा०—कौम कॉम कोम नहीं लिखणो;

काम लिखणो।

९ राजस्थानमें कठैईकठैई शब्दरा अन्तमें य श्रुति सुणीजै, लिखणमें उणनै नहीं दरसावणी—

उदा०—आंख्य, लाव्य, द्यो, ल्यो, ल्यावणो नहीं लिखणा।

आंख, लाव, दो, लो, लावणो लिखणा।

१० तद्भव शब्दांमें अनुप्राणित ह ध्वनि (=ह श्रुति) नै लिखणमें नहीं वतावणी; वतावणी हुवै तो लोपक-चिह्नरो प्रयोग करणो—

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उदा०-- न्हार, प्हीर, म्होर, क्हाणी, स्हाव, स्हारो, प्होरो, वाल्हो, व्हैन, साम्हो, म्हाराज नहीं लिखणा ।

नार (ना'र), पीर (पी'र), मोर (मो'र), काणी (का'णी), साव, सारो (सा'रो), पोर, वालो, वैन, सामो, माराज (मा'राज) लिखणा ।

तत्सम महाराज शब्दनै मूळ-रूपमें-हीज लिखणो ।

विशेष—म्हावणो, म्हारो, म्हाटो, इण शब्दांमें ह श्रुति नहीं पण पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणांनै नावणो, मारो, माटो नहीं लिखणा ।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमें अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नहीं लिखणी, उणरो लोप कर देणो; अथवा उणरी जाग्यां संज्ञा हुवै तो य, और क्रिया हुवै तो व कर देणो—

उदा०—ठा, रा, सा, सी, मूं, खे, मे', खो, जो, पो, मो, लो ।
चा चाय, मां मांय, रा राय, सा साय ।
ढा ढावणो, वा वावणो, दू दूवणो, लू लूवणो,
भे भेवणो, ढो ढोवणो, पी पीवणो, मो मोवणो,
सो सोवणो ।

विशेष—नाह, कोह, इण शब्दांमें ह श्रुति नहीं, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणांनै ना, को, नहीं लिखणा ।

१२ तद्भव शब्दांमें ह श्रुतिसूं पूर्व अकार हुवै तो दोनांनै मिलायनै अै कर देणा—

उदा०—गहणो	गैणो	गहरो	गैरो	चहरो	चैरो
जहर	जैर	कहर	कैर	सहर	सैर
लहर	लैर	महर	मैर	नहर	नैर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वहन	वैंन	वहम	वैम	रहम	रैम
सहणो	सैंणो	कहणो	कैणो	वहणो	वैंणो
महणो	मैंणो	रहणो	रैंणो	लहणो	लैंणो
महल	मैल, मौल	पहर	पैर, पौर		

१३ तद्भव शब्दांमें अळपप्राण और महाप्राणरो संयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलड़ो लिखणो—

उदा०—अख्खर, परूख, जख्ख, सख्ख, भख्ख, लख्ख; वघ्घ, पघ्घड़; जुझ्झ, वुझ्झ, तुझ्झ, सुझ्झ, मुझ्झ; पथ्थर, मथ्थ, कथ्थ, सथ्थ; वफ्फ; सभ्भ, लभ्भ, अभ्भ, दभ्भ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो संयोग हुवै जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर, मच्छर, सच्छ, गच्छ, भच्छ, रच्छ; चिट्ठ, दिट्ठ, मिट्ठ; कड्ढ, वड्ढ, दड्ढ।

१४ बोलचालमें अळपप्राण और महाप्राण दोनूं उच्चारण पायीजै जद व्युत्पत्तिरै मुजब अळपप्राण अथवा महाप्राण लिखणो—

उदा०—समझणो (समज्झ), वांझ (वंझा), सांझ (संझा), जूझणो (जुज्झ), बूझणो (वुज्झ), सूझणो (सुज्झ), सीझणो (सिज्झ), वेझ (विज्झ); सेज (सेज्जा), तीज (तइज्जा), भीजणो (भिज्ज)।

१५ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें जको व हुवै उणनै राजस्थानी में व हीज लिखणो; हिंदीआळी दाईं व नहीं लिखणो--

उदा०—वखाणनो, वंचणो, वंचावणो, वछड़ो, वटवो वटाऊ, वडो, वणनो, वणजारो, वडाई, वड़नो, वड़, वतरणो, वधणो, वधावणो, वधाई, वधोतरी, वनात, वनो, वरतणो, वरमो,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वरसात, वरस, वरात, वसणो, वही, वहू, वसेरो, वंस, वांको, वांस, वाट, वात, वागो, वाजो, वाजणो, वार, वांस, वाव़ड़ी, विकणो, विकरी, विगड़नो, विछड़नो, वीच, वीकानेर, वीजळी, वींधणो, वीस (=२०), वेचणो, वेझ, वेल, वेसी, वेस, वैरणो, वैरा, वेंत, वैद ।

१६ संस्कृतमें व हुवै़ जठै राजस्थानीमें-ई व लिखणो—
उदा०—वाळक, वाण, वळ, वूझणो, वुद्धि ।

१७ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें द्व हुवै़ जठै राजस्थानीमें व लिखणो—
उदा०—द्वार—वार, द्वितीया—वीज, द्वितीयकः—वीजो ।

१८ प्राकृतमें व्व (संस्कृतमें र्व, व्य) हुवै़ जठै राजस्थानीमें व लिखणो—

उदा०—सर्व	सव्व	सव, सरव
पर्व	पव्व	परव
खर्व	खव्व	खड़व
गर्व	गव्व	गरव
द्रव्य	दव्व	दरव

१६ दो स्व़रांरै वीचमें जको व हुवै उणनै व़ लिखणो—
उदा०—सांव़रो, भंव़रो, गंव़ार, गांव़, नांव़, धूंव़ो, चाव़, राव़, नाव़; सोव़णो, मोव़न, कूव़ो, गाव़णो, आव़णो, जाव़णो, दूव़णो, सीव़णो, पीव़णो, देव़णो, लेव़णो ।*

---

* व, व और व़ रा नियम संक्षेपमें—
(१) संस्कृतमें व हुवै़ जठै राजस्थानीमें व लिखणो ।
संस्कृतमें द्व, र्व, व्य हुवै़ जठै राजस्थानीमें व लिखणो।
संस्कृतमें व हुवै़ जठै राजस्थानीमें व नहीं लिखणो ।
(२) शब्दरा आरंभमें आवै़ जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथव़ा अंतमें आवै़ जद व़ लिखणो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२० शब्दांरा मध्यमें प्राकृतमें ल्ल (संस्कृतमें ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानी ल लिखणो तथा प्राकृतमें ल (संस्कृतमें ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ळ लिखणो—

उदा०—कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रकः	भल्लउ	भलो	भाल	भाळ
भल्लकः	भल्लउ	भालो	सकलकः	सगळो
मूल्य	मोल्ल	मोल	श्रृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
विल्व	विल्ल	वील, वेल	जालिकः	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेश
आर्द्रक	अल्लउ	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्ल्याण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालसा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नहीं।

२१ शब्दांरा मध्यमें प्राकृतमें ण्ण (संस्कृतमें ण्य र्ण ण्ण न्य न्व न्न) हुवै जठै राजस्थानीमें न लिखणो तथा प्राकृतमें ण (संस्कृतमें ण, न) हुवै जठै राजस्थानीमें ण लिखणो—

उदा०—पुण्य	पुण्ण	पुन	क्षण	खण	खण
वर्ण	वण्ण	वान	कण	कण	कण
पर्ण	पण्ण	पान	जन	जण	जण

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कर्ण	कण्ण	कान	घनक	घणउ	घणो
चूर्ण	चुण्ण	चून	भुवन	भुवण	भुवण
जीर्णक	जुण्णउ	जूनो	खनि	खणि	खाण
अन्य	अण्ण	आन	पुनि	पुणि	पुण
धन्य	धण्ण	धन	वन	वण	वण
शून्यक	सुण्णउ	सूनो	कनक	कणक	कणक
भिन्नक	भिण्णउ	भीनो	भानु	भाणू	भाण
अन्न	अण्ण	अन	रजनी	रयणी	रैण
कृष्ण	कण्ह	कान	हानि	हाणि	हाण
	कसण	किसन	नयन	नयण	नैण

अपवाद—धुन (ध्वनि), पून (पवन), मून (मौन), रण।

विशेष—धन, मन, जन, वन, दान, मान, भवन, पवन, मुनि इत्यादि तत्सम शब्द है, तद्भव नहीं।

२२ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ड्ड या ण्ड हुवै जठै राजस्थानीमें ड लिखणो तथा प्राकृतमें ड (संस्कृत में ट या ड) हुवै जठै राजस्थानीमें ड़ लिखणो—:

उदा०—वड्डउ	वडो	पीडा	पीडा	पीड़
कोड्ड	कोड	भट	भड	भड़
खड्ड	खाड	तट	तड	तड़
गड्डिआ	गाडी	प्रति	पड	पड़
हड्ड	हाड	पत्	पड	पड़
अड्ड	आड	कोटि	कोडि	कोड़
गड्ड	गाडणो	घोटक	घोडउ	घोड़ो
अंडउ	ईंडो	साटिका	साडिआ	साड़ी
कुंडिआ	कूंडी	वाटिका	वाडिआ	वाड़ी
सुंड	सूंड	मुकुट	मउड़	मोड़
मुंड	मूंडणो	कपाट	कवाड	किंवाड़

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२३ तद्भव शब्दांमें ड़ अथवा ळ रै आगै ण आवै उणनै सुविधानुसार न अथवा ण लिखणो—

उदा०—घड़नो, जड़नो, पड़नो, वळनो, गळनो, तळनो, जोड़नो, सीड़नो, जोड़नी, माळनी, माळन ।

२४ प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा, न्यारा नहीं लिखणा—
उदा०—उदारता, टाबरपणो, गाडीआळो, बागवान ।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा—

उदा०—रामनै, पोथीमें, घरसूं, मिनखरो ।

२६ संयुक्त-क्रियारा दोनूं अंशांनै न्यारा-न्यारा लिखणा—

उदा०—ले जावणो, जाया करणो, कर देणो, आयो चावै, देख लेसी, कर नाखैला, जीमता जासी, लियां फिरतो हो, आवै है, करतो हो, पढती हुवैला, देखतो हुवै, उठियो हो, जावां हां ।

२७ समासरा शब्दांनै मिलायनै लिखणा अथवा बीचमें योजकचिह्न (-) लिखणो—

उदा०—सीताराम, गुणदोष, राजपुत्र, चंद्रशेखर, आवजाव; सीता-राम, गुण-दोष, हिम-गिरि, आवणो-जावणो, आवै-जावै, अठै-उठै, दरसण-परसण ।

२८ अव्यय शब्द दोय मात्रा देयनै लिखणा—

उदा०—आगै, लारै, पछै, साथै, सागै, वास्तै, नीचै, सटै, खनै, चौड़ै, जुमलै, पाखै, नेड़ै, वगै ।

२९ नै, रै, सैं आदि परसर्ग दोय मात्रा देयनै लिखणा—
उदा०—रामनै, मोहनरै, घरसैं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

३० साधित शब्दांमें धातु अथवा मूळ शब्दरा आदि स्वरनै प्रायःकर ह्रस्व लिखणो—

उदा०—मीठो	मिठास,	मिठाई
खाटो	खटास,	खटाई
खारो	खरास	
	खारास	
पूजा	पुजारी	
चीकणो	चिकणास	
ऊजळो	उजळास	
तोड़नो	तॊड़ाई ।	

अपवाद—ऊंचाई, ऊंचाण, नीचाण, मौजीलो, इत्यादि ।

३१ कई-अेक स्वरांत धातुवांरा वर्तमान-कृदंतमें धातुरो अंतिम स्वर सानुनासिक लिखीजै—

उदा०—आंवतो, जांवतो, खांवतो, सींवतो, जींवतो, सूंवतो, पांवतो (=पियांवतो), छांवतो, वांवतो, मांवतो, भांवतो, लांवतो, पींवतो, लूंवतो, वेंवतो, कंवतो, रेंवतो, संवतो ।

३२ ई और ईजै प्रत्यय जोड़तां वखत स्वरान्त धातुरै आगै यकाररो आगम करणो—

उदा०—आ+ई=आयी	आ+ईजै=आयीजै
जा+ई=गयी	जा+ईजै=जायीजै
खा+ई=खायी	खा+ईजै=खायीजै
दू+ई=दूयी	दू+ईजै=दूयीजै
पो+ई=पोयी	पो+ईजै=पोयीजै
वै+ई=वैयी	वै+ईजै=वैयीजै

अप०—पी+ई=पी, जी+ई=जी, सी+ई=सी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

४ लिपि

३३ अ ण मराठीरा लिखणा, हिंदीरा अ ण नहीं लिखणा।

३४ ऋ छ ल हिंदीरा लिखणा, मराठीरा नहीं लिखणा।

३५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक-चिह्न (') वापरणो।
उदा०—ना'र, सा'व, का'णी।

३६ तद्भव शब्दांमें अै-औ रो संस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ-अउ लिखणा।
उदा०—गइया, कनइयो, भइयो—इणांनै गैया, कनैयो, भैयो नहीं लिखणा।

३७ अै-औ रो देशी उच्चारण हुवै जद अै-औ लिखणा।
उदा०—वैन, रैवैला, और।

३८ अै-रो देशी उच्चारण हुवै जद उणनै अ-सूं नहीं दरसावणो—
उदा०—कैवै है इणांनै कव ह नहीं लिखणो।

३९ र्+य रै पूर्व आखर पर जोर पड़ै जद र्य लिखणो और जोर नहीं पडै जद रच लिखणो—
उदा०—चर्य वर्य कार्य भार्या।
चरचो वरचो वकारचो भारचो।

४० अनुस्वारनै वडी मींडीसूं और अनुनासिकनै छोटी मींडीसूं दरसावणो—
उदा०—हंस (पक्षी) दांत (दमन करचोड़ो)।
हंसणो दांत।

४१ तद्भव शब्दांमें अनुस्वाररी जाग्यां पंचम अक्षर नहीं लिखणो—
उदा०—डंडो, चंचळ, चंगो, फंदो, संको, तंग, पंखो इणांनै डण्डो, चञ्चळ, चङ्गो, फन्दो, सङ्को, तङ्ग, पङ्खो नहीं लिखणा।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी, फारसी, अंग्रेजी वगैरा विदेशी भाषावांरा शब्द तद्भव रूपमें स्वीकार करणा—

उदा०—कागद, मालक, जमी, मालम, दसकत, मसीत, मजूर, सीसी, सामल; अगस्त, सितंबर, बंक, करंट, रपट, रपोट, दरजण, लालटेण, कुनैण, टिगट, लाट, गिलास।

४३ विदेशी भाषावांरा शब्द वापरतां उण भाषावांरां विशिष्ट उच्चारण दरसावण वासतै चिह्न नहीं वापरणा—

उदा०—	अगस्त	लिखणो	ऑगस्ट	नहीं	लिखणो
	कालेज	लिखणो	कॉलिज	,,	,,
	नजर	लिखणो	नज़र	,,	,,
	दफतर	,,	दफ़्तर	,,	,,
	मुगल	,,	मुग़ल	,,	,,
	खबर	,,	ख़बर	,,	,,
	फरक	,,	फ़र्क़	,,	,,
	मालम	,,	मअ़लूम	,,	,,
	इलम	,,	इ़ल्म, अ़िल्म	,,	,,

———

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	वर्णांरी	वर्णांरा
३	१६,२०	वाकी	बाकी
३	१७	अनुस्वार	अनुस्व़ार
३	१७	स्वर	स्व़र
४	६	नीचे	नीचै
५	४ (उ-रैं नीचै मात्रा)	×	ॖ
५	१२	चिन्ह	चिह्न
६	४	व और व़	ब, व और व़
११	१५	अथवा	अथव़ा
१७ नीचैसूं	७	वु वू	ऊ ऊ
२५ ,,	३	तू	तूं
२७ ,,	१	अढाई	पढाई
३२ ,,	८	वद	बळद
३३	६	देस	नैण
३५ नीचैसूं	४	वाकी	बाकी
४१ ,,	८	आं	आं, अेव़ां
४२	६	पायी जै	पायीजै
४५	१६	वो	बो
४८ नीचैसूं	४	करण,	कर्ता, करण
५२	१४	वैं-ने	बैं-नै
६३ नीचैसूं	७	(३)	(२)
६६ ,,	८	कर्तृ वाक्य	कर्तृ वाच्य
७२ ,,	१०	हुयो हो	पूरो हुयो हो
७३	२	वताव़	बताव़ै

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७६ नीचैसूं	१०	वताया	वताया
७६ ,,	७	१६	१०
७७ ,,	५-६	नियम (२३०)	निकाळ दिरीजै
७६	७	व-रो	व़-रो
८०	११	सूव़तो सूतो	निकाळ दिरीजै
८६	२	जोड़ियां	जोड़ियां
८६	१८	भावाच्यरा	भाव़वाच्यरा
६०	सामान्यभविष्य (२) रा रूप	करीजैला करीजैला करीजूंला	करीजैला करीजोला करीजांला
६०	सा० वर्तमानरा रूप	करीजै है करीजै है करीजूं हूं	करीजै है करीजो हो करीजां हां
६३	१३	नात	वात
६४	३	अध्याहृत	अध्याहृत
६५ नीचैसूं	२	भाव़नै	किणी भाव़नै
६६ ,,	५	समूंची	समूची
६८ ,,	४	त्यो	त्यों
१०३	१०	क्यूं, कै	क्यूंकै
११०	८	जमणो जामणो	निकाळ दिरीजै
११७	७	ऊ	आऊ
१२४	१५	घाट=कम	घाट (=कम)
१२४	१८	अक तारक	निकाळ दिरीजै
१२४ नीचैसूं	४	इयो	अणियो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२५	१५	दियो	**निकाळ दिरीजै**
१२५	२०	देख-अरा	देख-अर
१२५	२३	इयां	इयां, यां
१२७	७	पूर्वकालिक	पूर्वकाळिक
१२७ नीचैसूं	४	जो ड़देवै़	जोड़ देवै़
१३० ,,	६	— ही	ही
१३३	१	आणी	आणी, अव़ाणी
	२	आणो	आणो, अव़ाणो
१३६	२	माणीगर	**निकाळ दिरीजै**
१३८	८	म्हांळ्-ळो	म्हांळ्-ळो
१४३ नीचैसूं	८	जिणरी	जिणरो
१४७ ,,	४	सेरां दो	सेरांरो
१४८	५	वड़ा-वड़ा	वडा-वडा
१४६ नीचैसूं	१	वात-चीत	वात-चीत
१५० ,,	१	वीड़ो	वोड़ो
१५७ ,,	३	पूरकरो	विधेयरो
१५८ ,,	८	करैं	करै

विशेष—इण अशुद्धियांरै अलाव़ै कई-अेक जागां—

(१) मात्राव़ां, अनुस्व़ार और रेफ वगैरा टूट ग्या है, अथव़ा
(२) विराम-चिह्न छूट ग्या है, अथव़ा
(३) व़ आखर रै नीचैरी मींढी छपणसूं रैय गी है, अथव़ा
(४) विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दांसूं अलायदा छप ग्या है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust